



Impact Factor :  
4.553

**गीना देवी शोध संस्थान**

द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रसारित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037

मई 2023

Vol. 11, Issue 5

# Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences  
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)



**भारतीय राष्ट्रीय :  
जन जागरण  
विशेषांक**

विशेषांक संपादक :  
डॉ. रीना अग्रवाल

संपादक :  
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :  
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

# संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक  
A Peer Reviewed International Refereed Journal

वर्ष : 11

अंक : 5

मई : 2023

आईएसएसएन : 2321-8037



संस्थापक सम्पादिका :  
स्मृति शेष डॉ. विश्वकीर्ति

संरक्षक :  
हरविन्द्र कमल, पटियाला

मार्गदर्शन :  
डॉ. राजेन्द्र गोदारा  
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी  
लेक्चरर, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड  
कम्युनिकेशन, सरकारी पॉलिटेक्निक  
कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्रेष्ठ चौधरी  
सीनियर मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,  
साहिबजादा अजित सिंह नगर, मोहाली,  
पंजाब।

प्रधान सम्पादक :  
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट  
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,  
भिवानी (हरियाणा)

सम्पादक :  
डॉ. रेखा सोनी  
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,  
श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

विशेषांक सम्पादिका :  
डॉ. रीना अग्रवाल  
हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

## सलाहकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. लता एस. पाटिल  
राजीव गांधी बीएड कॉलेज  
धारवाड़ (कर्नाटक)  
डॉ. सुशीला  
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय,  
भिवानी (हरियाणा)  
डॉ. सुलक्षणा अहलावत  
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग  
नूंह (हरियाणा)  
डॉ. अल्पना शर्मा  
आईएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर  
(राजस्थान)  
डॉ. विजय महादेव गाडे  
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय  
भिलवडी (महाराष्ट्र)  
डॉ. रीना कुमारी  
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,  
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।  
डॉ. अरूणा अंचल  
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक  
(हरियाणा)  
श्री राकेश शंकर भारती  
यूक्रेन।  
श्री हेमराज ज्यौपाने  
नेपाल।  
ले. डॉ. एम. गीताश्री  
डिप्टी डीन एकेडमिक  
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,  
बीएमएस महिला कॉलेज, स्वायत्त,  
बसवनगुडी, बेंगलुरु

प्रो. मधुबाला  
राजकीय महिला महाविद्यालय,  
हिसार (हरियाणा)  
प्रो. पीयूष कुमार द्विवेदी  
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग  
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश  
डॉ. हवासिंह ढाका  
सहायक आचार्य भूगोल, एस.एन.डी.बी.  
राजकीय महाविद्यालय, नोहर, राज.  
डॉ. मानसिंह दहिया  
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग  
तोशाम (हरियाणा)  
डॉ. राजेश शर्मा  
टांटिया विश्वविद्यालय,  
श्रीगंगानगर (राजस्थान)  
डॉ. मोहिनी दहिया  
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,  
सूरतगढ़ (राजस्थान)  
डॉ. शिवकुमार  
पत्राकारिता विभाग, चौधरी बंसीलाल  
विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)  
प्रो. कौशल्या कालोहिया,  
पॅनसिल्वेनिया, यूएसए  
डॉ. मोरवे रोशन के.  
यूनाईटेड किंगडम।  
डॉ. प्रियंका खंडेलवाल  
बराण, राजस्थान।  
डॉ. आर.के. विश्वास  
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.  
डॉ. ममता तनेजा  
अबोहर, पंजाब।

कानूनी सलाहकार : डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट, भिवानी  
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट, पटियाला।

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्स, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार,  
भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाउफसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

# संगम SANGAM

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक  
A Peer Reviewed International Refereed Journal  
(Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट  
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,  
भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

- Disclaimer :**
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
  2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
  3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originality of their views/opinions expressed in their articles.
  4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

# Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences  
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Publisher : Gagan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

50

THE GAZETTE OF INDIA : EXTRAORDINARY

[PART III—SEC. 4]

तालिका- 2

शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसे: प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान/ अभियांत्रिकी/ कृषि/ चिकित्सा/ पशु-चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा/ सामाजिक विज्ञान/ पुस्तकालय/ शिक्षा/ शारीरिक शिक्षा/ वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विभाग
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त )		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान- अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 www.bohalsm.blogspot.com

✉ grsbohal@gmail.com

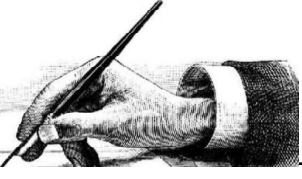
☎ 8708822674

📞 9466532152

## अनुक्रमाणिका

क्र. विषय	लेखक	पृष्ठ
1. सम्पादकीय	डॉ. रीना अग्रवाल	7-10
2. मृदुला सिन्हा के साहित्य में लैंगिक असमानता : चिंतन, अवलोकन और चुनौतियाँ	डॉ. रीना अग्रवाल	11-14
3. पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्रवादी विचारों की प्रासंगिकता	पूजा अग्रवाल	15-18
4. स्मृति काल में स्त्रियों की शिक्षा	सुनिता कुमारी	19-21
5. गोस्वामी तुलसीदास : समन्वय के प्रबल प्रतिपादक	सुमन कुमारी	22-24
6. IMPACTS OF WORKING CLASS IDEOLOGY ON NATIONAL MOVEMENTS	SARITAKUMARI	25-27
7. आधुनिक भारत की राष्ट्रीय (नई) शिक्षा नीति 2020	ममता सुशील	28-32
8. अर्वाचीनसंस्कृतकाव्येषु सीताया: स्वाभिमानिता	करुणा गुप्ता	33-35
9. पर्यावरण : कल, आज और कल	निधि माहेश्वरी	36-39
10. IMPORTANCE OF YOGA DURING COVID-19	Dr. Pragya	40-45
11. हिंदी कथा साहित्य में नारी के विविध रूप	रश्मि विश्वकर्मा	46-48
12. नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव एवं मलिन बस्तियों की समस्या	R. D. Nirmala, Dr. Anuradha Pakalapati	49-52
13. गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में चित्रित मानवीय आचार संहिता	नीता वर्मा	53-56
14. डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता	शेजवळ अरविंद, डॉ. अशोक जाधव	57-61
15. फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में ग्रामीण एवं शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति	डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	62-64

16. तुलसी की राम कथा और प्रबंध शास्त्र	डॉ. खुशबू राठी	65-69
17. मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं का अवलोकन	दीपमाला मिश्रा, डॉ. सनकादिक लाल मिश्र	70-73
18. वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा	डॉ. हेमा कृष्णन	74-76
19. सूर्यबाला के कथासाहित्य में ग्रामीण-शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति	रेश्मा लंकेश्वर	77-81
20. वर्तमान परिवेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता	प्रो. डॉ. एकता भाटिया, रविन्द्र कुमार	82-85
21. Evaluation of heritability and genetic progress in 24 genotypes of bread wheat ( <i>Triticum aestivum L.</i> )	Manish Kumar, Shiv Kumar, Arjun Singh	86-92
22. किन्नर समाज की संघर्ष गाथा : अस्तित्व की तलाश में सिमरन	डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	93-98
23. भारतीय स्वातंत्र्य समर में हिंदी पत्रकारिता का प्रदेय	रंजना	99-103
24. स्वामी विवेकानन्द के चिंतन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता	संदीप कुमार	104-108
25. दलित आत्मकथाएँ : जीवन का तीखापन एवं संघर्ष का आख्यान	डॉ. श्रीलता पी.वी.	109-111
26. भारतीय किसानों की समस्याएं एवं समाधान	डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. संजीव कुमार	112-117
27. भगवत गीता में वर्णित पर्यावरण की उपादेयता	खेमबाई साहू	118-120



## विशेषांक सम्पादक डॉ. रीना अग्रवाल की कलम से...



‘भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण’ अंग्रेजी राज्य के दौरान देसी शिक्षा और संस्कृति पर हुई चोट के कारण अनेक धार्मिक और सामाजिक सुधारात्मक आंदोलन हुए। परंपरागत रूढ़िवादी विचारधाराओं के अतिरिक्त अंग्रेजी शिक्षकों के फलस्वरूप एक नए प्रबुद्ध वर्ग का भी उदय हुआ जिसके कारण सदियों से चली आ रही रूढ़िवादी विचारधारा को बदलने का प्रयास किया गया। इसके फलस्वरूप पश्चिमी प्रभावी विचारधारा से भारतीय राष्ट्रीय जन जागरण का सूत्रपात आरंभ हुआ। भारतीयों में एक नवीन चेतना का प्रादुर्भाव स्थापित हुआ। इस राष्ट्रीय जन जागरण ने राष्ट्र में एकता का संचार स्थापित किया। भारतीय अंग्रेजी शासन के प्रति संघर्षरत हुए। राष्ट्रीय जन जागरण का श्रेय राजा राममोहन राय को जाता है जिन्होंने अपने देश, धर्म और समाज की रक्षार्थ हेतु चिंतन प्रस्तुत किया। फलस्वरूप देश का पुनरुत्थान और राष्ट्रीयता की भावना का जागरण हुआ।

उसी परिप्रेक्ष्य में ‘भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण’ के विशेषांक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह विशेषांक का दूसरा अंक है जो बहुत ही उपलब्धि पूर्ण लग रहा है। पुस्तक सृजनात्मकता के आयामों का अनुसरण करती विविध विचारों, भावों और रचनाओं का एक मूर्त रूप है जिसमें शिक्षा जगत के विद्वानों, लेखकों तथा शोधकर्ताओं ने जिस उन्मुक्त भाव से इसका संवर्द्धन किया है उससे मुझे अपार संबल प्राप्त हुआ है। इसमें संकलित आलेखों के चयन तथा अध्ययन-विश्लेषण में एक दुर्लभ दृष्टि समाहित है, ऐसे-ऐसे सशक्त लेखक और शोधकर्ता हैं जिन्होंने अपनी रचनाधर्मिता का सही मूल्यांकन प्राप्त कर ‘भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण’ के प्रति विश्वसनीयता को आत्मसात किया है। यह विशेषांक पूर्ण गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया गया। सतत् आलेखों का अध्ययन करते हुए विद्वानों-शोधार्थियों के आलेख प्रकाशित होने से पूर्व ही विशेषांक प्रकाशन के साथ-साथ लेखन का आधार बना, पूर्णतः तटस्थ भाव से अपनी गुणवत्ता के कारण आलेखों की इस रूप में सराहना भी हुई, इसमें ‘भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण’ के परिप्रेक्ष्य में आलेखों के विषय का संपूर्ण विवेचन होने के साथ-साथ विभिन्न विषयों और चुनौतियों का उल्लेख है। अंक के कई बड़े आलेख पूर्णतः महिला उपन्यास लेखन को अपने भीतर समाहित किए हुए हैं। एक आलेख में ‘मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य का विवेचन है’ तो दूसरे में उपन्यासों का प्रामाणिक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार यह विशेषांक ‘भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण’ के संदर्भ में मील का पत्थर बनने की जिस योग्यता को अपने अंदर समाहित किए हैं वह पाठक, विद्वान, शोधार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। किसी भी लेखक की रचना का विवेचन करने से पूर्व उसकी सृजना के प्रति चेतना को जान लेना उत्तम होता है। पुस्तक देश के अलग-अलग राज्यों से संबंधित विविधमुखी शिक्षाविदों, विद्वानों और शोधार्थियों की सृजनात्मक रचनाओं से युक्त बहुरंगी वर्तिका की तरह सुसज्जित है जिसमें लोक संस्कृति की महक व्याप्त है।

इस संदर्भ में डॉ. जगदीश चंद्र जोशी ने ‘फणीश्वर नाथ रेणु के कथा साहित्य में ग्रामीण-शहरी मूल्यों की

अभिव्यक्ति' को उदाहरणों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल का आलेख 'किन्नर समाज की संघर्ष गाथा : अस्तित्व की तलाश में सिमरन' अपने परिवार के प्रति समर्पित मानवीय संवेदना से परिपूर्ण एक किन्नर की गाथा-व्यथा को स्पष्ट करता है कि किस प्रकार समाज द्वारा उन्हें बहिष्कृत-प्रताड़ित किया जाता रहा है। आज शिक्षा से लेकर राजनीति तक दरवाजे उनके लिए खुले हैं और उन्हें आज संवैधानिक अधिकार प्राप्त है इसी के साथ डॉ. प्रकाश ने अस्मिता की तलाश में 'सिमरन किन्नर' की सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इस वर्ग की जिजीविषा से जुड़े प्रश्नों को व्याख्यायित किया गया है।

साहित्य मर्मज्ञ रश्मि विश्वकर्मा का मानना है कि किसी भी लेखक के अपने निजी विचार, चिंतन और संस्कार होते हैं। इन्होंने स्त्रियों को बुद्धि का प्रयोग करते हुए भावनाओं में न बहकर प्रेम के स्वरूप को समझने के लिए उद्यत किया है। लेखन के माध्यम से प्रेम के विविध रूपों का भारतीय संस्कृति को आचरण-व्यवहार में पिरोते हुए आत्मसात कर प्रेम की एक कड़ी में पिरोने का प्रयास किया है जो विपरित परिस्थितियों से जुझते मानव को छुटकारा दिलाते हुए आगे बढ़ने का मार्ग दिखाने वाले हैं। शोध छात्रा आर. डी. निर्मला ने 'नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव, मलिन बस्तियों में समस्या' के अंतर्गत भारतीय चिंतकों तथा डॉ. हेमा कृष्णन ने वैश्वीकरण-हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में विचारों को कलमबद्ध किया है। इसमें शेजवाल अरविंद द्वारा 'डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता' है तो मनीष कुमार, शिव कुमार और अर्जुन कुमार द्वारा 'कृषि विज्ञान से संबंधित' विषयों पर विचार-विमर्श किया गया है।

इसी संदर्भ में सुधि विद्वान डॉ. वेद प्रकाश और डॉ. संजीव कुमार ने 'भारतीय किसानों की समस्याओं' को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया है। सुधि विद्वान संदीप कुमार ने 'स्वामी विवेकानंद के चिंतन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता' के साथ-साथ उनके बहुआयामी लेखन का उल्लेख प्रस्तुत किया है साथ ही आध्यात्मिक काव्य प्रेमी करुणा गुप्ता 'आधुनिक संस्कृत काव्य में सीता की स्वाभिमानिता' और साहित्यप्रेमी डॉ. खुशबू राठी वसुमन कुमारी द्वारा 'तुलसी राम कथा-प्रबल शास्त्र एवं 'गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रबल प्रतिपादकता के विविध आयामों' की सविस्तर वर्णन किया गया है। इसी शृंखला को विस्तार देते हुए नीता वर्मा ने 'गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरितमानस में विचित्र मानवीय संहिता' की चर्चा की है। भारतीय संस्कृति में मूल्यों का सर्वोच्च स्थान है। इसके स्रोत 'वेद' और 'उपनिषद्' हैं। सभी जानते हैं मनुष्य की जन्मजात प्रकृति अन्य जीवों की ही भाँति होती है। संस्कृति की प्रक्रिया द्वारा उसकी इस प्रकृति में परिवर्तन किया जाता है। भारत विविध धर्मों का देश है। सभी अच्छे आचरणों से स्वयं को "दिल तो हिंदुस्तानी" कहते हैं। अपनी इसी सोच के साथ आगे बढ़ने पर सकारात्मक आचरण से जीवन में स्थायित्व-सकारात्मकता के भाव उत्पन्न होते हैं।

शोधार्थी पूजा अग्रवाल ने पं. मदन मोहन मालवीय के राष्ट्रवादी विचारों की प्रासंगिकता 'शीर्षक के अंतर्गत चिंतन, मनन एवं विश्लेषण किया है। यह कहा जा सकता है कि मालवीयजी के राष्ट्रवादी विचारात्मक विसंगतियाँ और अर्न्तविरोध है। ममता सुशील ने 'नई शिक्षा नीति 20-20' शीर्षक के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विषय में दिशा निर्देश तथा नारी शिक्षा के परिवेश में विभिन्न भारतीय चिंतकों की विचारधाराओं की पुर्नव्याख्या प्रस्तुत की है। इन्होंने समसामयिक विषय पर चर्चा करते हुए परिवेशगत संदर्भों को सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। विश्व में भारतीय शैक्षिक



स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। वह स्वाबलंबी और मानवीय बनाती थी साथ ही विज्ञान, प्रकृति और अध्यात्म के बीच संतुलन बनाना सिखाती थी। आधुनिक शिक्षा पद्धति आज धन उपार्जन करना ही सिखा रही हैं, जिसमें मानवीय मूल्यों का अभाव है। इसमें आमूलचूल परिवर्तन किए जाने की आवश्यकता है, इस पर फिर से चिंतन-मनन करना होगा और वहाँ से श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों तथा प्राचीन प्रविधियों को फिर से शिक्षा प्रणाली में स्थान देना होगा।

शोध छात्रा दीपमाला मिश्रा ने जहाँ 'मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं का अवलोकन' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न मूल्यों के स्वरूपों को अपने लेखन का विषय बनाते हुए नारी के संदर्भ में मत दिया है कि नारी सदैव दाता की स्थिति में रही है। इसलिए वे नहीं चाहती कि वह छोटे-छोटे अधिकारों के लिए याचक बनकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था के आगे हाथ फैलाएँ वहीं 'मृदुला सिन्हा के साहित्य में लैंगिक असमानता : चिंतन, अवलोकन और चुनौतियाँ' शीर्षक के अंतर्गत लिखे आलेख से स्पष्ट होता है कि आज ग्रामीण-शहरी संस्कृति ग्लोबल की गंध से गंधहीन होती जा रही है। समानता के साथ-साथ स्त्री सम्मान और सुरक्षा भी महत्वपूर्ण हैं, समान संरचना में स्त्री को उच्च स्थान प्राप्त हो। सरिता व सुनीता कुमारी ने 'आदर्शों का विकास एवं प्रभाव' और 'बीसवीं सदी की महिलाओं की सामाजिक-राजनैतिक स्थिति' को नारी लेखन की दृष्टि से विभिन्न रूपों को रेखांकित किया है। प्रत्येक देश की अपनी सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक पृष्ठभूमि होती है उसका अपना स्वभाव होता है। उन्हीं आवश्यकताओं के अनुरूप उसकी अपनी शैक्षिक नीतियों का निर्माण किया जाता है। पश्चिम का अनुकरण हमारी शिक्षा-व्यवस्था को सही मुकाम नहीं दिला सकता। भारत का स्वभाव और आवश्यकताएँ पश्चिमी जगत से सर्वथा भिन्न हैं।

डॉ. प्रज्ञा ने 'कोविड-19 में योग की भूमिका' शीर्षक के अंतर्गत जीवन मूल्यों को अपने लेखन का विषय बनाते हुए मत दिया है कि किस प्रकार कोविड महामारी में 'योग' स्वस्थ जीवन का आधार बना। शोधार्थी निधि माहेश्वरी ने 'पर्यावरण : कल आज और कल' के क्रियान्वयन में समस्याएँ और चुनौतियों पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है। उनके आलेख का आधार अनंत संभावनाओं की पूँजी है की समस्याओं को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया है। शोध छात्रा रंजना का आलेख 'हिंदी पत्रकारिता' परंपरा से चली आ रही हिंदी पत्रकारिता में प्रवेश पा गई अनेक खामियों के साथ हिंदी पत्रों को वृद्धि एवं समृद्धि प्रदान करती है। वर्तमान में हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप लोक संस्कृति के विविध कला व रूपों को आधार बनाकर एकजुटता का आह्वान करता हुआ अपनी रचनाधर्मिता और सर्जनशीलता को रूपांतरित कर रहा है, वास्तव में उसके पास अपनी ठोस ज़मीन है, जिस पर खड़ी रह कर वह अपनी विशेष पहचान निर्मित करती हुई जन विरोधी ताकतों को अनावृत कर रही है। उसको नेस्तनाबूद करने के लिए एवं स्वाधीन जनवादी स्वर का बिगुल बजा रही है। श्रीलता पी.वी. ने दलित आत्मकथाएं : जीवन का तीखापन एवं संघर्ष के आख्यान विषय पर लिखा है कि दलित आत्मकथाओं में लेखकों ने पूरी ईमानदारी के साथ खुद के जीवन को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आत्मकथ्य के जरिए उन्होंने अपनी अपनी जाति और समाज की कड़वी सच्चाई को समाज के सामने उजागर किया है।

शोधार्थी रेश्मा लंकेश्वर ने सूर्यबाला के साहित्य में ग्रामीण-शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति, परिवार और समाज शास्त्रीय स्तर पर मानवीय मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका का वर्णन किया है। प्रेम, दया, ममता, सेवाभाव

जैसे मूल्यों का विकास करना आवश्यक है। यदि नई पीढ़ी में इन मूल्यों का संवर्द्धन बचपन से ही करना शुरू किया जाए तो इससे उनके जीवन की आधारशिला मज़बूत होगी। डॉ. एकता भाटिया और रविंद्र कुमार वर्तमान शिक्षा पद्धति में व्यावहारिक विषयों-नैतिक मूल्यों को स्थापित किए जाने के पक्षधर हैं जिससे शिक्षा पद्धति की आधुनिक परिवेश में प्रासंगिक हो सकें। किसी भी राष्ट्र के मूल विकास हेतु लोगों का संस्कारवान-सुशिक्षित होना आवश्यक है। विद्यार्थियों को ऐसे 'गुरुओं की तलाश' है जो 'वर्तमान परिवेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता' को प्रस्तुत करें, ऐसे ही अनेक बिंदुओं को लोकभूमि पर उतारना रचनाकार की कलात्मकता का परिचायक है जिसे बखूबी प्रस्तुत किया गया है। विद्यार्थियों को डॉक्टर-इंजीनियर इत्यादि बनने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करना भी आवश्यक है। यह तभी संभव होगा जब शिक्षा में विभिन्न विषयों-प्रविधियों को सम्मिलित किया जाए। शिक्षण संस्थान ऐसे हो जहाँ बिना किसी भेदभाव के छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके। अतः सभी का शिक्षित होना आवश्यक है। वह पुरुष हो अथवा नारी, सभी के लिए शिक्षा ज़रूरी है। नारी शब्द का अर्थ है गुण प्रधान स्त्री व महिला। मनु ने कहा है, "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः। यात्रेतास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

'भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण' पुस्तक में संकलित सभी रचनाकारों का दिल से धन्यवाद प्रेषित करती हूँ और अनंत शुभकामनाएँ देती हूँ कि आप इसी प्रकार अपनी लेखन सृजनधर्मिता को बनाए रखें। सभी सुधीजनों को साहित्य जगत में नभ-सा विस्तार प्राप्त हो! यही मेरी मंगलकामना है। इसके सफल प्रकाशन हेतु समग्र गीना शोध संस्थान परिवार में विशेष रूप से डॉ. नरेश सिहाग जी एडवोकेट के सहयोग के लिए आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस अंक का संपादक बनने का पुनः सुअवसर प्रदान किया। इसी के साथ पुत्र चक्षु व पुत्री वंशिका जिंदल की भी आभारी हूँ, जिसने मुझे प्रकाशन कार्य के प्रति तत्पर रहकर कार्य करने हेतु प्रोत्साहित-अभिप्रेरित किया। आशा है, पाठकों के लिए पत्रिका का यह अंक बहुपयोगी साबित होगा। अंक जैसा भी बन पड़ा है, विनम्रता पूर्वक आपकी सेवा में अपने नए रूप के साथ आप सभी विद्वानों-विदुषियों के हाथों में है।

मेरे इस विनम्र प्रयास की उपयुक्तता का आकलन तो आप सभी सुधी पाठक ही करेंगे। संपादन की पूर्णता प्रकाशन के बिना अधूरी है। पुस्तक प्रकाशन के प्रति मेरी भावपूर्ण मूक वाणी ही पर्याप्त है। आशा करती हूँ कि विद्वान पाठक वर्ग के मध्य इसका उत्साह सहित स्वागत होगा। यह पुस्तक आप विद्वानों-विदुषियों को एक भेंट है। आपकी राय की मुझे सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा श्रीगंगानगर राजस्थान से प्रकाशित पत्रिका की प्रबंधक समिति एवं सम्पादक डॉ. रेखा सोनी जी एवं प्रधान सम्पादक डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट का भी दिल की गहराईयों से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मुझे "भारतीय राष्ट्रीय : जन जागरण विशेषांक" के सम्पादन का अवसर देकर मेरी प्रतिभा को चार चांद लगाकर मेरा उत्साहवर्द्धन किया।

-डॉ. रीना अग्रवाल, हरिद्वार उत्तराखण्ड



## मृदुला सिन्हा के साहित्य में लैंगिक असमानता : चिंतन, अवलोकन और चुनौतियाँ

डॉ. रीना अग्रवाल

हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

मानव एक जीवधारी प्राणी होने के साथ-साथ एक चेतना संपन्न सामाजिक प्राणी है। सामाजीकरण की इस प्रक्रिया से वह जीवन पर्यंत गुजरता है। जीवन का प्रत्येक आयाम इसी प्रक्रिया द्वारा निर्धारित-संचालित होता है। इसके अंतर्गत समाज, संस्कृति और परिवेशजन्य तत्त्व सक्रिय होते हैं जो व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला का निर्धारण करते हैं। साहित्य में साधारण व्यक्ति के जीवन दर्शन को विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है। समकालीन कथाकार सामाजिक, पारिवारिक, स्त्री विमर्श जैसे विविध विषयों पर लिख रहे हैं तो वहीं साहित्यकार मृदुला सिन्हा लैंगिक समानता, बालिका भ्रूण की जाँच, हत्या व रोक, मानवीयता और जीवन मूल्यों को दर्शाते साहित्य का सृजन किया है।

समाज ने सदैव ही स्त्री की अपेक्षा पुरुषों को सर्वाधिक वरीयता दी है। वंश वृद्धि स्त्री ही करती रही परंतु परंपरा अनुसार पुरुष को कुलदीपक मानते हुए उसके द्वारा वंश बढ़ाए जाने की बात कही जाती है। यह पीड़ा सभी स्त्री आत्मकथाओं में दृष्टिगत होती है। लेखिका कुसुम अंसल अपनी आत्मकथा के माध्यम से उजागर करती हैं कि उनके भाइयों को लंदन इंजीनियरिंग करने के लिए भेज दिया जाता है परंतु उनको मेडिकल में जाने से स्पष्ट रूप से मना कर दिया जाता है। अपनी इस पीड़ा को व्यक्त करते हुए वे लिखती हैं, “मेरी पढ़ाई जो इस समय मेरी भाग्य निर्णायक थी, मुझे उसकी विधा बदलनी पड़ रही थी। मैं आगरा से बारहवीं विज्ञान माध्यम से करके आई थी। प्री-मेडिकल की परीक्षा में बैठने की पूर्ण तैयारी भी थी। पापा ने हँसकर कहा ‘मेरी बेटी क्या मिडवाइफ बनेगी, दाई बनकर बच्चे जन्मवाएगी! नहीं कभी नहीं।’” दो सौ वर्षों की गुलामी से मुक्ति पाने के बाद भी आज़ादी की कीमत भारत के कई परिवारों में स्त्री को गुलाम बनाकर रखा है। उनके सपनों का गला घोटना और उनकी आज़ादी को छीन लेना कितना सही है परंतु अपवाद में कुछ स्त्रियाँ पारिवारिक-व्यक्तिगत जीवन में सामंजस्य बनाकर अपनी पहचान स्थापित करती हैं। समाज उनके संघर्ष को सम्मान दे या न दे स्त्री विमर्श इसी आज़ादी की पैरवी करता है, “स्त्री अस्मिता का प्रमुख आधार है। स्त्री को पुरुष के संदर्भ से बाहर लाना और स्त्री संदर्भ में रखकर ही देखना, पितृसत्ता विचारधारा का विरोध करना। उन सभी तर्कों का विखंडन करना, अस्वीकार करना जो स्त्री की स्वतंत्र पहचान से उसे वंचित करते हैं अथवा मातहत बनाते हैं।”<sup>2</sup>

दुर्भाग्यवश भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में लिंग असमानता आज भी व्याप्त है। ‘लिंग असमानता’ के आँकड़ें देखने को मिलते हैं वे भयावह हैं। पितृसत्तात्मक समाज की मानसिकता आज भी मन मस्तिष्क पर अंकित है। भारतीय समाज में बेटा पैदा होने पर खुशी मनाते हैं, बेटी का जन्म पर पूरा परिवार शोकाकुल हो जाता है। आज बदलाव की बयार बह रही है। यह

शिक्षा और साहित्य के माध्यम से संभव हुआ। लैंगिक समानता को जिन शब्दों के द्वारा परिभाषित किया गया है उसके मायने कुछ इस प्रकार है कि लिंग एक सामाजिक, सांस्कृतिक शब्द है जिसे सामाजिक परिभाषा से संबंधित करके महिला-पुरुष के कार्यों और व्यवहारों से परिभाषित किया जाता है। लेखिका मृदुला सिन्हा की 'बराबरी का विधान' कथा में ऐसी ही एक लड़की का चित्रण है जिसने बीए ऑनर्स किया और आगे पढ़ना चाहती हैं पर ससुर ने कहा, "सदा सुहागन रहो' बस आगे मत बढ़ना। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पत्नी का पति की अनुगामीनी रहना सुखी परिवार का आधार है।"<sup>3</sup> डॉ. ललिता एन. राठौड़ का लिंगात्मक भेदभाव को लेकर कथन है, "शिक्षित नारी पूरी पीढ़ी को आगे बढ़ाती है। यदि नारी को शक्तिशाली बनाना है तो सर्वप्रथम उसको शिक्षित करना नितान्त आवश्यक है।"<sup>4</sup>

भारतीय समाज में मुख्य रूप से लिंग असमानता का मूल कारण पितृसत्तात्मक व्यवस्था का होना है। इस विषय पर प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिल्विया वाल्बे ने 'पितृसत्तात्मकता सामाजिक संरचना की ऐसी प्रक्रिया और व्यवस्था कहा है जिसमें पुरुष, महिला पर अपना प्रभुत्व जमाता है।' उसे महिला का दमन और शोषण करने वाला माना है। वैसे भी महिला-शोषण सदियों पुरानी संस्कृति रही है। पितृसत्तात्मकता व्यवस्था अपनी वैधता और स्वीकृति हर तरह से हर तरीके से थोपती आई है फिर चाहे कोई भी धर्म, समाज या संस्कृति क्यों न हो। परिणामस्वरूप अन्य महिला लेखिकाओं की तरह मृदुला सिन्हा भी स्त्री-पुरुष समानता तक ही सीमित न रहकर तथा आधुनिकता के नाम पर भारतीय संस्कृति की उपेक्षा न करके आधुनिकता और संस्कृति की पक्षधर हैं। उन्होंने स्त्री शोषण का सबसे मुख्य कारण पितृसत्तात्मक व्यवस्था को माना है परंतु इस व्यवस्था में वह समझौता करने के लिए आक्रोश के स्थान पर समझदारी का सहारा लेती हैं।

पुस्तक 'मेरे साक्षात्कार' में मृदुला सिन्हा अपने साथ हुई बचपन की घटना का वर्णन करते हुए परिवार में फैली लिंग असमानता की बात के संदर्भ में लिखती हैं, "मैं अपने माता-पिता की अंतिम संतान थी। मेरी माँ चालीस वर्ष की थीं जब मेरा जन्म हुआ था। माँ का नाम अनूपा देवी था। वे नहीं चाहती थीं कि उन्हें फिर संतान पैदा हो। उन्होंने गर्भपात की दवा खा ली। वे घूँघट में रहती थीं। मेरे पिता जी को मालूम हुआ कि उनकी पत्नी गर्भवती थीं। मेरी बड़ी बहन की शादी हो गई थी इसलिए शर्म के मारे उन्होंने दवा खा ली। मेरे पिता जी अपने गाँव के पहले पति थे जो माँ को शहर ले गए, इलाज करवाया और गर्भ रुक गया। माँ का अबॉर्शन नहीं हुआ। जब मेरे इलाके में किसी ने मैट्रिक पास नहीं किया था, बी.ए. ऑनर्स किया मैंने। तब मेरे पिताजी ने मुझे ये बात बताई कि तुम्हारी माँ ने ऐसे दवा खा ली थी। इस तरह सबसे अंतिम संतान बेटी जनने पर भी पिता जी ने उन्हें बहुत सम्मान दिया और मुझे बहुत प्यार दिया।"<sup>5</sup>

यहाँ दिखाया गया है कि किस तरह से उनके जन्म पर भी इस असमानता का व्यापक रूप फैला हुआ था। एक अन्य स्थान पर वे धर्म एवं शास्त्रों में निहित पंक्ति का उदाहरण देते हुए अपने जवाब में कहती हैं कि हमारे शास्त्रों में एक श्लोक है जिसे बेटी की विदाई के समय पढ़ा जाता है, "तुम्हें दस पुत्र रत्न की प्राप्ति हो, ग्यारहवाँ पुत्र तुम्हारा पति हो।"<sup>6</sup> बात यह है कि इस तरह की सोच और असमानताएँ फैलने का एक कारण हमारे धर्म शास्त्र भी हैं। जिनमें पुत्र तथा उसकी महिमा का गुणगान कुछ अधिक किया गया है। इस उक्ति को लेखिका जब अपने जवाब में दोहराती हैं तो लगता है कि वे उन धर्म शास्त्रों की भी जानकार हैं और शास्त्रों में यह कहा जाना कि ग्यारहवाँ पुत्र तुम्हारा पति हो, तो यह पितृसत्तात्मक सोच एवं समाज को पुरजोर तरीके से बल देते हुए उठाता है कि 'पुरुष' ही पैदा होना चाहिए।

लेखिका स्त्री-पुरुष समानता की अपेक्षा निबंध संग्रह 'मानवी के नातें' में संकलित 'औरत को औरत ही रहने दो' के सिद्धांत की पक्षधर हैं। वे स्त्री की समान भूमिका की सराहना करती हैं। उनके यह विचार मुख्य रूप से 'औरत अविकसित पुरुष नहीं', 'मात्र देह नहीं है दुहिता', 'नारी, व्यक्ति बने या वस्तु', 'स्त्री-पुरुष सहभागिता', 'नारी जीवन की सार्थकता' आदि

लेखों में देखने को मिलते हैं। मृदुला सिन्हा समानता के साथ-साथ स्त्री सम्मान और सुरक्षा को भी महत्वपूर्ण मानती हैं। पुरुष के साथ प्रतिबद्धता की स्थिति का विरोध करती हैं क्योंकि उनके अनुसार अकारण की प्रतिस्पर्धा समाज और सबसे अधिक नर-नारी के विकास के लिए घातक है। समान संरचना में वह स्त्री को सबसे ऊँचा स्थान प्रदान कर उसे मानवीय रूप में भी प्रस्तुत करती हैं। साथ ही वह समाज को समग्रता में देखने की मांग रखती हैं। नारी के संदर्भ में उनका मत है कि नारी सदैव दाता की स्थिति में रही है। इसलिए वे नहीं चाहती कि वह छोटे-छोटे अधिकारों के लिए याचक बनकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था के आगे हाथ फैलाएँ। लेखिका यहाँ इस बात की भी पुष्टि करती हैं कि समाज में असमानता उत्पीड़न से परेशान होकर नारी का तेवर चिनगारी-सा बनता है तो वह भी उसकी रचनाधर्मिता को ही प्रकट करता है क्योंकि प्रकृति से उसे लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा, इन तीनों शक्तियों का समूचा रूप प्राप्त हुआ है।

मृदुला जी 'स्त्री' की स्थिति को दर्शाते हुए कहती हैं कि वह चिनगारी तो बने परंतु अपने मूल रूप का त्याग कभी न करें। उसे प्रीत की रक्षा हेतु अपने मूल कर्तव्यों का दायित्व निभाना पड़ेगा। निबंध संग्रह 'मानवी के नाते' में संकलित 'कर्तव्य साधना से अधिकार चेतना' लेख में लेखिका नारी को परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण स्तंभ मानती हैं क्योंकि नारी ही नारी का आधार है। भावी पीढ़ी को सुसंस्कृत व आदर्श नागरिक बनाने का दायित्व भी वही निभाती है। वह शक्ति स्वरूपा हैं। स्वयं नारी, अपने विकास के प्रति सजग हो जाए, परंतु कर्तव्य-समर्पण न भूले, क्योंकि पुरुषों के कर्तव्य विमुख होने से समाज का कुछ नहीं बिगड़ता। नारी अपना कर्तव्य भूल जाए तो सृष्टि की गति थम जाएगी। इसलिए लेखिका लिंग असमानता प्रतिकार के फेर में न पड़कर अपनी शक्ति का प्रयोग 'स्वहित' में किए जाने पर बल देती रही हैं। लेखिका ने एक सजग नारी होने के चलते मानव जीवन की सभी विसंगतियों, पीड़ाओं, व्यथाओं को अनुभव करके उसका समाधान भावुकता से नहीं तार्किकता से प्रस्तुत किया है।

इनका मूल्यांकन करने पर ज्ञात होता है कि अलग-अलग विषयों को लेकर किया गया सृजन उनके उत्कृष्ट लेखन का परिचय हैं। उनके अनुसार नारी कोई 'भोग की वस्तु नहीं है', 'न कठपुतली न उड़नपरी है', 'मात्र देह भी नहीं है' और 'न ही वह अविकसित पुरुष' ही है। नारी को मृदुला जी पुरुष समानता का आधार मानती हैं। लैंगिक भेदभाव को रोकने में कारगर उपाय यही हो सकता है कि बेटियों को शिक्षित किया जाए, उन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाया जाए। इसको बढ़ावा देने के उद्देश्य से महिला आरक्षण लागू किया गया है। महिलाएँ जब तक आर्थिक रूप से सबल नहीं होंगी तब तक सामाजिक व्यवस्था में बदलाव नहीं होगा। इस विषय में मृणाल पाण्डेय का कथन है, "सड़ी-गली हुई 'मान्यताएँ और परंपराएँ' जो लिंगात्मक भेदभाव पनपाती हैं, सबल उखाड़ फेंकी जानी चाहिए। स्त्री-पुरुष को एक दूसरे की ज़रूरत है।" स्वयं नारी अपने विकास की दिशा निर्धारण में अधिकार के प्रति सजग और जागरूक हो जाए परंतु कर्तव्य की साधना को न भूलने पाए क्योंकि पुरुषों के कर्तव्य विमुख होने से समाज का बहुत कुछ नहीं बिगड़ता यदि नारी अपना कर्तव्य भूल जाए तो सृष्टि की गति ही रुक जाएगी।

उपयुक्त विवेचना के उपरांत स्पष्ट हो जाता है कि मृदुला सिन्हा की स्त्रीमूलक विषयों की कथाकार होने के कारण जो समाज में विघटित हो रहा है उसका यथार्थ चित्रण कथा के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। आज लिंग समानता की बात विश्वांगन में उठ रही है। जिस प्रकार सामाजिक समस्याओं के निदान अपनी मिट्टी से ही प्राप्त किए जा सकते हैं उसी प्रकार बच्चों की देखभाल, पालन-पोषण, उनके समुचित शारीरिक-मानसिक एवं भावनात्मक विकास के उपाय भी हमारी परंपराओं में विद्यमान हैं। बच्चों की देखभाल के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि उन्हें ऐसी शिक्षा दीक्षा प्रदान की जाए जो नैतिक संस्कारों से युक्त हो ताकि भविष्य में वह समाज-देश की बेहतर देखभाल कर पाएँ। इस संदर्भ में कि किसी भी घटक को

मांगने से अधिकार नहीं मिलते वे कर्तव्य की लागत से प्राप्त किए जाते हैं। बच्चे बुजुर्गों का आदर करना बचपन से ही सीखें। राष्ट्रीय आवश्यकता को देखते हुए कम संतान-स्वस्थ संतान का जन्म हो। इसी संदर्भ में यह आवश्यक है कि परिवार सीमित हो। यह प्रयास किया जाना चाहिए कि बच्चे बिना किसी कुंठा के बड़े हो। उनके पास सीखने और करने के सभी उपकरण उपस्थित हो। उनकी परवरिश में समाज जितना अधिक सजग होगा उतना ही बेहतर भविष्य बच्चा बनाएगा साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि बच्चों की परवरिश में किसी भी तरह का भेदभाव न हो, बालिकाओं को पैदा होने दें, उनकी गर्भ में ही हत्या न करें। उन्हें उनके भाइयों की ही तरह तभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए ताकि वह भी सामाजिक विकास के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

उपर्युक्त परिपेक्ष्य में आवश्यकता है एक जन आंदोलन की जो नारी के जन्मने से लेकर जीने तक का अधिकार प्रदान करें, “जननी को जन्मने, जननी को जीने, जीवन देते रहने का अधिकार दिलाएँ।”<sup>8</sup>

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अंसल कुसुम, जो कहा नहीं गया, राजपाल प्रकाशन, पृ. सं. 24
2. अग्रवाल डॉ. साधना, संपादक डॉ. दीनदयाल, डॉ. अनुराधा गुप्ता, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिंदी साहित्य संपादक, डॉ. रजत रानी अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि. नई दिल्ली 2018 पृ. सं. 107
3. सिन्हा मृदुला, बराबरी का विधान कथा, ज्ञान गंगा प्रकाशन, 2005, दिल्ली, संस्करण 2016 पृ. सं. 33
4. राठौड, डॉ. ललिता एन., नारी विमर्श, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2014 पृ. सं. 29
5. सिन्हा मृदुला ‘मेरे साक्षात्कार’ किताबघर प्रकाशन, संस्करण, 2017 पृ. सं. 28
6. वही..... पृ. सं. 81
7. पाण्डेय मृणाल, परिधि पर नारी विमर्श, पृ. सं. 58
8. सिन्हा मृदुला, सामाजिक सरोकार, यश पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017 पृ. सं. 83

डॉ. रीना अग्रवाल, शिवालिक इन्कलेव, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

मोबाइल 9808 9633 61

ई.मेल- reena\_itc@rediffmail.com



# पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्रवादी विचारों की प्रासंगिकता

पूजा अग्रवाल

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, श्री वैकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, उ० प्र०

भारत के इतिहास के संबंध में एक बात बेहद महत्वपूर्ण है कि जहां दुनिया की कई सभ्यताएं विलुप्त हो गई हैं वहीं भारत का अस्तित्व बरकरार रहा। वह कौन सी बात थी जिसने इस देश को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई। वह थी इस पुण्य भूमि पर जन्मे लोगों में राष्ट्रीयता की भावना, एकता का संदेश, सद्भाव की संस्कृति, पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों की सौगात। आज जब राष्ट्रीयता का बोध रखना इसी भारत में कुछ लोगों को खलने लगा है, देश के टुकड़े टुकड़े करने के नारे को कुछ युवाओं की नजर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समझा जाने लगा है, ऐसे में पंडित मदन मोहन मालवीय जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी पंडित मदन मोहन मालवीय जी सभी के प्रेरणा स्रोत रहे। वें महान देशभक्त, युग दृष्टा एवं अमर विभूति थे। मालवीय जी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी नेता, राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के युगपुरुष, दूरदर्शी, शिक्षाविद एवं सत्य अनुरागी थे। मालवीय जी का जीवन दर्शन ईश्वर भक्ति एवं राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत था।

25 दिसंबर 1861 को पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित ब्रजनाथ तथा माता का नाम मूना देवी था। (वें अपने सात भाई-बहनों में पाचवें पुत्र थे।) पंडित ब्रजनाथ जी संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे। वें श्रीमद्भागवत की कथा सुना कर अपनी आजीविका अर्जित करते थे। मालवीय जी का परिवार बहुत ही सरल, धार्मिक एवं आध्यात्मिक था और यह सरलता एवं सादगी मालवीय जी के चरित्र में भी दिखाई देती थी। लोकमान्य तिलक ने शास्त्रों का अध्ययन गहराई से किया था। अपनी व्याख्या से गीता की आत्मा, जीवन में कर्म की प्रधानता बताई थी। उन्होंने कहा था-“आपको यह नहीं मान लेना चाहिए कि आप जो श्रम करेंगे उसके फलस्वरूप उत्पन्न फसल को आप ही काटेंगे, सदैव ऐसा नहीं होता। हमें अपनी पूर्ण शक्ति से श्रम करना चाहिए और उसका परिणाम आने वाली पीढ़ी को भोगने के लिए छोड़ देना चाहिए याद रखिए आप जो आम खा रहे हैं उनके वृक्ष आपने नहीं लगाए थे।”

महामना मालवीय जी के चिंतन का सबसे प्रखर तत्व उनकी राष्ट्रीयता की अवधारणा है। जब मालवीय ने भारतीय राजनीति में पदार्पण किया तब देश का राजनीतिक परिदृश्य विदेशी आधिपत्य से भारत की स्वाधीनता के लिए आंदोलित था।

ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय जनमानस में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आधार पर मतभेद बढ़ गए थे ऐसा मालवीय जी ने अनुभव किया। अतः एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति की भांति उन्होंने राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय जागरण एवं नव निर्माण के लिए लोगों में कार्य कुशलता, कर्तव्य निष्ठा एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जागृत करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि—“ एक देश के अंतर्गत निवास करने वाले, एक ही संप्रभु शक्ति के अधीन, एक सरकार द्वारा संचालित, एक ही कानून में समान रूप से मर्यादित, धार्मिक और मत-मतान्तरो की विविधताओं के बावजूद किसी राजनीतिक विचारक की दृष्टि से एक राष्ट्र का ही निर्माण करते हैं। मालवीय जी देश की पराधीनता एवं निर्धनता से बहुत दुखी थे। वे देश को निर्धनता से नहीं दरिद्रता से मुक्त कराना चाहते थे। दरिद्रता से मुक्ति के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने नागरिकों में आत्मनियंत्रण, स्वदेशाभिमानी तथा पौरुष का होना आवश्यक बताया, जो धार्मिक एवं शैक्षिक क्रांति के बिना संभव नहीं है। धर्म, समाज एवं शिक्षा को वे जीवन का आधार मानते थे। वे समझते थे कि इनके उत्थान के बिना देश का उत्थान संभव और अर्थहीन है। पंडित मदन मोहन मालवीय के कार्यों का पहला मंच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी, जिसके जन्म से लेकर, अपने जीवन के उत्तरार्ध तक वे इसके वरिष्ठ कार्यकर्ता रहे। मालवीय जी ने सरकार की दमन नीति का विरोध करते हुए राजनीतिक सुधारों की मांग की तथा राष्ट्र के हितों को पुष्ट किया। वे देश को आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा बौद्धिक स्तर से ऊपर उठाने के लिए सदैव प्रयासरत रहे।

मालवीय जी का जन्म प्रयाग में हुआ परंतु उनकी तपस्थली काशी बनी। मालवीय जी ने काशी में प्राचीन भारतीय शिक्षा के गौरवशाली मंदिर तक्षशिला और नालंदा को पुनर्जीवित करते हुए राष्ट्र निर्माण में भारतीय दृष्टि के अनुरूप शिक्षा की परिकल्पना को जीवंत स्वरूप देते हुए 4 फरवरी वर्ष 1916 में बसंत पंचमी के दिन काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य प्रकट करते हुए एक दीक्षांत भाषण में कहा था कि यहां के छात्र विद्या अर्जित करें, देश व धर्म के सच्चे सेवक बनें, वीरता के साथ अन्याय का प्रतिकार करें। महामना सनातन हिंदू थे। वे तिलक लगाते थे तथा संध्यापूजन करते थे। जब वे गोलमेज परिषद में गए तो अपने साथ गंगाजल ले गए। उनमें निडरता, उदारता और सृजनात्मकता कूट-कूट कर भरी थी। 1913 में हरिद्वार में गंगा पर बांध बनाने की योजना का तब तक बहिष्कार करते रहे जब तक कि शासन ने उन्हें भरोसा नहीं दिया कि गंगा को हिंदुओं की अनुमति के बिना बांधा नहीं जाएगा। शासन को यह भी वादा करना पड़ा कि अंग्रेजी हुकूमत 40 प्रतिशत गंगाजल प्रयाग तक पहुंचाएगी। मदन मोहन मालवीय ने समाज व राष्ट्र की भरपूर सेवा की और संस्कृति का संरक्षण किया।

उन्होंने समाज में कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में काम किया और उन्होंने मंदिरों और अन्य सामाजिक बाधाओं में जाति की बाधा को मिटाने की कोशिश की। उन्होंने हिंदू मुस्लिम एकता को बनाए रखने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्हें सांस्कृतिक सद्भाव से संबंधित विषयों पर भाषण देने के लिए जाना जाता था। दलित क्षेत्रों के लिए उनके सामाजिक कार्यों के कारण, उन्हें श्रीगौड ब्राह्मण द्वारा निष्कासित कर दिया जाता है। उन्होंने रथ यात्रा के दिन कालाराम मंदिर में हिंदू दलितों के प्रवेश की व्यवस्था की थी और हिंदू मंत्रों का जाप कर गोदावरी नदी में डुबकी लगाई थी। इतिहासकार वी.वी. साहू के अनुसार—“ हिंदू राष्ट्रवाद के समर्थक मदन मोहन मालवीय देश में जातिगत बेड़ियों को तोड़ना चाहते थे। उन्होंने दलितों के मंदिरों में प्रवेश निषेध की बुराई के खिलाफ देश भर में आंदोलन चलाया।

भारत स्वतंत्रता संग्रामियों में से एक महामना मदन मोहन मालवीय को साल 2014 में भारत सरकार ने भारत रत्न से



सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान उनकी मृत्यु के 68 वर्ष बाद मिला जबकि बहुत से इतिहासकार, शिक्षाविद् और विचारकों का मानना है कि देश के लिए महामना के त्याग और कार्यों को देखते हुए यह सम्मान उन्हें बहुत पहले ही मिल जाना चाहिए था। उनके अभूतपूर्व कार्य की वजह से ही टैगोर और महात्मा गांधी ने उन्हें महामना की उपाधि से नवाजा। बाबू उन्हें बड़े भाई की तरह मानते थे। बापू ने मदन मोहन मालवीय के सरल स्वभाव का जिक्र करते हुए कहा था कि - “जब मैं मालवीय जी से मिला..... वह मुझे गंगा की धारा की तरह निर्मल और पवित्र लगे। मैंने तय किया कि मैं उसी निर्मल धारा में गोता लगाऊँगा।” मदन मोहन मालवीय जी ने ही सत्यमेव जयते को लोकप्रिय बनाया था। यह बाद में चलकर राष्ट्रीय आदर्श वाक्य बना और इसे राष्ट्रीय प्रतीक के नीचे अंकित किया गया हालांकि इस वाक्य को हजारों साल पहले उपनिषद् में लिखा गया लेकिन इसे लोकप्रिय बनाने के पीछे मदन मोहन मालवीय जी का हाथ था।

साल 1887 में उन्होंने स्कूल की नौकरी छोड़कर पत्रकारिता में अपना कैरियर शुरू किया साथ-साथ वकालत की पढ़ाई भी की और प्रैक्टिस भी। परंतु भारतीय राजनीति में उनके बढ़ते रुतबे के चलते उन्हें वकालत छोड़नी पड़ी। साल 1922 में चोरी-चोरा कांड हुआ और लगभग 172 स्वतंत्रता सेनानियों को अंग्रेजी सरकार ने हिंसा के जुर्म में गिरफ्तार कर फांसी की सजा सुना दी। ऐसे में, महामना ने पुनः वकालत की कमान संभाली और मुकदमा लड़कर 153 लोगों को बरी भी करवाया। बाकि सभी की भी फांसी की सजा को माफ करवाकर उम्र कैद में बदलवा दिया। ऐसा व्यक्तित्व था भारत के महामना का। मालवीय जी बनारस में नहीं मरना चाहते थे क्योंकि कहते हैं बनारस में मरने पर दोबारा पृथ्वी पर जन्म नहीं मिलता। लेकिन महामना पुनः भारत की भूमि पर जन्म लेकर अपने जीवन को गरीबों और जरूरतमंदों के लिए समर्पित करना चाहते थे। महामना कहते हैं-“हम धर्म को चरित्र का पक्का आधार और मानव सुख का सच्चा स्रोत मानते हैं।” हम मानते कि देशभक्ति एक शक्तिशाली उत्थान प्रभाव है जो पुरुषों को उच्च विचार वाले निस्वार्थ कार्यवाही के लिए प्रेरित करती है। “निर्भयता ही स्वतंत्रता का एकमात्र मार्ग है, निडर बनो और न्याय की लिए लड़ो।” मालवीय जी के शब्दों में-“स्वतंत्रता कोई पका फल नहीं है जो आकाश से आपके मुंह में आ गिरने को तैयार हो और न ही कोई ऐसा सक्षम व्यक्ति ही है जो आपके मुंह में उसे डाल सके। आपका कठोर परिश्रम ही उसे ला सकता है।” ऐसे विचार थे महामना के।

रोमैरोला के शब्दों में- “मदनमोहन मालवीय जी गांधीजी के बाद भारत के सम्मानित व्यक्तियों में से एक हैं। वह ऐसे महान राष्ट्रियतावादी हैं, जो प्राचीनतम हिन्दू विश्वासों और आधुनिकतम वैज्ञानिक विचारों में समन्वय कर सकते हैं। अली बन्धुओं तक ने मालवीय जी की विचारधारा को स्वीकार किया था। मालवीय जी की दृष्टि में भारतीय राष्ट्रवाद की आवश्यकता यह थी कि जिसमें सभी वर्गों का कल्याण एवं हितों का संवर्धन हो। महामना का कार्यक्षेत्र, अध्ययन बहुत ही विस्तृत और व्यापक था। समाजसेवा शायद ही ऐसा कोई पक्ष हो जो उनके कार्य परिधि में न आया हो। सनातन धर्म का प्रचार, प्राचीन भारतीय संस्कृति का उत्थान, हिंदू हितों की रक्षा, हिंदी का प्रचार, गौ माता की सेवा, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, स्वयंसेवकों का संगठन, ज्ञान विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में वृद्धि, शिक्षा का विस्तार, वंचितों के कष्टों का निवारण, प्रगतिशील सिद्धांतों का प्रतिपादन, देश काल के अनुकूल संस्कृति का विकास, राष्ट्रियता की भावना का विकास आदि सभी क्षेत्रों में उनका योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

एक महान राष्ट्रभक्त, भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक, दूरदर्शी शिक्षाविद्, मूर्धन्य विधिवेत्ता, सफल सांसद,

अग्रणी पत्रकार, प्रखर समाज सुधारक एवं लोकप्रिय जन नेता भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय का योगदान हर क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं अद्वितीय रहा।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. मालवीय, (1962) पंडित पदमकांत, मालवीय जी के लेख, दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
2. तिवारी, उमेश दत्त, (1988) भारत भूषण महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, पब्लिकेशन काशी हिंदू विश्वविद्यालय।
3. युगपुरुष पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राजनीतिक विचार प्रेमचंद।
4. राष्ट्रवाद के अग्रदूत मालवीय जी 25 दिसंबर 2018
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. श्रीनिवास शर्मा।
6. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास विश्वनाथ त्रिपाठी।
7. कम्पलीट बार्क आफ स्वामी विवेकानन्द, वाल्यूम-6, मालवीय जी की जीवन झलकियां, भारतीय मनीषा के अग्रदूत पंडित मदन मोहन मालवीय।  
ampgc.ac.in
8. सुमित सरकार, आधुनिक भारत (1885-1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993,
9. पाठक, समीर कुमार (2013) मदन मोहन मालवीय और हिंदी नवजागरण, दिल्ली, यश पब्लिकेशन।
10. thebetterindia.com 12 nov.2019
11. बी0 एन0 लुहिया : प्राचीन भारतीय संस्कृति।
12. जागरण 25 दिसंबर 2021, भारतीय संस्कृति, धर्म और नीति की शिक्षा के पक्षधर पंडित मदन मोहन मालवीय, संजय पोखरियाल।
13. <https://www.jagran.com>

मोबाईल - 8433464026

ई -agarwalpooja5750@gmail.com

## स्मृति काल में स्त्रियों की शिक्षा

सुनिता कुमारी

पूर्व शोधार्थिनी, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, छपरा।

किसी भी समाज की सभ्यता व संस्कृति शिक्षा से ही विकसित होती है। विश्व में सर्वप्रथम शिक्षा की महत्ता को भारतीयों ने ही समझा। भारतीय शिक्षा प्रणाली से सैकड़ों वर्षों तक वैदिक साहित्य ही सुरक्षा ही नहीं हुई बल्कि भारतीय दर्शन, न्याय गणित, ज्योतिष, वैद्यक रसायन आदि के ज्ञान के क्षेत्रों में ऐसे विद्वान प्रादुर्भूत हुए जो इन ज्ञानों को सुरक्षित रखते हुए भारत का मस्तक उँचा किये।

स्मृति काल में पुरुषों के ही समान स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्मृति काल में पुरुषों के ही समान स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्मृति-काल विधि-विधानों का काल था। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन इन्हीं विधि-विधानों से बंधा हुआ पूर्णरूपेण अनुशासित तथा नियमित था। आचार्य मनु आदर व मान्यता के क्रम में धन, सम्बन्ध, आयु, कर्म, विद्या-इन पाँचों को मान्यता देते हैं, जिसमें विद्या सर्वोच्च पद पर प्रतिनिष्ठा है :-

“वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति पंचमी।

एतानिमान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरत्।”<sup>1</sup>

शिक्षा का प्रारम्भ उपनयन संस्कार से होता था, जो स्त्रियों के लिए औपचारिक रीति ही बनकर रह गया। विवाह को ही उनका उपनयन माना जाने लगा। आचार्य मनु स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन थे, यह तब स्पष्ट होता है जब वे कन्या के विवाह की आयु आठ वर्ष निर्धारित करते हैं। स्त्रियों को शुद्रवत् शिक्षा से वंचित रखने का विधान करते हैं। स्त्रियों के पाणिग्रहण संस्कार में ही मंत्रोच्चारण का विधान करते हैं, अन्य संस्कारों में नहीं -

“नास्तिस्त्रीणां क्रियामन्त्रैरितिधर्मव्यवस्थितिः।

निरिन्द्रिया ह्यमन्त्रा चस्त्रियोऽनृतमितिस्थितिः।।<sup>2</sup>

विवाद काल में सुन्दर स्त्रियोचित गुण से सम्पन्न आभूषणों से अलंकृत कन्यादान की बात कही गयी है। लेकिन कहीं पर भी सुरक्षित कन्या की बात नहीं कही गयी है। नारी के लिए विवाह की अल्पायु अध्ययन के प्रति उदासीनता को द्योतित करता है, याज्ञवल्क्य स्त्रियों के सम्बन्ध में उदार माने जाते हैं, लेकिन इन्होंने भी स्त्रियों के संस्कार को आंत्रक ही बताया है। (याज्ञवल्क्य स्मृति 9/18)

नारद और परासर जैसी स्मृतियाँ भी स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में मौन ही हैं। भृगुस्मृति तथा बद्धहारीति में शुद्रों तथा स्त्रियों के उपनयन एवं अध्ययन की व्यवस्था है। बद्धहारीति के अनुसार सदाचारी, सत्यशील आदि गुणों से युक्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र व स्त्रियों मंत्रों के पाठ की अधिकारी हैं :-

“ब्राह्मणः क्षत्रियाः वैश्याः स्त्रियः शुद्रस्तयेः।

तस्याधिकारिणः सर्वे सत्यशिल गुणायदि ।।<sup>3</sup>

(बद्धहारीति 3/6)

भृगु स्मृति का कथन है कि बालकों एवं कन्याओं का उपनयन संस्कार पाँच वर्ष की अवस्था में कराकर उन्हें वेदभ्यास करना चाहिए। ( भृगु स्मृति 3/40-43, 10/1-15)

इस प्रकार हम देखते हैं कि बहारीति तथा भृगुस्मृति आदि कुछ अल्प स्मृति ग्रन्थों में ही स्त्री-शिक्षा की व्यवस्था अपवाद रूप में मिलती है। सामान्य रूप से दृष्टिपात करने पर स्मृति काल में नारी शिक्षा का हास ही दृष्टिगत होता है, वेदों में स्त्रियों के लिए उपनयन तथा शिक्षा की सुविधायें दृष्टिगत होती हैं, जो स्मृतिकाल में बाधित हो गयी। इस महनीय परिवर्तन का मूल कारण है वेदों में नारी की स्वतन्त्रता का परतन्त्रता में बदलना। अनेक स्मृतिकारों ने वाल्यकाल से वृद्धावस्था तक स्त्री को पुरुष के अधीन कर दिया है, जिससे उनका कार्यक्षेत्र केवल घर गृहस्थी तक सिमटकर रह गया। विदेशी आक्रमण से समाज में व्याप्त असुरक्षा ने स्त्रियों की स्थिति को प्रभावित किया। कन्याओं का गुरुकुल में जाना बन्द हो गया एवं उनके स्त्रीत्व के रक्षा के लिए वाल्यकाल में ही उनका विवाह किया जाने लगा। स्त्रियों की अशिक्षा के कारण ही उन्हें शूद्र कोटि में रखा गया तथा पति सेवा ही उनका सर्वोच्च कर्म कहा गया :-

वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कार वैदिको स्मृतः

पतिसेवा गुरौवासो गृहार्थोऽग्निपरिक्रिया ।।<sup>4</sup>

स्मृति ग्रन्थों के अतिरिक्त कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी स्त्री को विपत्ति कहा गया है। विधवा, अंगहीन, प्रोषितभर्तृका के लिए सूत कतवाने, घरेलु कार्यों में नियुक्त करने के लिए प्रजा को निर्देशित किया गया है-

(कोटिल्य अर्थशास्त्र द्वितीय अधिकरण 23/2)

अर्थशास्त्र में स्मृतियों की तरह स्त्री शिक्षा के प्रति नकारात्मक भाव है। स्मृतियों में तो नारी शिक्षा की अधिकारिणी बनी रही किन्तु वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से वंचित रखा गया। मनुस्मृति में स्त्रियों के उपनयन को औपचारिक महत्व प्राप्त था। शरीर की शुद्धि के लिए स्त्रियों के उपनयन आदि कर्म यथासमय, यथाक्रम मन्त्रोच्चार किये बिना ही करना चाहिए। स्त्रियों का वैदिक संस्कार उनका यथाविधि विवाह होना ही है। पति सेवा ही उनका गुरु-गृह में रहना और गृहकार्य ही उनकी अग्नि-परिचर्या है।

मानव-शरीर में जो महत्व नाड़ी का है, समाज में वही महत्व नारी का है। स्त्रियों को गृहविज्ञान के शिक्षार्थ बाहर जाने की आवश्यकता नहीं थी। घर के भीतर ही उन्हें ये शिक्षायें मिल जाया करती थी। सम्भवतः नारियों के लिए वैदिक-शिक्षा के महत्व को कम करने का यही कारण था। मनु आदि स्मृतिकारों के द्वारा स्त्रियों के लिए वैदिक-शिक्षा के महत्व को कम करने का यही कारण था। मनु आदि स्मृतिकारों के द्वारा स्त्रियों के लिए वैदिक-शिक्षा विरोध करना कुछ दृष्टियों से उनके व समाज के हित में ही था। यह किसी द्वेष भावना से नहीं किया गया था।<sup>5</sup>

मनुस्मृति में ऐसा कहा गया है कि बालिका, युवती अथवा वृद्धा हो तो भी कोई गृहकार्य स्वतन्त्रता पूर्वक न करे। स्त्री बाल्यावस्था में पिता के, यौवनावस्था में पति के और पति की मृत्यु होने पर पुत्रों के अधिन रहे, स्वतन्त्र न रहे। पिता, पति या पुत्र से अलग रहने की सभी इच्छा न करें, क्योंकि ऐसा करने वाली स्त्री अपने पिता और पति दोनों के कुलों को निन्दित कर देती है। स्त्री सदा प्रसन्न रहकर गृह-कार्यों को दक्षतापूर्वक करें, सभी वस्तुओं को स्वच्छ रखें तथा धन का व्यय कम करें-

“पित्रा भर्त्रा सुतैर्वापितेच्छद्विरहात्मनः।

एषां हि विरहेण स्त्री गृह्ये कुर्यादुभे कुले ।।”<sup>6</sup>

नारियों को साहित्य क्षेत्र में अध्ययन की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। अधिकांशतः साधारण परिवार की कन्यायें धन के अभाव के कारण शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकती थी। शिक्षा के अभाव के कारण स्त्रियों पुरुषों से हीन हो गयी। उनमें, धर्म, अधर्म तथा ज्ञान का अभाव हो गया।

उपर्युक्त विवेचनों से यही स्पष्ट होता है कि अति प्राचीन काल (वैदिक काल) में भारतीय नारियाँ उच्च वैदिक शिक्षा का लाभ उठाती थी, किन्तु स्मृति काल में उनके लिए वैदिक शिक्षा प्रतिबन्धित कर दी गयी, किन्तु साहित्यिक-ज्ञान, काव्य-रचना तथा अनेक कलाओं तथा शिल्पकारी में दक्षता प्राप्ति के लिए उन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

अथर्ववेद के एक मंत्र में कहा गया है कि स्त्री ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुई शिक्षा ग्रहण कर योग्य वर को प्राप्त कर सकती है। वैदिक काल में अनेक विदुषी स्त्रियाँ ऋषि पद प्राप्त थी, इनमें अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, सिकता, निवावरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार स्मृतिकार नारी शिक्षा के प्रश्न पर मौन हैं। अनुमानतः यह कहा जा सकता है कि कर्ताई, बनाई आदि विषयों में कन्यायें निपुण थीं। पुत्रों के समान कन्यायों के भी संस्कारों का अनुमान लगाया जा सकता है। पुत्र के पूर्ण सम्पूर्ण संस्कार वैदिक मन्त्रों के साथ होते थे लेकिन पुत्रियों के संस्कार अमंत्रण किये जाते थे। कन्याओं के विवाह संस्कार में ही वैदिक-मंत्रों का विनियोग किया जाता था।

परिस्थितिवशात् स्मृति-काल में स्त्रियों को वैदिक शिक्षा से वंचित किया गया था, इसीलिए, बालक एवं बालिकाएँ की शिक्षा में विभिन्न थी। यदि बालकों की शिक्षा का उद्देश्य उन्हें श्रेष्ठ, सच्चरित्र और लैकिक जीवन में सफल बनाना था तो बालिकाओं की शिक्षा का उद्देश्य उन्हें उत्तम गृहिणी और श्रेष्ठ माता बनाना था। स्मृतिकालिक समाज में बाल-विवाह, पर्दाप्रथा व सतीप्रथा नहीं थी। वे उत्सवों व त्योहारों से सम्मिलित होती थीं। उनके घर से बाहर निकलने, घूमने-फिरने, आने-जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। उनकी नैतिकता एवं सदाचार का स्तर ऊँचा था।

स्मृतिकाल में धार्मिक कृत्यों, सामाजिक उत्सवों, समारोहों आदि में व पुरुषों के साथ समाज आसन ग्रहण करती थी-

“तस्मादेता सदा पूज्या भूषणाच्छदनासनैः।

भूमिकामैनित्यं सत्कार्येषूत्सवेषु च।”

### संदर्भ :-

1. मनुस्मृति 2/136
2. मनुस्मृति 9/18
3. मनुस्मृति 2/66
4. मनुस्मृति 2/67
5. डॉ. मालती शर्मा-वैदिक संहिताओं में नारी-पृ0 1
6. मनुस्मृति 5/149
7. बी. एन. लुहिया: प्राचीन भारतीय संस्कृति, पृ0 712.



## गोस्वामी तुलसीदास : समन्वय के प्रबल प्रतिपादक

सुमन कुमारी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार।

गोस्वामी तुलसीदास जी भक्तिकाल की सगुण भक्तिधारा के रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनके काव्य में भक्ति, ज्ञान एवं कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है। तुलसीदास जी का काव्य लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत तो है ही साथ में उसमें समन्वय की विराट चेष्टा की गई है। हिन्दी काव्य में तुलसी सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तो उन्हें ऐसा महान कवि मानते हैं जो कवियों का मापदण्ड बन चुके हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का कहना है-“जिस प्रकार उन्होंने लोक, धर्म और साधना को एक में सम्मिलित कर दिखाया उसी प्रकार कर्म, ज्ञान और उपासना के बीच सामंजस्य उपस्थित किया। भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचकर भी लोकपक्ष उन्होंने नहीं छोड़ा, लोकसंग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अंग है।”<sup>(1)</sup>

गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन-वृत के बारे में विद्वानों में विविध मत है। शिव सरोज रचित ‘मूल गोसाईं चरित्र’ तथा महात्मा रघुवर रचित ‘तुलसी चरित्र’ में तुलसीदास जी का जन्म सम्वत् 1554 ई० माना गया है। वहीं मिर्जापुर के प्रसिद्ध रामभक्त पंडित रामगुलाम द्विवेदी ने जनश्रुति के आधार पर इनका जन्म सम्वत् 1589 ई० स्वीकार किया है। तुलसीदास जी की मृत्यु सन् 1680 अर्थात् 1623 ई० में हुई उनकी मृत्यु के संदर्भ में दोहा है-

“सवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर  
श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यौ शरीर।।”

गोस्वामी जी के पिता आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। इनकी माता की मृत्यु प्रभूतिकाल में ही हो गई थी। दासी मुनिका ने इनका पालन-पोषण किया। नरहरिदास जी से शिक्षा-दीक्षा लेकर तुलसीदास काशी आ गये एवं परम विद्वान शेष सनातन जी की पाठशाला में 15 वर्ष तक अध्ययन करके शास्त्र पारंगत बने और जन्मभूमि रायपुर लौटे। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था जिनके मायके जाने पर तुलसीदास उनके बिना रह नहीं पा रहे थे और चढ़ी नदी में तैरकर उनके पास पहुँच गए। तब धिकारते हुए इनकी पत्नी ने इन्हें कहा :-

“लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ।  
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौ मैं नाथ।।  
अस्ति चर्म मम देह यह ता सो ऐसी प्रीति।  
नेकु जो होती राम से तो काहे अब भीति।।”

इसके बाद तुलसीदास जी के मन में राम के प्रति भक्ति जाग गई और उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की जिसमें- वैराग्य संदीपनी, जानकी मंगल, श्री कृष्ण गीतावली, पार्वतीमंगल, गीतावली, दोहावली, कवितावली ( भक्ति रामायण) विनयपत्रिका,

बरवे रामायण, रामाज्ञप्रश्न, रामललानहछू, रामचरितमानस हैं।

समन्वय भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इस देश में समय-समय पर कितनी ही संस्कृतियों का आगमन और आविर्भाव हुआ, परन्तु वे घुल-मिलकर एक हो गयीं। महाकवि तुलसीदास जी ऐसे समय में अवतरित हुए, जब धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सभी क्षेत्रों में एक विचित्र-सी अव्यवस्था फैली हुई थी। रूढ़ियों, अंधविश्वासों, बह्माचारों आदि का बोलबाला था। तात्पर्य यह कि संगठन और समन्वय के स्थान पर विघटनकारी प्रवृत्तियों को पूरा प्रोत्साहन मिल रहा था।

तुलसीदास अपने समन्वयवादी दृष्टिकोण के कारण लोकनायक कहे जाते हैं और बुद्धदेव के पश्चात् उन्हें लोकनायक का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। लोकनायक ही समन्वयवादी हो सकता है और समन्वयवादी ही लोकनायक। अतः तुलसीदास जी के लोकनायकत्व पर विचार कर लेने के लिए उनकी समन्वयवादी भावना पर आचार्य हजारी प्रसाद ने कहा है- “लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। तुलसी का सारा काव्य समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय भाषा, और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय है। रामचरितमानस शुरू से अन्त तक समन्वय काव्य है।”<sup>(2)</sup>

गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में समस्त बातों का समन्वय कर दिया है। कवित्व की दृष्टि से तुलसीदास जी की प्रांजलता, माधुर्य और ओज, अनुपम कथा, मानव-जीवन का सर्वांग निरूपण अप्रतिम हुआ है। उनके अमर-काव्य ‘रामचरितमानस’ में मानवता के चिरन्तन आदर्श भरे पड़े हैं।

तुलसीदास जी ने सबसे पहले धार्मिक सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जिसमें शैव और वैष्णवों का समन्वय, वैष्णवों और शाक्तों का समन्वय तथा राम संप्रदाय और पुष्टिमार्ग का समन्वय करने का प्रयास किया। राम संप्रदाय और पुष्टि-मार्ग का समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत है-

“चतुर सिरोमनि तेई जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ।।

सो मनि जदपि प्रकट जई अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोई लहई ।।”

तुलसीदास जी के दार्शनिक विचारों में अद्वैतवाद एवं विषिष्टाद्वैतवाद का समन्वय मिलता है-

“कौड मह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल करि मानै ।

तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम, सो आपुन पहिचानै ।।”

गोस्वामी तुलसीदास जी ने सगुण एवं निर्गुण का समन्वय प्रस्तुत किया है। सूर ने जहाँ निर्गुण का खण्डन तथा सगुण का मण्डन किया, वहाँ तुलसी ने इनका पूर्व समन्वय किया। तुलसीदास जी ने निर्गुण एवं सगुण के विवाद को दूर करके दोनों में समन्वय स्थापित किया। इसके अलावा तुलसीदास जी ने सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है-“तुलसी के समय में ज्ञानियों एवं भक्तों में बड़ा वाद-विवाद चलता था, जिसके फलस्वरूप ज्ञानीजन भक्तों को तुच्छ समझकर स्वयं को श्रेष्ठ मानते थे। तुलसीदास ने ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय स्थापित कर ज्ञानियों और भक्तों को एक पृष्ठभूमि पर लाया।

तुलसीदास का युग सामन्तवाद आधारित युग था। यह एक ऐसा युग था जहाँ सामन्ती मूल्य, मर्यादा के बन्धन शिथिल न होकर दृढ़ से दृढ़तर होते जा रहे थे। मध्यकाल में शास्त्रों का भाष्यीकरण हो रहा था। शास्त्रों में वर्णित नियमों के आधार पर तद्युगीन मानव-समाज शासित होता था। ये धर्मशास्त्र तद्युगीन सत्ता के संविधान होते थे। इन राजनैतिक और धर्मशास्त्रीय

नियमों में आम जनमानस पिस रहा था। मध्यकालीन वातावरण भय, अकाल, संत्रास का वातावरण बन गया था। किसानों के साथ कर आदि को लेकर पशुवत् व्यवहार होता था। सौन्दर्य प्रदर्शन के लिए कामुकता के चलते स्त्रियों का अपहरण होता था। चारों तरफ धोखा, छल-प्रपंच फैला हुआ था। इसलिए तुलसीदास कहते हैं-“मोहि कपट छल छिद्र न भावा।” सामन्तों के बीच पारस्परिक कलह के कारण युद्ध होता था। परिणामस्वरूप जन-धन की अपार क्षति और अशांति के वातावरण में सत्ताधारी व्यक्ति निरंकुश, भ्रष्टाचारी और क्रूर हो जाता था।

तुलसीदास 'लोक' के कवि है। 'लोक' में उनका आदर आज भी देखने को मिलता है। तुलसीदास ने अपनी रचना में लोकतत्वों को अनेकशः उद्धृत किया है। ये लोक तत्व सामान्य मानव के क्रिया-व्यवहार के अंग हुआ करते हैं। धर्मशास्त्रों में उल्लिखित संस्कारों के अवसर पर जो विधि-विधान किए जाते हैं वे भी लोक-परम्परा के वाहक होते हैं। इन सभी विधि-विधानों का उल्लेख तुलसीदास रूचिपूर्वक करते हैं।

चूँकि मनुष्य की लोकबद्धता उसे लोक-तत्वों से अलग नहीं होने देती है। मनुष्य की लोकबद्धता का सबसे बड़ा प्रमाण तब दिखायी देता है जब शास्त्रीय संस्कारों में भी 'लोक' पूरी मजबूती के साथ प्रस्तुत होता है। तुलसीदास के साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि उनका 'लोकमंगल का विधान' है। तुलसीदास का 'लोकमंगल' रामराज्य की परिणति है।

तुलसीदास समन्वय के विराट प्रयोक्ता के रूप में शास्त्र और लोक को अध्यात्म और साहित्य के साथ जोड़कर प्रस्तुत करने में सफल होते हैं। वे निश्चित तौर पर शास्त्र सम्मत विचारों को प्रस्तुत करके पण्डितों या विद्वानों में सम्मान पाते हैं और लोक-व्यवहार के तत्वों को लोक की भाषा अवधि और ब्रज में प्रस्तुत करके आम जनमानस में सम्मान पाते हैं। उत्तर भारत की सन्त परम्परा में उनका स्थान सबसे अधिक 'लोक में प्रिय' रहा है। उनकी भाषा सहजता, सरलता और उत्कल सम्प्रेषणीयता मानवमूल्यों को जोड़ती है। गोस्वामी जी के काव्य में संस्कृत, अवधी, ब्रज आदि भाषाओं का सुन्दर सामंजस्य मिलता है इस प्रकार विषय परिस्थिति में तुलसी की लोकपरक दृष्टि एवं समन्वयवादी विचारधारा ही मानव जाति को मानसिक एवं आत्मिक शान्ति प्रदान कर सकती है।

निसंदेह गोस्वामी तुलसीदास जी एक उच्च कोटि के समन्वयवादी कवि थे। उन्होंने जीवन और जगत के सभी क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करने का स्तुत्व प्रयत्न किया और अपने समन्वयवादी विचारों द्वारा तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमता, विद्वेष, वैमनस्य, कटुता आदि को दूर करके पारस्परिक स्नेह, सौहार्द, समता, सहानुभूति आदि का प्रचार किया। इसीलिए गोस्वामी जी एक उच्च कोटि के कवि, महान् लोकनायक, सफल समाज-सुधारक, भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ प्रचारक, समाज में उन्नत आदर्श के संस्थापक तथा समन्वयवाद के प्रतिष्ठापक सन्त कहलाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस और मानसेतर साहित्य में समन्वय को स्थापित करने का पूरा प्रयास करते हैं। उनके समन्वय का मुख्य उद्देश्य 'लोक-व्यवस्था' में 'समरसता' लाना था।

अतएव हम गोस्वामी तुलसीदास जी के उनके क्षेत्रों में व्याप्त समन्वय का विश्लेषण करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसके द्वारा उन्होंने तत्कालीन भारत में सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता स्थापित की। भक्ति और ज्ञान का समन्वय, गृहस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, लोक और शास्त्र का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय आदि 'रामचरितमानस' में आदि से अंत तक मिलता है। समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में भी झलकता है।

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. आचार्य रामचन्द्र शुल्क, हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ0-101

टेलीफोन/मोबाईल नं0-9572011701,  
ई-मेल-sumansharmakumari635@gmail.com  
पिन कोड के साथ पता मो0- गोपालगंज (टाइगर  
फिल्ड के समीप), पोस्ट ऑफिस+थाना-सासाराम,  
जिला-रोहतास (बिहार)-821115





संगम Impact Factor : 4.553

Website :  
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037  
**SANGAM**

विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal

Vol. 11, Issue 5

गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

पृष्ठ : 25-27

# IMPACTS OF WORKING CLASS IDEOLOGY ON NATIONAL MOVEMENTS

SARITAKUMARI

Research Scholar, History, J.P.U., Chapra

The review and assessment of the impacts of working class ideology on the Indian national movement and inalienable aspect of the Indian struggle for freedom but generally neglected by most of the historians writing on the history of modern India can only be made by placing them in a broader universe. Such an universe as is required to give this aspect of Indian nationalism its due place, has now broadened itself in the country and abroad both. The first effective move against British rule in India can be said to have been the movement against the Bung-bhung and deportation of Tilak for six years for an article written and published by him. Tilak deportation by the judicial court was a severe blow to civil and political rights of Indian, particularly on the right to expression and publication, a right which was being universally attained and enjoyed by the Britishers in England and the same was treated as an offence in India.

The working class, till that time without being organized either in its mass organization or in a political party representing its class interest, was politically conscious at least to an extent that it could understand how much injurious the judicial decision was for the common man in India. Consequently, the reaction of the working class against Tilak arrest could have been said to be a spontaneous expression or resentment of the working class but not as an action without ideology. The movement, since then, remained for a longer time, till the outbreak of the First World War, in suspended like position, as the main harbinger of the movement, the Indian National Congress had compromised with imperialism for the fulfilment of the narrow interest of the native capital. But the action of the working class, its enthusiastic struggle against imperialist rule created conditions under which the revolutionary forces found ground to pay a serious heed to search out an alternative strategy to wage a relentless fight against the British rule.

However, the unification of the forces, searching an alternative path, was not achieved in absence of a clearly defined political line and the revolutionary forces scattered-as a section of them departed

to other countries to organize armed struggle with the helps of countries hostile to England, while the other fection that remained inside the country leaned heavily to ultra revolutionary activities. But the very commonality among all of them was their lean to socialist ideology. Persons like *LalaHardyal*, *SingaraveluChettiyar*, *RamkrishnaPillai* etc. started to propagare Marxist ideology through their writings. All these impacts, exerted upon their Psyche was impacts of the Russain revolutionary of 1905 and the revolutionary world political situation created thence-forward. But the real beginning of impacts of working class ideology on national movement can be seen during the First World War period, specially after the successful commencement of the October revolution characterization of the First World War :

Even though, the Indian working class had no organized Political Party of its won at the time of the outbreak of the First World War yet the question to charcterise the war was placed on the ideological agenda. The question to decide the baseic character of the war was global question for the world proletariat, which was awakened against colonialism under the new changes, ushered due to transformation of world capitalism into a higher stage of development, into the stage of finance capitalism. In its theoretical connotation, global ideology of working class conceived the changes as a phenomenon that had commenced in capitalist world due to acquiring by world capitalism a new stage of development, that was the era of finance capital as that stage of capitalist development in which imperialism, after having acquired the highest stage of its development, beings to export capital to colonies and weaker nations instead of exporting manufactured goods. In India since the war of 1914-1918, imperialism had widely been regarded as having entered in a new stage that had very little commonality with the proceeding years. Under these new phenomenal changes the British policy was seemed to have been changed in the areas, political and economic both. As in the political field the old policy of absolutism was judged to have ended with the declaration of 1917 which promised new goals, of gradual realization of responsible government under the British Empire and the succeeding history, hence-forward, appeared to be of gradual evolution through successive constitutional reforms till 1947, when India was declared politically free by a negotiation under the Mount Batten plan.

In the economic field also the old policy of laissez-fair hostility of Indian industrial development is regarded as having given place to a new angle of vision, which is transforming India into a modernized state under the fostering care of the British rule and with the aid of British Capital. The perceptualized myths of such assertion will be clear when a closer analysis of the fact is done. Even in a cursory look on the development, since 1918, shows that such assertions are far from bearing out this picture of a progressive imperialism in the era of the declining day of imperialism. Decidedly, a change or transition occurred from the free trade industrial capital exploitation of India,

but the decisive point of starting of that process was not, in reality, constituted by the war of 1914, rather what appeared at first glance was a demarcation line between the old and the new. Commenting upon the supposition of such a transformation of India RajaniPlameDutt has written : The First World War, with its far-reaching effects, supervened on a process of change which was already developing in the first decade and a half of the twentieth century. That change is constituted by the transition from the free-trade industrial capitalist stage to finance-capital and its rule in India. The foundation of this transition had already been laid<sup>1</sup>.

In its ideological sphere, the proletariat, of which Indian working class was an unalienable part, conceived the characteristics of war as being predatory from both sides, for working class the characteristics of war were.

### Reference :-

1. R. PlameDutt, India Today, (Calcutta, ManishaGranthalaya, (P) Ltd., 1997), P. 127.
2. Home Deptt. Poll., Part B., Proceeding No. 92.1919.
3. SapurjiSakalatwala, The empire Labour, Statement submitted to the Joint Parliamentary Committee on Indian Reform, on behalf of WWL of India, WWL of India, 18th Feather Stone Building, High Holborn, London, W.C.
4. V.V. Balabushevich and A.M. Dayakov, A Contemporary History of India, Delhi, PPH, P. 41.
5. Report of the Committee appointed by the Government of India to investigation the Disturbances in Punjab, London, 1920, PP. 1-3.
6. P. Mohan, An Imaginary Rebellion and How It was Suppressed. An Account of the Punjab Disorders and the Working of Martial Law, (London, 1920), P. 43.
7. Home Deptt. Poll. Prog., F. No. 119/May, 1921. (Note of the Director Intelligence Bureau on the All India National Congress Session held at Nagpur)
8. Ioid.
9. Rajani Palme Dutt; op. cit. P. 341.
10. Home Deptt. Poll. Dep. F. No. 77/1921.



# आधुनिक भारत की राष्ट्रीय (नई) शिक्षा नीति 2020

ममता सुशील

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, श्री वैकटेश्वर विश्वविद्यालय गजरौला, उ० प्र०

मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है और शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए समय के साथ-साथ शिक्षा नीति में बदलाव करने की भी आवश्यकता है। शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए मूलभूत आवश्यकता है। जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की सम्भावनाएँ निहित होती हैं। नई शिक्षा नीति 2020 अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया है। इस शिक्षा नीति का लक्ष्य शिक्षा के प्रारूप में बदलाव करके भारत को विकसित करना तथा वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में स्थापित करना है।

## भारत की शिक्षा नीतियों का इतिहास :-

- भारत में पहली शिक्षा नीति का प्रारूप 1968 में डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में बनाया गया।
- भारत की दूसरी शिक्षा नीति का प्रारूप 1986 में कांग्रेस के कार्यकाल में किया गया। 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 1992 में कुछ बदलाव किये गए, जिसे POA (Program of action) कहा गया।
- भारत की तीसरी शिक्षा नीति 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में प्रस्तुत की गयी।

## पूर्व शिक्षा नीति 1986 में परिवर्तन लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- देश की शिक्षा गुणवत्ता को बढ़ाने, सुधार करने, नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए नई शिक्षा नीति की आवश्यकता पड़ी।
- भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक स्तर पर सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के वैश्विक मानकों को अपनाने के लिए पूर्ववर्ती शिक्षा नीति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता थी।
- बदलते परिवेश, शिक्षा के नये आयाम, नई चुनौतियाँ व नई परिस्थितियों में परिवर्तन की आवश्यकता पड़ी।
- भारत में बच्चों को नवीन तकनीकियों तथा रचनात्मकता के साथ-साथ शिक्षा के महत्व से अवगत कराने के लिए जरूरत पड़ी।

## राष्ट्रीय (नई) शिक्षा नीति 2020 में किए गए प्रमुख बदलाव :-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अर्न्तगत अभी तो केवल शिक्षा सुधारों के सुझावों को मंजूरी दी गई है। इन सुधारों का क्रियान्वयन होना बाकी है। शिक्षा समवर्ती सूची में शामिल है अतः इस पर केन्द्र व राज्य सरकारें दोनों कानून बना सकती हैं

और इस नीति में दिए गए सुझावों को भी राज्य सरकार व केन्द्र के सहयोग से ही लागू किया जाएगा। इस शिक्षा नीति में किए गए प्रमुख बदलाव निम्न प्रकार से हैं :-

### **स्कूली शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन :-**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत देश की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में बदलाव किये गए हैं। इसके अन्तर्गत 10+2 पैटर्न को 5+3+3+4 पैटर्न में बदल दिया गया है। इसके तहत बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा को चार स्टेज में परिवर्तित किया जाएगा। फाउंडेशन स्टेज, प्रिपरेटरी स्टेज, मिडिल स्टेज, और सैकेन्डरी स्टेज।

### **शिक्षा के लिए मातृभाषा का प्रयोग :-**

बच्चों के घर की बोली और स्कूल में पढ़ाई की भाषा एक होने से सीखने की गति बेहतर होती है। अतः कक्षा 5 तक की पढ़ाई मातृभाषा/स्थानीय भाषा और राष्ट्रीय भाषा में दी जायेगी। अंग्रेजी सिर्फ एक विषय के तौर पर पढ़ाई जाएगी। छात्रों को समझने में आसानी हो इसके लिए पाठ्यक्रम को भी क्षेत्रीय भाषा में बनाने का प्रयास किया जा रहा है। भारतीय प्राचीन भाषा को बचाने के लिए हर छात्र 6-8 वीं ग्रेड में एक प्राचीन भाषा पढ़ेगा।

### **भाषायी विविधता का संरक्षण :-**

भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास के एक 'भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान' (ITI) फारसी, पाली और प्राकृत भाषाओं के संरक्षण के लिए 'राष्ट्रीय संस्थान' स्थापित करने की सिफारिश की गई है। उच्च शिक्षण संस्थानों में भाषा विभाग को मजबूत बनाने और संस्थानों में अध्यापन के लिए मातृभाषा/स्थानीय भाषा को बढ़ावा दिये जाने का सुझाव दिया गया है।

### **पाठ्यक्रम और मूल्यांकन :-**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम रुपरेखा तैयार की जाएगी। कक्षा-6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इन्टरशिप की व्यवस्था भी की जाएगी। छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा-10 और कक्षा-12 की परीक्षाओं में बदलाव किये जाएंगे। छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारण निकाय के रूप में 'परख' (PARAKH) नामक 'राष्ट्रीय आंकलन केन्द्र' की स्थापना की जाएगी। छात्र की प्रगति रिपोर्ट कार्ड का 360 डिग्री मूल्यांकन स्वयं छात्र, शिक्षक व सहपाठियों द्वारा कराया जायेगा।

### **प्रारंभिक शिक्षा :-**

प्रारंभिक शिक्षा 3 वर्ष से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए तैयार की गई है और शैक्षिक पाठ्यक्रम को दो समूहों में विभाजित किया गया है।

आंगनबाड़ी/बालवाटिका/प्री-स्कूल 3 वर्ष से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE- Early Childhood Care and Education) की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

कक्षा 1 और 2 में 6 वर्ष से 8 वर्ष तक के बच्चों को प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा प्रदान की जायेगी।

नई शिक्षा नीति-2020 में शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित करने की माँग की गई है।

### **स्कूल लेवल पर वोकेशनल :-**

ग्रेड 6-8 के दौरान राज्यों और स्थानीय समुदायों द्वारा तय किए गए महत्वपूर्ण व्यवसायिक शिल्प जैसे बढईगिरी, बिजली का कार्य, धातु का कार्य, बागबानी, मिट्टी के बर्तन बनाना सीख पायेगा। स्थानीय व्यवसायिक शिक्षा के साथ 6-10 वीं की पढाई के दौरान कुछ समय के लिए 10 दिन का बैगलेस पीरियड किया जायेगा। व्यवसायिक शिक्षा स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शिक्षार्थियों को नौकरियों के लिए तैयार करेगी। इसके अन्तर्गत व्यवसायिक प्रशिक्षण, उद्योग प्रदर्शन और इंटरशिप शामिल होगी।

### **सम्पूर्ण उच्च शिक्षा के लिए एकल नियामक संस्था :-**

इस शिक्षा नीति में देशभर के उच्च शिक्षा संस्थाओं के लिए एकल नियामक संस्था (HECI- Higher Education Commission of India) की स्थापना की जाएगी। भारतीय उच्च शिक्षा आयोग चिकित्सा व कानूनी शिक्षा को छोड़कर सम्पूर्ण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करेगा। इसके चार स्वतन्त्र निकाय होंगे।

1. राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद (NHERC) - National Higher Education Regulatory Council.
2. सामान्य शिक्षा परिषद (GEC) - General Education Council.
3. राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (NAC) - National Accreditation Council.
4. उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद (HEGC) - Higher Education Grants Council.

IIT, IIM के समकक्ष वैश्विक मानकों के बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय MERU (Multidisciplinary Education & Research University) की स्थापना की जाएगी।

### **उच्च शिक्षा सम्बंधी प्रावधान :-**

नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत उच्च शिक्षण संस्थानों में 'सकल नामांकन अनुपात' (gross enrolment ratio) 26.3% (2018) से बढ़ाकर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है। छात्रों के प्राप्त अंको को क्रेडिट के रूप में डिजिटली सुरक्षित रखने के लिए ABC (Academic Bank of Credit) दिये जायेंगे ताकि विभिन्न संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके। इसके तहत एम. फिल. कोर्स को बन्द कर दिया जायेगा। पीएच.डी. करने के लिए 4 साल की स्नातक डिग्री अनिवार्य होगी। राष्ट्र में गुणवत्तापूर्ण शोध व अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन' (NRF) का गठन किया जायेगा।

### **छात्रों को वित्तीय सहायता :-**

SEDG (Social economically disadvantaged group) के अन्तर्गत अनुसूचित जाति और जनजातियों के शैक्षणिक विकास में असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया जायेगा। SC, ST, OBC के सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर स्कॉलरशिप पोर्टल का निर्माण किया जाएगा। निजी उच्च संस्थानों को छात्रों के लिए मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

## डिजिटल शिक्षा और प्रौद्योगिकी :-

स्कूली शिक्षा व उच्च शिक्षा दोनों को ई-शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजिटल शिक्षा के इंफ्रास्ट्रक्चर को तैयार करने पर बल दिया गया है। वर्तमान में फैली कोरोना वैश्विक महामारी को देखते हुए ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। योजना बनाने, सीखने, मूल्यांकन करने, प्रशासन को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विचारों का मुक्त आदान-प्रदान करने के लिए एक स्वायत्त निकाय 'राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) स्थापित किया जाएगा। शिक्षण अधिगम सम्बन्धी ई-कन्टेन्ट 'दीक्षा' प्लेटफार्म पर विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अपलोड किया जाएगा।

## शिक्षण व्यवस्था संबंधी सुधार :-

NCERT के परामर्श के आधार पर अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा NCFTE 2021 को विकसित किया जा रहा है और NCFTE द्वारा शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यवसायिक मानक (NPST) विकसित किया जा रहा है। 2030 तक, शिक्षण के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता चार वर्षीय एकीकृत बी. एड. डिग्री के साथ टेट उत्तीर्ण करना भी अनिवार्य होगा। शिक्षकों की नियुक्ति में इन्टरव्यू व डैमो को भी स्थान दिया जाएगा और उनकी पदोन्नति समय-समय पर किए गए कार्य प्रदर्शन के आंकलन के आधार पर की जायेगी।

## दिव्यांग बच्चों के लिए प्रावधान :-

दिव्यांग होने का तात्पर्य यह नहीं है कि आप किसी कार्य को कर नहीं सकते बल्कि आप उस कार्य को अलग और विशेष प्रकार से कर सकते हैं। भारत की नई शिक्षा नीति इस सोच पर बल देती है। दिव्यांग बच्चों के लिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है, जो उन्हें शिक्षा देने के साथ-साथ उन्हें किसी विशेष कौशल में निपुण भी बनाए ताकि उनका जीवनयापन सरल बन सके। NIOS भारतीय संकेत भाषा सिखाने व उसका उपयोग करके अन्य बुनियादी विषयों को सिखाने के लिए गुणवत्तापूर्ण मॉड्यूल विकसित करेगा। साथ ही दिव्यांग बच्चों की सुरक्षा पर भी ध्यान दिया जायेगा। प्रत्येक राज्य/जिले में कला संबंधी, कैरियर संबंधी व खेल संबंधी गतिविधियों के लिए विशेष बोर्डिंग स्कूल के रूप में 'बाल भवन' स्थापित किए जाएंगे।

नई शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य लोगों को शिक्षित करने के साथ-साथ उन्हें कुशल और आधुनिक तकनीकियों के लिए तैयार करना है। देश में समग्र शिक्षा में परिवर्तन व सुधारों की अपेक्षा की गई है। यह नीति सभी तक शैक्षिक पहुँच, क्षमता, गुणवत्ता, वहनीयता एवं जवाबदेही जैसे मार्गदर्शी उद्देश्यों पर आधारित है जो देश के युवाओं को वर्तमान व भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। इस नीति में न केवल वर्तमान युवा पीढ़ी को ध्यान में रखा गया है बल्कि आने वाली पीढ़ी की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं व चुनौतियों का भी ध्यान रखा गया है। नई नीति का विजन ऐसी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना है, जिसमें भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और मूल्यों को जगह मिले। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अगर नई नीति का क्रियान्वयन सही रूप से किया जाए तो यह भारतीय शिक्षा को नई ऊँचाइयों पर ले जा सकती है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. परिहार प्रेम, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ इन्टरनेशनल जनरल ऑफ एपलाइड साइंस 2020 Impact factor 5.2 ISSN : 2394-7500, PP. 109-111

2. मीना, शर्मा मोनिका 'नए भारत की नींव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' हंस शोध सुधा, Vol-1, ISSUE/3 (2021) PP 59-62
3. सिंह विरेन्द्र, देवी कुकन 'उच्च शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि' इन्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यू, जनवरी 2022  
E-ISSN: 2348 – 1269 P-ISSN 2349-5138, vol. 9, ISSUE – 1 PP. 17-20
4. [www.education.gov.in](http://www.education.gov.in) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
5. बी. वी. डी., एस. कुमार साई पवन, नगरानी कोमल, 'द स्टडी ऑफ न्यू एजुकेशनल पॉलिसी 2020' इन्टरनेशनल जनरल ऑफ ऑल रिसर्च एजुकेशन एंड साइंटिफिक मैथड, Impact factor : 7.429, ISSN:2455-6211, Vol. 8 ISSUE 10, Oct. 2020
6. मलिक निकिता, मलिक डॉ. प्रीति, सिंह डॉ. हरीश, एनपीई 2020: एन एफर्ट्स टूवर्ड्स ट्रांसफार्मिंग इंडिया एजुकेशन लैंडस्केप, परिचय महाराजा सूरजमल इन्स्टीट्यूट जनरल ऑफ एपलाईड साइंस।
7. [www.nvshq.org/article/new\\_education\\_policy\\_2022](http://www.nvshq.org/article/new_education_policy_2022).
8. [www.pmmodiyojanaye.in](http://www.pmmodiyojanaye.in), नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020, 3 March 2020.
9. [www.drishtiiias.com](http://www.drishtiiias.com), The vision ( राष्ट्रीय शिक्षा नीति: महत्व व चुनौतियाँ ), 31 जुलाई 2020
10. पुरी, नताशा, 'ए रिव्यू ऑफ नेशनल एजुकेशन पॉलिसी ऑफ गवरमेन्ट ऑफ इण्डिया' – द नीड फॉर डाटा एंड डाइनामिक्स इन 21st सेचुरी (30 Aug 2019)

मोबाईल – 9997598328

इमेल –mamtasushil19@gmail.com



## अर्वाचीनसंस्कृतकाव्येषु सीतायाः स्वाभिमानिता

करुणा गुप्ता

शोधछात्रा, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आधुनिक संस्कृतकाव्यसाहित्यस्य प्रारम्भिकी शतीरूपेण सप्तदशशताब्दीमेव प्रामाणिकी मन्यते। अस्मिन्युगे कविभिः महाकाव्यं खण्डकाव्यं सन्देशकाव्यं गीतिकाव्यं श्रृङ्गारिकाव्यं प्रकृतिकाव्यं वर्णनप्रधानकाव्यं नीतिकाव्यं चरितकाव्यं सुभाषितानि विरक्तिकाव्यं वा अन्यान्य काव्यसङ्ग्रहात् प्रस्तुतम्। एतानाम् काव्यानामुपजीव्याः ग्रन्थाः रामायण महाभारत पुराणमित्याद्यस्ति। आधुनिकसंस्कृतकाव्येषु रामकथाश्रित पद्य- गद्य- निबन्ध-नाटक- कथाप्रभृतिषु सर्वासु विधासु नवीनलेखनं प्रचुरमात्रायां दरीदृश्यते। एतस्मिन् काव्येषु प्रमुखदृश्यकाव्यानि सन्ति- सीताराघवम् जानकीपरिणयम् राघवाभ्युदयम् राघवानन्द सीतानन्द अद्भुतदर्पण सीताकल्याणवीथी मंजुलमंजीर पौलस्त्यवधम् अभिनवराघवम् मैथिलीय रघुवीरविजयम् कैकेयीविजयम् सीताभ्युदयम् भूमिकन्या सीताहरणम् मध्यमरामचरितम् सेतुबन्धमित्यादयः। प्रमुखश्रश्यकाव्यानि अपि अस्ति राघवीयम् लघुरघुकाव्यम् जानकीपरिणय जानकीजीवनम् उत्तरसीताचरितम् श्रीभार्गवराघवीयम् सीतारामीयम् वैदेहीचरितम् श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम् जानकीपरिणयमहाकाव्यम् जानकीचरितामृतमित्यादयः। एतेषु काव्येषु सीतारामयोः सर्वाङ्गसुन्दरं पल्लवनं कृतमस्ति। प्रमुखस्त्रीपात्ररूपे सीतायाः चरित्रचित्रणाङ्कितमस्ति।

सीता अलौकिकैः दिव्यगुणैर्मण्डिता धरायाः क्रोडेऽवतरणं प्राप्तवती। तस्या जन्म एव दिव्यं विद्यते। आधुनिकसंस्कृतकाव्येषु सीता पत्यनुगामिनी सदाचारिणी पवित्रधारिणी ऊर्जस्वला शीलसौन्दर्यनिधानभूता नारी तु अस्ति परञ्च तस्याः स्वाभिमानिता अपि यत्र- तत्र दृष्टिगोचर भवति। जानकीजीवनमहाकाव्यस्यायमत्यन्तं करुणामयः प्रसङ्गोऽस्ति यत्र सीता सुदीर्घवियोगस्य तापं सोढ्वा अतिशयेन हर्षोल्लासेन विस्मयेन भयेन लज्जया च सङ्कोचमनुभवन्ती रामं प्रति सरति किन्तु रामस्य कठोरवचनान्याकर्ण्य आहता भूत्वा स्तम्भिता सञ्जाता :-

अवेहि सीते ! प्रसमं समुद्धतां मया त्वमात्मानमचिन्त्यङ्गरे।

निहत्य लङ्काधिपतिं जगत्तत्रप्रकम्पकं राक्षसराजरावणम् ।।

रणान्तमासीत्तय मे समन्वितिर्न मेऽधुना किञ्चिदपि प्रयोजनम्।

प्रयाहि तत्सम्प्रति यत्रकुत्रचित् इहैव वा तिष्ठ मया न रोत्स्यसे ।।

सा विषमपरिस्थितिसु धैर्यधारिणी नार्योचितगरिमया ओतप्रोता नारी वर्तते। राक्षसनिवासकारणात् भयङ्करीभूता अरण्यभूमौ रक्षकाभ्यां पतिद्विवराभ्यां रहिता पर्णकुटीप्रिया स्वपुरतः राक्षसराजरावणस्योपस्थितिः पुनरपि ओजपूर्णं वक्तव्यं सीतायाः तेजस्विनः व्यक्तित्वस्य परिचायकं वर्तते। यथा :-

साम्प्रतं खलु ते छलं निखिलं प्रवेद्मि राघवो मम देवरश्च यथौपनीतौ।

आगतोऽसि निरन्तरायमवेत्य सर्व पाप ! पापमयी मिमां विनतिं प्रयोक्तम् ? ?

उत्तरसीताचरितमहाकाव्यानुसारं रामः सीतायाः परित्यागं न कुरुतेऽपितु सीता स्वयमेव लोककल्याणार्थं राजप्रासादं त्यक्तुं सङ्कल्पते । प्रत्युत सीता तु अपवादखिन्नं क्रुद्धायमानं श्रीरामं बोधयित्वा शान्तयति :-

आवयोर्हृदयदुग्धसिन्धुनोत्थापितोऽयमनुरागनीरदः ।

दुर्दिनेष्वपि चिराय सक्षमो विश्वतापहरणाय जायताम् ।

रावणं प्रति तथा यद्भासितं तत्र तस्या निर्भीकता स्वाभिमानिता च स्फुटं चकास्ति :

तृणं विधायान्तरतः शुचिस्मिता गिरां हि सीता परुषां परं हितां ।

जगाद लङ्काधिपतिं शनैस्ततो मवो निवर्तस्व पयोऽघदारुणात् ।

श्रीरामकीर्तिमहाकाव्येऽपि सीताचरित्रस्य मानिनीस्वरूपं सशक्तरूपेणाभिव्यक्तम् । रामेण सहायोध्यामप्रत्यावर्तने सती रामस्तस्यैः स्वमृत्यौः मिथ्या समाचारं विसृज्य तामुरीकर्तुं वाञ्छति किन्तु रामस्यास्यां कुत्सितरीत्या क्षुब्धायाः सीतायाः आक्रोशोऽत्यन्तस्वाभाविकः परिलक्ष्यते ।

न स्थातुमीशे क्षणमप्यहं द्राग् दृष्याश्रमं यामि च मे निवासम् ।

पुनर्न विश्वासमहं कदाचित् गिर्यस्य यास्यामि शठोत्तमस्य । ।

सीतायाः ते त्वधुना नारीजात्यास्स्वाभिमानं राजभवनादधिकतरं महत्त्वपूर्णं वर्तते :

नारीणां स्वाभिमानो नरपतिसदनात् कोटिशो मे वरेण्यः ।

सा कथमपि स्वनारीजात्यभिमानं परित्यज्य पुना रामेण सह भार्यात्वेन स्थातुं न वाञ्छति । सा कथयति यदुच्चैः पर्वताद् भ्रष्टस्य पर्वतखण्डस्य पुनस्तदस्थाने स्थापनमशक्यम् :-

प्रेयस्या वापि पत्न्या वरतरम भवद् राम ते राजकीर्तिः

पौरोग्यं तदर्थं मयि चरितवती त्वत्प्रजा व्यर्थमेव

स्त्रस्तं पत्नीपदं मे नृप तव हृदयाद् रुह्यतां किम्प्रकारकम्

तुंगाद्रे मण्डशैलं सकृदपि पतितं रुह्यते नैव भूयः । ।

भूमिकन्या नाटकस्य सीता पतिव्रता रामं प्रति सुकोमला समुल्लसितभावैः परिपूर्णा च स्त्री वर्तते । सा निजाग्निपरीक्षायाः कारणेन अकारणं परित्यागेन च खिन्नमना आक्रोशपूर्णा चास्ति । सा सर्वेषां समक्षं सा रामे आक्षेपं करोति । सा रामराज्यस्य प्रतिष्ठायै शपथं न करोति प्रत्युत सकलनारीणां प्रतिष्ठायै सा आत्मशुद्धि-शपथं त्वा अन्ते भूमिलीना भवति । एतदतिरिक्तम् सा वनवासजीवनं श्रेष्ठं मन्यते । प्रसङ्गेऽस्मिन्नदं ज्ञायते “सीता (उर्मिलायाः वस्त्रं निजहस्ते वावृष्वती) अहोभाग्यमेतत् यत् त्वं नासीः” तदानीं लङ्कायाम् । तेषामसङ्ख्यं वानराणां पूर्वशत्रूणां पुनर्मित्रभूतानां राक्षसानां च समक्षं सर्वेषां पुरुषाणां मध्ये आर्यपुत्रो मां यद्यदवोचत् तद्यदि त्वया श्रुतमासीत् ततस्ते हृदयं शतशः विदीर्णं स्यात् । अत एव अहं पावकप्रवेशं वरणीयं स्वीकृतवती ।

सीताचरितनामकमहाकाव्ये श्रीरामः सीतया परित्यक्तः दरीदृश्यते । सा सम्यक्तया वेत्ति यत् प्रजाहितदीक्षितस्य कस्यचिदपि नरेशस्य किमपि निजं वैयक्तिकं सुखं न भवत्यतः रामस्य प्रजाहिते प्रत्यवायभूतया मया (सीतया) स्वयमेव रामस्य परित्यागः करणीयः ।

किन्तु देव ! यदि सौख्यवारिभिः शीतमस्ति तव राज्यमक्षयन् ।

तेन मादृशविगितवृत्तिना जन्तुना किमिव तापकारिणा । ।

आर्य ! यावदवधि प्रजाहिते दीक्षितोऽसि सुखमात्मनस्त्यजेः ।

स्नेहदाहसहितो हि दीपको विश्वमुज्ज्वलयितुं समीक्षते ।।

आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदीमहोदयः सीतां राष्ट्रदेवीरूपे चित्रयन् महाकाव्यस्यास्य भूमिकायां स्वयमेवाल्लिखत् :  
“सीता हि भारतस्यास्य राष्ट्रदेवी” ।

**निष्कर्ष :-**

अतः स्पष्टमेवास्ति आधुनिकसंस्कृतकाव्येषु सीतायाः जीवनस्य लक्ष्यं श्रीरामः एवास्ति परञ्च तस्यारात्मनिर्भरता तस्याः स्वतन्त्रव्यक्तित्वस्य परिचायकोऽस्ति । तस्यां विषमपरिस्थितिषु धैर्यधारणस्य विवेकशक्तिश्चास्ति । तया स्वतपसा नारीजात्यां एकोज्ज्वलः आदर्श उपस्थापितः । सीतायां विविधानां स्पृहणीयानां गुणानां समन्वयोऽस्ति । तस्याः प्रभावोऽद्वितीयोऽमितश्च वर्तते । तस्याम् पावनव्यक्तित्वस्य समक्षं सर्वे श्रद्धावनताः सन्ति । पतिव्रता सीतायां धैर्य-तप वीरत्वमादर्श-धर्मपरायणता स्वाभिमानिता चेत्यादयः सर्वे गुणाः पूर्णविकसिताः सर्वथा अनुकरणीयाश्च वर्तन्ते ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**

1. जानकीजीवनम् महाकाव्यम् 15/25, 31 अभिराजराजेन्द्र मिश्रः वैजयन्त प्रकाशन, 8 बाघम्बरी मार्ग, इलाहाबाद, 1988
2. जानकीजीवनम् महाकाव्यम् 11/100
3. उत्तरसीताचरितम् महाकाव्यम् 3/18 रेवा प्रसाद द्विवेदी, कालिदास संस्थान ।
4. सुगमरामायणम् महाकाव्यम् 8/79
5. श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम् 24/36
6. सीतारामीयम् महाकाव्यम् श्लोक सं.-246 , डॉ. शंकर अवतारे प्रथम संस्करण 2004 प्रकाशक साहित्य सहकार 29/62 बी, गली नं.11, विश्वास नगर ।
7. सीतारामीयम् महाकाव्यम् श्लोक सं.- 186
8. आधुनिक संस्कृत महिला नाटककार मीरा द्विवेदी, पृ.-267, परिमल पब्लिकेशन्स 27/28 शक्तिनगर दिल्ली 110007, प्रथम संस्करण 1996
9. सीताचरितम् महाकाव्यम् 3/8-10, रेवा प्रसाद द्विवेदी, मनीषा प्रकाशन D-35/310 JANGAMBARI VARANASI- 22100 (INDIA)
10. सीताचरितम् महाकाव्यम् 10/564

7017878843

Karunagupta545@gmail.com



## पर्यावरण : कल, आज और कल

निधि माहेश्वरी

शोधार्थी, ( शिक्षा शास्त्र ), श्रीवैकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, 30 प्र०

### शोध सार :-

सभ्यता के विकास से वर्तमान युग तक मानव ने जो प्रगति की है उसमें पर्यावरण की प्रमुख भूमिका है और यह कहना गलत ना होगा कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास मानव पर्यावरण के अनुकूलन एवं सामजस्य का परिणाम है। अन्य जीवों के समान ही मानव भी पर्यावरण का ही एक अंग है परन्तु एक विभिन्नता जो सहज ही परिलक्षित होती है वह यह कि अन्य जीवों की तुलना में मानव में चारों ओर के पर्यावरण को प्रभावित करने की पर्याप्त क्षमता है। यही कारण है कि मानव का पर्यावरण के साथ सम्बन्धों को इतना महत्व दिया जाता है पर्यावरणीय संकट विशेषकर पर्यावरण प्रदूषण की समस्या एक ज्वलन्त विषय बन गयी है। अखबारों, पत्रिकायें, रेडियो, टेलीविजन तथा अन्य प्रचार माध्यमों में पर्यावरण सम्बन्धित समाचारों लेखों तथा वस्तुओं को प्रमुखता दी जाती है।

आज मानव ने स्वार्थ के लिए पर्यावरण को दूषित कर दिया। उसके आदेशानुसार ठण्डी हवा कमरे में करने से पहले ( हीटर के प्रयोग से ) गर्म रूप धारण करें एवं गर्म हवा ( कूलर के प्रयोग से ) ठण्डा रूप धारण करके ही कमरों में प्रवेश करें। उसने ही धाराओं की दशा बदल दी, शीतल पानी से सीन घर्षण से बिजली पैदा कर दी हवाओं के रूख को बदल दिया पेड़ वनस्पतियों को काटकर अपने उपभोग की सामग्री बना ली जिससे वातावरण दूषित हो गया।

### पर्यावरण का अर्थ :-

पर्यावरण एक व्यापक प्रत्यय है। वास्तव में पर्यावरण कोई एक तत्व नहीं अपितु अनेक तत्वों का समूह है। यह तत्व अथवा घटक एक प्राकृतिक सन्तुलन की स्थिति में रहता है अनेक जीव-जन्तु, वनस्पति आदि का विकास क्रम अनवरत चलता रहे किन्तु इन तत्वों में से एक भी तत्व में कमी आ जाती है अथवा उसकी प्राकृतिक क्रिया में अवरोध आ जाता है तो उसका बुरा प्रभाव दूसरे तत्वों पर पड़ता है। जिससे एक नयी विषय परिस्थिति का जन्म होता है। इससे ब्राह्माण्ड की सभी बाह्य शक्तियों प्रभाव एवं परिस्थितियां सम्मिलित है, जिनसे प्रत्येक जीवधारी के जीवन, व्यवहार अभिवृत्ति, विकास और परिपक्वता प्रभावित होती है।

यदि मनुष्य प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन न करे तो उसे किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न न हो किन्तु मनुष्य प्रकृति को अपनी इच्छा के अनुसार बदलने और उस पर नियन्त्रण करने का अहम् पालता है उसी छेड़छाड़ के फलस्वरूप प्रकृति में जो परिवर्तन आ जाते हैं वे मनुष्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं। तो प्रकृति भी बदला लेती है और मनुष्य के लिए हानिकारक परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती है। यदि मनुष्य प्रकृति का उपयोग जरूरत के अनुरूप अर्थात् संतुलित रूप में न करे, अपितु उसके शोषण और दुरुपयोग पर तुल जाये तो उसका भांति-भांति की विपत्तियों में फंसना निश्चित ही है अर्थात् अश्वयम्भवी है।

मानवता के प्राण के लिए संकीर्ण दृष्टि अपनाने से काम नहीं चलता बल्कि एक समस्या हल होती है तो वही दूसरी ओर चार समस्यायें पैदा हो जाती हैं।

वायुमण्डल, भूमि, नदियां, समुंद्र, वनस्पति, जीव-जन्तु और यहां तक कि सूक्ष्म से सूक्ष्म बैक्टीरियां और वायर सभी पर्यावरण के विभिन्न अवयव हैं जो सभी एक-दूसरे से जुड़े हैं, इसलिए इसमें छोटे-से छोटा परिवर्तन भी पूरे पर्यावरण पर प्रभाव डाल सकता है। पर्यावरण का अर्थ है, प्रकृति के सभी भौतिक रासायनिक व जैविक गुणों का समूह तथा उसके बीच अन्तर्सम्बन्ध जो समस्त प्राकृतिक क्रियाओं को चलाते हैं। पृथ्वी के चारों ओर जो भी जीवित तथा निर्जीव घटक हैं, ये सब आपस में मिलकर पर्यावरण सन्तुलन का ताना-बाना बुनते हैं तथा जीवन की सभी क्रियाओं को चलाने में मदद करते हैं। विगत कुछ दशकों में आबादी वृद्धि अनियमित औद्योगीकरण तथा नगरीकरण फैलती सघन कृषि, वनों का अंधाधुंध कटान तथा विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में पर्यावरण पहलुओं पर विशेष ध्यान न देने के कारण पर्यावरण सन्तुलन बिगड़ना शुरू हो गया है अर्थात् प्रारम्भ हो गया है। ऐसी परिस्थिति में यह अत्यन्त आवश्यक है कि समाज का प्रत्येक वर्ग पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर तथा अपने उत्तरदायित्वों को समझकर उनका निर्वाह करने के लिए तत्पर होना चाहिए अर्थात् तैयार रहना चाहिए।

पर्यावरण जागरूकता जीवन एवं जैविक तन्त्र के मध्य अन्तः क्रिया विकसित करती है। पर्यावरण अध्ययन के लिए जीव-विज्ञान भौतिकी, भूगोल, परिस्थितिकी कृषि विज्ञान विषयों का अध्ययन किया जाता है। ये सभी विषय पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में सहायक हैं। यह जागरूकता पर्यावरण एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं को समझने में व्यक्ति व समुदाय की सहायता करती है। विश्व के उच्च कोटी के शिक्षाविदों का मानना है कि पर्यावरण संकट के समाधान के लिए पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण अवबोध की आवश्यकता है।

### **मानव पर्यावरण सम्बन्ध :-**

मानव का अपने पर्यावरण से अटूट सम्बन्ध होता है। दोनों (मानव तथा पर्यावरण) परस्पर क्रिया करके एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मानव पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक है। पर्यावरण से परे उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। पर्यावरण के अनेक घटकों के कारण उसका निर्माण तथा अनेक कारकों से उसकी क्रियाएँ प्रभावित होती रहती हैं। मानव पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण उपभोक्ता है। मनुष्य की प्राकृतिक पर्यावरण के साथ दोतरफा भूमिका होती है अर्थात् मनुष्य एक ओर तो भौतिक पर्यावरण के जैविक संघटक का महत्वपूर्ण भाग तथा घटक है तो दूसरी ओर वह एक महत्वपूर्ण कारक भी है।

इस प्रकार मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण तंत्र को विभिन्न प्रकार से तथा विभिन्न रूपों में प्रभावित करता है जैसे :-

1. जैवीय या भौतिक मनुष्य के रूप में।
2. सामाजिक मनुष्य के रूप में।
3. आर्थिक मनुष्य के रूप में।
4. प्रौद्योगिकी मनुष्य के रूप में।

मनुष्य के सभी प्राकृतिक गुण यथा-जन्म वृद्धि, स्वास्थ्य, मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा उसी तरह प्रभावित तथा नियन्त्रित होते हैं परन्तु चूंकि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में शारीरिक एवं मानसिक स्तरों तथा प्रौद्योगिक स्तर पर भी सर्वाधिक विकसित प्राणी है। अतः वह प्राकृतिक पर्यावरण को बड़े स्तर पर परिवर्तित करके अपने अनुकूल बनाने में समर्थ भी है प्रारम्भ में आदि मानव की भौतिक पर्यावरण की कार्यात्मकता में भूमिका दो तरह की होती थी-पाता तथा दाता (receiver &

contributor) की अर्थात् मनुष्य भौतिक पर्यावरण से अन्य जीवों के समान संसाधन (फल, फूल, पशु-मांस) आदि प्राप्त करता था (पाता की भूमिका) तथा पर्यावरणीय संसाधनों में अपना योगदान भी करता था। (दाता-देने वाले की भूमिका) फलों के बीजों को अनजाने में बिखेर कर इस तरह मानव संस्कृति के विकास के प्रथम चरण में मनुष्य भौतिक पर्यावरण का अन्य कारकों के समान एक कारक मात्र था परन्तु जैसे-उसके समाज तथा संस्कृति के विकास के साथ उसकी बुद्धि, उसका कौशल तथा उसकी प्रौद्योगिकी विकसित होती गयी। पर्यावरण के साथ उसकी भूमिका तथा सम्बन्ध में भी उत्तरोत्तर परिवर्तन होता गया। प्रागैतिहासिक समय से वर्तमान समय तक मानव पर्यावरण के मध्य बदलते सम्बन्धों को निम्न चरणों में विभाजित किया जाता है।

1. आखेट एवं भोजन संग्रह काल।
2. पशुपालन एवं पशुचारण काल
3. पौधे-पालन एवं कृषिकाल।
4. विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगीकरण काल।

अतः हम कह सकते हैं कि मानव का पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

### पर्यावरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

प्राचीन काल में मनुष्य अपने चारों ओर की सुंदर प्रकृति को सहेजकर रखता था, मनुष्य का जीवन बहुत सीधा-साधा और सरल था। वह अपनी पूरी मेहनत और लगन से काम करता था और साथ ही अपने आस-पास के पेड़-पौधों की भी पूरी लगन से देखभाल करता था, उसके चारों ओर एक सुन्दर और स्वस्थ वातावरण रहता था। धीरे-धीरे उसके जीवन में परिवर्तन आया और अपने कठिन परिश्रम से मनुष्य ने अपने जीवन में बहुत प्रगति की और उसका रहन-सहन और बेहतर होने लगा।

धीरे-धीरे समय बदला और मनुष्य ने अपने जीवन में नये-नये आविष्कारों से न जाने कितनी उपलब्धियाँ हासिल कर ली। बड़ी-बड़ी गगन चुम्बी इमारतें खड़ी कर दी। बड़ी-बड़ी फैक्ट्री, मिल आदि बन गयी और इन सब उपलब्धियों के साथ जाने अनजाने वह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ भी करता गया, और हमारी प्रकृति को नुकसान पहुँचा, जिसका उसे अहसास तक नहीं है। आज हम देखते हैं कि पहले जिस प्रकार वन उपवन आदि होते थे, चारों ओर एक प्राकृतिक सौंदर्य दिखाई देता था, आज लोग उसी प्रति को नष्ट करते जा रहे हैं। हर जगह जहाँ पर भी घने वृक्ष आदि हैं उन्हें काट-काटकर वहाँ पर बड़ी-बड़ी इमारतें बनायी जा रही हैं घने जंगलो को काटकर फैक्ट्री, मिल आदि बन रही हैं। इसका हानिकारक प्रभाव मनुष्य के जीवन पर ही पड़ रहा है जिससे वो अनभिज्ञ है या फिर समझना नहीं चाहता। फैक्ट्री, आदि से जो धुआँ निकल रहा है और उसके खराब रासायनिक तत्व जो जलाशयों में डाल दिये जाते हैं उससे जल प्रदूषण फैलता जा रहा है और धुएँ से निकलने वाली विषैली गैस हवा को प्रदूषित कर वायु प्रदूषण फैला रही है इसी प्रकार यातायात के साधनों से जो प्रदूषण फैल रहा है वो एक चिंता का विषय बन चुका है। लोग श्वास सम्बन्धी और अन्य बीमारी के शिकार हो रहे हैं। यह स्थिति अत्यंत घातक है। आजकल ज्यादातर घरों में, आफिसों में, और कारों आदि में एयर कंडीशनर लगे हुये हैं और जिनका अधिक इस्तेमाल करने से बाहर का तापमान बहुत बढ़ता जा रहा है और समाचार-पत्रों में पढ़ते रहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है।

मनुष्य को इस विषय पर गंभीर रूप से विचार करना होगा कि प्रकृति से खिलवाड़ नहीं करना है और प्राकृतिक संतुलन को बनाये रखना है। हमें यह जागरूकता लानी होगी कि अपने आस-पास जहाँ संभव हो वृक्षारोपण करें, ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए। हमें अपने बच्चों को भी जागरूक करना चाहिए। हमें अपने बच्चों का जन्मदिन बहुत प्यार से मनाते हैं पार्टी करते हैं उनके दोस्तों को बुलाते हैं, हमारे बच्चे भी खुश हो जाते हैं, कितनी बार माँ-बाप बहुत पैसे भी खर्च करते हैं।

कभी-कभी कुछ अलग कर सकते हैं जैसे उनके जन्मदिन पर हम उनके हाथों से एक छोटा सा पौधा लगावा सकते हैं और अपनी प्रकृति की महत्वता को समझा सकते हैं। अपने हाथों से एक छोटा सा पौधा लगाकर बच्चे को बहुत खुशी तो होगी ही साथ ही वो उस पौधे की देखभाल भी बहुत प्यार से करेगा और धीरे-धीरे वह पेड़-पौधों की हमारे जीवन में क्या महत्वता है वो भी समझेगा। पर्यावरण के लिए हम सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है। पर्यावरण को बचाने के लिए हमको साफ-सफाई का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक हो सके अपने आस-पास सफाई रखनी चाहिए। कई लोग इस ओर जरा भी ध्यान नहीं देते, जहाँ मन आये कचरा फेंक देते हैं फिर चाहे वो सड़क हो या उनके घर के आस-पास की जगह। ये बिल्कुल गलत है। इस तरह गंदगी फैलने से अनेक बीमारियाँ फैलती हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। प्लास्टिक की थैली आदि से जो गंदगी और प्रदूषण फैल रहा है वो एक चिन्ता का विषय बन चुका है क्योंकि इससे हमारे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँच रहा है। इसलिए प्रत्येक नागरिक को सजग रखना बहुत जरूरी है।

जिस तरह से हमारे देश के प्रधानमंत्री जी श्री नरेन्द्र मोदी जी दिन-रात देश के विकास के लिए काम कर रहे हैं और स्वच्छता अभियान के द्वारा उन्होंने देश में जो क्रांति लायी है वो बहुत सराहनीय हैं, और उनके इस स्वच्छता अभियान में हर एक नागरिक का फर्ज बनता है कि वो पूरी तरह से उनके इस कार्य में सहयोग दे और उनकी इस सोच के साथ जुड़े। तभी यह संभव है कि हम एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में रह पायेंगे।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. Aggarwal, J.C. (2007) Recent Development and Trends in Education, Shipra Publication.
2. Attfield, R. (1983) The Ethics of Environment concern, Oxford: Basil Blackwell.
3. Benson, J. (2001) Environment Ethics: An Introduction with readings London : Rout Ledge
4. Bhosle, S. (2006) Environmental Education in school, A paper published in University News, March, 20-26, Vol.44, No.12, PP 114-124
5. Chauhan, C.P.S. (2006) Protection of Environment : A serous Educational Concern, a paper published in University News, Vol.44, No.-12
6. Mehra, V. and Kaur, J. (2010) Effect of Experimental Learning strategy on Enhancement of Environment awareness among primary school student. Vol. 47, No.-2, NCERT.
7. अल्बर्ट ए डीए बुलेटिन, जी. ही ओबर्ग ई. एंव नोवक, पी.-द न्यू, नवॉयर मेन्टल पैराग्रिमस स्केल, जनरल ऑफ एन वॉयर मेन्टल एजूकेशन।
8. Indi, momspresso.com प्रकाशित: जुलाई 29, 2018
9. आस्टन, ए. डब्ल्यू. (1993), स्टूडेन्टर इनवाल्व मेन्ट: एडवलप मेन्टल थ्योरी फॉर हायर, एजूकेशन।
10. Taylor, P. (1986) Respect for Nature: A theory of Environment Ethics, Princeton University Press.
11. Mary, R. (2005) Environmental awareness among high school students Edu. Tracks, 5(4), 10.

मोबाईल- 9927965565

ईमेल- nidhimaheshwari.101@rediffmail.com



**संगम** Impact Factor : 4.553

Website :  
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037  
**SANGAM**

विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal  
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Vol. 11, Issue 5  
पृष्ठ : 40-45

# IMPORTANCE OF YOGA DURING COVID-19

**Dr. Pragya**

Asstt. Professor, Ginni Devi Modi Institute of Education, Modinagar.

## **Abstract :-**

The COVID-19 pandemic has become a major cause of stress and anxiety worldwide. Due to the global lockdown, work, employment, businesses and the economic climate have been severely affected. It has generated stress among people from all sections of society, especially to workers who have been assigned to cater to healthcare service or those constrained to secure daily essential items. It is widely perceived that elderly or those affected by diabetes, hypertension and other cardiovascular diseases (CVD's) are prone to COVID-19. As per an ongoing survey, the initial data shows that the above-mentioned anxiety and stress cause insomnia, and has the considerable potential to weaken the immune system, the sole protection against the virus.

## **Introduction :-**

First detected in the Chinese city Wuhan in late 2019, COVID-19 belongs to the family of SARS and MERS-CoV. The number of infected people and consequent deaths have increased dramatically as a result of rapid viral infections across the globe. The elderly and those with underlying medical conditions are at an increased risk of developing COVID-19. Recent reports reveal that coronaviruses, such as SARS and MERS, are capable of modulating the host immune detection and creating underlying medical conditions and weaken immune systems making them more vulnerable to infections. Pharmacological and non-pharmacological immune-modulatory interventions, empowered to combat such pathogens, are being discovered through intensified experimentation and trials.

Since the declaration of the COVID-19 outbreak as a pandemic by the World Health Organization (WHO), the uncertainty, stress and pre-conceived opinions are being circulated in social media, further exacerbating the situation causing fear, anxiety and stress in communities and healthcare workers alike. In order to restrain the transmission of infection (and panic), several 'hotspot localities' have been locked down. These conditions further escalated the conditions of stress among residents



of the pandemic and containment regions, either due to new situations of working from home or loss of jobs. Healthcare workers with a medical and para-clinical background are also at high risk of

developing psychological stress, strain, depression and post-traumatic stress disorder and requires rehabilitative therapy to deal with the crisis.



### **Fundamental mechanism for COVID-19 infection :-**

COVID-19 is an associate of Coronaviridae (CoV). It is an enveloped virus with single stranded positive sense Ribo Nucleic Acid (RNA) as a genetic material. COVID-19 infection predominantly causes respiratory illness with asymptomatic or mildly symptomatic fever, cough, fatigue and diarrhea and severe acute respiratory distress syndrome (ARDS) along with fatal multi organ collapse in certain cases. COVID-19 incorporates spike protein which first binds itself to the Angiotensin Converting Enzyme 2 (ACE 2) receptor on the host cell surface. Once the binding has taken place, the S protein undergoes conformational change in order to facilitate fusion of viral envelope to cell membrane via the endosomal pathway. Next, the virus releases its RNA into the host cell, where viral proteins and genome RNA are subsequently assembled into virions in Endoplasmic Reticulum (ER) and Golgi. Finally, it is transported via vesicles and released from the cell transfecting others simultaneously.

### **Pre-existing health conditions increase the mortality rate of COVID-19 infection :-**

Coronaviruses have been observed as primary sources of respiratory and intestinal infections which embrace influenza, respiratory syncytial virus and pneumonias—a trigger to cardiovascular diseases (CVDs). CVD as linked to comorbidities raises the incidence and severity of infectious diseases like COVID-19. The data that has been provided here proves the aforementioned contention: A study, which reported the mortality due to COVID-19 and cardiac injury, includes 416 hospitalized patients of which 57 died. Among them, 10.6% of the patients had a coronary heart disease, 4.1% suffered from heart failure, 5.3% had cerebrovascular diseases and at least 20% had cardiac injury.

Another study from Wuhan, China reported 187 COVID-19 patients, out of which 43 died. 35% of the infected patients had cardiovascular diseases (hypertension, coronary heart disease, or cardiomyopathy) (13). Another Chinese study consisted of 44,672 confirmed cases, out of which 1023 (2.3%) died, and out of the total deaths, 10.5% had underlying cardiovascular diseases with COVID-19 symptoms. Diabetic patients have an equal risk of succumbing to COVID-19 infection, especially in countries like India with high prevalence of diabetic population which predisposes them to high risk of COVID-19 and its related complications, posing challenges for costs of healthcare.



Since a lavish life style further increases the risk of diseases like COVID-19, diabetes and hypertension, a cost effective non-pharmacological intervention such as Yoga can effectively reduce the risk of CVDs which consequently increases the risk of COVID-19 and related complications. Yoga can reduce the risk of cardiovascular diseases and COVID-19 by modulating weight lipid profile, blood pressure and stress.

### **Anxiety and stress due to the COVID-19 pandemic :-**

There is a universal anxiety due to the current COVID-19 pandemic. This permeates through all sections of society. Some underprivileged sections of the society, especially migrant workers, are more prone to the present circumstances, because of its profound impact on their 'daily wage' employment composition. On the other hand, there is a section of society which has witnessed increased cases of domestic violence due to the lockdown. Similarly, a shortage of protective gears to take care of COVID-19 patients generates a sense of fear among frontline workers which makes them susceptible to stress and anxiety. As workplaces have been closed and businesses have been affected due to a nationwide lockdown, the general anxiety and stress exerts a significant impact on physiological changes in individuals.

These physiological alterations make them more vulnerable to viral infections. It is widely accepted that stress, insomnia and anxiety can lead to a decrease in melatonin levels (a natural antioxidant) in the human body. Various studies have demonstrated that the melatonin level decreases with age. As a result, the elderly appear more prone to the COVID-19 infection. Thus, increased melatonin levels may partially compensate for the age-related risk of COVID-19 infection. Further, it is pertinent to point out that the current lockdown has also adversely affected the daily schedule and sleep cycle, thus affecting the circadian rhythm with a bearing on the immune system. This

**BHRAMARI PRANAYAMA**  
THE HUMMING BEE BREATH



yogicwayoflife.com

highlights the importance of self-regulatory mind-body interventions such as a structured daily schedule and Yoga practice.

### **Current therapies for prevention and treatment of the COVID-19 pandemic :-**

Currently, various vaccines and drugs are in the clinical trial phase for the prevention and treatment of COVID-19. For example, the drugs hydroxychloroquine (HCQ), remdesivir, rotonavir-lopinavir and convalescent plasma therapy are undergoing clinical trials. So far none of these drugs have been proclaimed as a final call for the

COVID-19 infection. Therefore, high quality multi-centric randomized trials with larger sample sizes are required to evaluate the efficacy of prospective drugs.

The aforementioned alternative therapies which can enhance the immunity and prevent the infection are imperative. An interdisciplinary task force under the supervision of Health Ministry AYUSH (Ministry of Ayurveda, Yoga and Naturopathy, Unani, Siddha and Homeopathy) and Indian Council of Medical Research is planning to conduct an HCQ versus Ashwagandha clinical trial to understand the comparative effectiveness of prophylaxis in healthcare workers. Since the lockdown eventually has to be relaxed and the workplaces have to be fully operational with social distancing norms, a good immune system based on cost effective non-pharmacological intervention seems to be an attractive choice to combat infection.

### **Yoga enhances the immune system and psychological development of human beings :-**

Yoga is widely accepted as a potential regimen in order to address emotional, physical and mental attributes. The example cited above has demonstrated that it relieves the mental stress and enhances immunity to a disease and can also be helpful in the current pandemic. Yoga maintains a balance in the autonomic nervous system through enhancing the parasympathetic activity and lowering the sympathetic activity else it can result in a state of depression and stress. The practice of Yoga also enhances GABA, the inhibitory neurotransmitter system in part via the stimulation of the vagus nerve. The stress hormones (such as cortisol) which compromise the immune system, can be balanced through Yoga practice because of its inclusion of slow breathing practice which improves the lung capacity and respiratory health for optimal performance and wellness. In addition, it has been shown that Yoga assists in improving the blood circulation in order to supply the oxygenated blood to multiple organs for smooth optimal function.

### **Yoga protocols to cope with the stressful situation :-**

Various online platforms, for example Yoga Scholars PGIMER on Facebook, are providing uninterrupted live sessions which focus on an interface between public and healthcare workers. These sessions comprise experts from Yoga, science and spiritual fields to promote the philosophy of Yoga practice and to provide demonstrations of Yoga practices, seemingly helpful in anxiety and stress management. These online platforms have been endorsed by the Ministry of AYUSH (@Ministry of AYUSH, Government of India).

In this context, it is important to note that Nagarathna et al. have recently proposed an age-specific Yoga protocol which postulates the therapeutic effect of Yoga in COVID-19 prevention and

management. They conducted a study using an eight pronged Yoga breathing procedure which consists of very simple neck muscle relaxation movements and Asana with breathing techniques, including adaptation to a chair. There was a significant improvement in the peak expiratory flow rate by >20% within 30 minutes of the practice, and the patients developed confidence and reduced panic and anxiety. Along with the above-mentioned Yoga practices, certain Asanas, if practiced under supervision, have also been shown to relieve stress. This includes Sasankasana (hare posture), Bhujangasana (cobra posture), Makrasana (crocodile posture) and Setubandhasana (bridge posture). Most of these constitute a part of the Common Yoga Protocol practiced on International Yoga Day. The practice of some of these protocols at workplaces/offices can enable risk reduction for COVID-19.

### **Conclusion :-**

The COVID-19 pandemic has resulted in a global shutdown with people becoming more vulnerable to new mental, emotional and physical challenges as they have been restricted to work from home. The exacerbation of existing comorbid conditions and further deterioration in mental health can be addressed by work from home-adapted Yoga techniques (e.g. 5?min Y break AYUSH Protocol) by utilization of online portals and novel Yoga modules. 45 minute Common Yoga Protocol practiced on International Day of Yoga is recommended for this. Maintaining health due the unavailability of drugs and vaccines to combat COVID-19 is crucial. Based on the current evidence, Yoga practice can reduce the risks of comorbid conditions and strengthen the immune system by relieving stress and anxiety or directly improving immune markers or both. Yoga can be employed at home and workplaces alike.

### **REFERENCES :-**

1. Vellingiri B, Jayaramayya K, Iyer M, Narayanasamy A, Govindasamy V, Giridharan B, Ganesan S, Venugopal A, Venkatesan D, Ganesan H, Rajagopalan K. COVID-19: A promising cure for the global panic. *Science of the Total Environment*. 2020;138277.
2. Guan WJ, Liang WH, Zhao Y, Liang HR, Chen ZS, Li YM, Liu XQ, Chen RC, Tang CL, Wang T, Ou CQ. Comorbidity and its impact on patients with Covid-19 in China: A Nationwide Analysis. *European Respiratory Journal*. 2020; 55(5).
3. Toniato E, Ross R, Kritas S. How to reduce the likelihood of coronavirus-19 (CoV-19 or SARS-CoV-2) infection and lung inflammation mediated by IL-1. 2020.
4. Sanders JM, Monogue ML, Jodlowski TZ, Cutrell JB. Pharmacologic treatments for coronavirus disease (COVID-19): A review. *Jama*. 2020; 323(18):1824–36.
5. Jayawardena R, Sooriyaarachchi P, Chourdakis M, Jeewandara C, Ranasinghe P. Enhancing immunity in viral infections, with special emphasis on COVID-19: A review. *Diabetes v Metabolic Syndrome: Clinical Research & yReviews*. 2020 Apr 16.

6. Baden LR, Rubin EJ. Covid-19—the search for effective therapy. 2020, Mass Medical Soc.
7. Zhang Y, Ma ZF. Impact of the COVID-19 pandemic on mental health and quality of life among local residents in Liaoning Province, China: A cross-sectional study. *International journal of Environmental Research and Public Health*. 2020; 17(7) : 2381.
8. Tan BY, Chew NW, Lee GK, Jing M, Goh Y, Yeo LL, Zhang K, Chin HK, Ahmad A, Khan FA, Shanmugam GN. Psychological impact of the COVID-19 pandemic on health care workers in Singapore. *Annals of Internal Medicine*. 2020.
9. Lai J, Ma S, Wang Y, Cai Z, Hu J, Wei N, Wu J, Du H, Chen T, Li R, Tan H . Factors associated with mental health outcomes among health care workers exposed to coronavirus disease 2019. *JAMA network open*. 2020; 3(3): e203976.
10. Choudhary A, Pathak A, Manickam P, Purohit M, Rajasekhar TD, Dhoble P, Sharma A, Suliya J, Apsingekar D, Patil V, Jaiswal A. Effect of Yoga versus Light Exercise to Improve Well-Being and Promote Healthy Aging among Older Adults in Central India: A Study Protocol for a Randomized Controlled Trial. *Geriatrics*. 2019; 4(4) : 64.



## हिंदी कथा साहित्य में नारी के विविध रूप

रश्मि विश्वकर्मा

शोधार्थी, हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

नारी मानव सृष्टि का अपरिहार्य अंग है। भारतीय नारी सृष्टि के आरंभ से ही अनंत गुणों से परिपूर्ण रही है। पृथ्वी के समान धैर्यता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र की सी गंभीरता, चंद्रमा की सी शीतलता, पर्वतों की सी उच्चता हमें नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होती है।

आज संपूर्ण विश्व में महिलाएं किसी ना किसी रूप में आसमानता अत्याचार एवं शोषण की शिकार हो रही हैं। हालांकि प्रजातंत्र के विकास के साथ-साथ महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों में अंतर अवश्य आया है। परंतु अनेकों प्रयासों के बावजूद भी महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में लाने में कहीं ना कहीं विफल रहे हैं। स्त्री विमर्श या स्त्री चिंतन आधुनिक संदर्भ में ऐसी ही परिस्थितियों की उपज है।

**नारी विषयक विवेकानंद जी का मत :-**

‘हमारी जाति के हास का प्रमुख कारण शक्ति के इन प्रति रूपों के प्रति आदर का अभाव है। महिलाएं ईश्वर द्वारा प्रदान की गई उन नायाब तोहफों में से एक है, जिसे उसने समाज एवं सभ्यता के विकास के लिए और विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए निरूपित किया है।’

**हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूप :-**

हिंदी कथा साहित्य में उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद्र के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों को 3 भागों में विभाजित किया गया है।

1. प्रेमचंद्र पूर्व युग
2. प्रेमचंद्र युग
3. प्रेमचंदोत्तर युग

**प्रेमचंद्र पूर्व उपन्यासों में नारी :-**

प्रेमचंद्र पूर्व युग में उपदेशात्मक, ऐतिहासिक, एयारी, और मनोरंजन से परिपूर्ण उपन्यासों की रचना अधिक हुई। इस युग में नारी अशिक्षित थी और घर की चार-दीवारों में कैद थी। ‘लज्जाराम मेहता’ के उपन्यास ‘आदर्श हिंदू’ की प्रियंवदा एक आदर्श भारतीय नारी है। वह घर की चार दीवारों में रहना पसंद करती हैं। पर्दा प्रथा का समर्थन करती है। वहां अपने पति ‘प्रियानाथ’ से कहती है :-

‘हम पर्दे में रहने वालियों को ऐसा सुख नहीं चाहिए। हम अपने घर के कामकाज में ही मग्न हैं। ऐसे खुले मुंह बाहर फिरना, अपना गौरा गौरा मुंह औरों को दिखलाते घूमना और पर पुरुषों में हंसकर बातचीत करना किस काम का ऐसे सुख से तो घर में झुर-झुर कर मर जाना अच्छा है।’

कहीं नारी अपनी कार्यकुशलता, चतुराई, त्याग, क्षमा के बल पर अपने परिवार में सुख शांति प्रदान करती हुई दिखाई

देती है तो कहीं अशिक्षा, अज्ञानता, असहिष्णुता और ईर्ष्या वृत्ति के कारण परिवार को नरक तुल्य बनाती हुई प्रतीत होती है।

‘ईश्वरी प्रसाद’ के उपन्यास ‘वामा शिक्षक’ में ‘मथुरा दास’ की पत्नी अपनी कार्यकुशलता और बुद्धिमत्ता द्वारा अपने घर और लड़कियों को सुधार लेती है जबकि ‘जमुनादास’ की पत्नी घर और बच्चों को बिगाड़ देती है। ‘स्वतंत्र रमा’ और ‘परतंत्र लक्ष्मी’ में ‘लक्ष्मी’ तथा बिगाड़े का सुधार उपन्यास में ‘सुखदेवी’ आदर्श नारी पात्र के रूप में चित्रित हुए हैं।

### प्रेमचंद्र युगीन उपन्यासों में नारी :-

उपन्यास सम्राट कहे जाने वाले साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद्र जी ने हिंदी कथा साहित्य को उपदेशात्मक और मनोरंजन के स्तर से उठाकर सामाजिक यथार्थ के धरातल पर लाकर खड़ा किया। प्रेमचंद्र जी के उपन्यासों में नारी के जीवन की विविध समस्याओं को उजागर किया गया है।

‘वरदान’ उपन्यास में ‘ब्रजरानी’ एक विधवा स्त्री है। ‘ब्रजरानी’ की दयनीय दशा का वर्णन प्रेमचंद्र जी ने कुछ इस प्रकार किया है :-

‘सौभाग्यवती स्त्री के लिए उसका पति संसार की सबसे बहुमूल्य वस्तु होती है। वह उसी के लिए जीती है और उसी के लिए मरती है। उसका हंसना-बोलना उसी को प्रसन्न करने के लिए और उसका बनाव श्रंगार उसी को लुभाने के लिए होता है। उसका सुहाग उसका जीवन है और सुहाग का उठ जाना उसके जीवन का अंत है। ‘कमलाचरण’ की अकाल मृत्यु ‘ब्रजरानी’ के लिए मृत्यु से कम ना थी। उसके जीवन की आशाएं और उमंगें सब मिट्टी में मिल गई।’

‘निर्मला’ उपन्यास में ‘निर्मला’ अनमेल विवाह की समस्या से जूझती हुई दिखाई गई है। तो वही ‘सेवासदन’ उपन्यास में वैश्य जीवन की त्रासदी को व्यक्त किया गया है। इसमें ‘सुमन’ के पतन का कारण स्वयं उसकी भोग लिप्सा बनती है। ‘गबन’ उपन्यास में ‘जालपा’ नामक स्त्री पात्र की आभूषण प्रियता को चित्रित किया गया है। ‘गोदान’ उपन्यास की ‘धनिया’ जीवन भर पति ‘होरी’ के साथ आर्थिक तंगी को झेलती है। चाहे ‘होरी’ से उसका मत मिलता हो या ना मिलता हो पर हर स्थिति में वह पति का साथ निभाती है। और भारतीय पत्नी का आदर्श रूप प्रस्तुत करती है।

### प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी :-

प्रेमचंदोत्तर युग में साहित्य पर मार्क्सवादी और प्रगतिवादी विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी सुशिक्षित और नवचेतना संपन्न रूप में ही चित्रित की गई है। इस युग के उपन्यासों में दो विचारधाराएं विकसित हुईं।

1. मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा
2. साम्यवादी विचारधारा

### मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा के उपन्यासों में नारी :-

इस विचारधारा के उपन्यासों में ‘इलाचंद्रजोशी जी’ का स्थान प्रमुख है। ‘जोशी’ जी का उपन्यास ‘मुक्तिपथ’, ‘पर्दे की रानी’, ‘सन्यासी’, ‘सुबह के भूले’ आदि उपन्यासों में कामवासना का दमन करने वाली नारियों का चित्रण किया गया है।

‘जैनेंद्र’ के उपन्यासों की नारी पात्र सतीत्व के पारंपरिक स्वरूप को अस्वीकार करके स्वच्छंद नारीत्व की नई व्याख्या प्रस्तुत करती है। ‘जैनेंद्र’ के उपन्यासों में कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत आदि में नारी के आंतरिक और बाह्य दशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है।

‘अज्ञेय’ की नारी दृष्टि भावना शरीर और फिर शरीर को तृप्त करके आत्मा के आनंद की ओर उन्मुख करती है। ‘अज्ञेय’ के उपन्यास ‘शेखर एक जीवनी’ और ‘नदी के द्वीप’ स्त्री पुरुष के स्वच्छंद संबंधों पर प्रकाश डालते हैं।

### साम्यवादी विचारधारा के उपन्यासों में नारी :-

प्रेमचंदोत्तर साम्यवादी विचारधारा के उपन्यासकारों में 'उपेंद्रनाथ अशक' का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके उपन्यास 'गिरती दीवारें', 'सितारों के खेल' आदि में नारी के चरित्र का अत्यंत व्यापक रूप प्रस्तुत किया गया है।

'यशपाल' के 'दादा कामरेड', 'दिव्या', 'अप्सरा का शाप' आदि उपन्यासों में स्त्री के आत्मपीड़न को प्रस्तुत किया गया है।

'नागार्जुन' के उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में असहाय ग्रामीण विधवा का चित्रण किया गया है।

### महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी :-

आधुनिक प्रगतिशील विचारधारा को लेकर अनेक महिला उपन्यासकारों ने नारी के विविध रूपों पर प्रकाश डाला है।

'चंद्रकांता' द्वारा रचित 'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की स्त्री पात्र 'कुनी' का जीवन आंतरिक अंतर्द्वंद्व में उलझा हुआ है।

'प्रभा खेतान' कृत 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नारी पात्र 'प्रिया' एक ऐसी नारी का प्रतीक है जो सदैव शोषण का शिकार होती रहती है। चाहे समाज की जर्जर मान्यता हो या पुरुष की आदिम भूख। परंतु 'प्रिया' टूटती नहीं है बल्कि शोषण करने वालों के लिए एक चुनौती बन जाती है और आत्मबल से नए पथ का करती है अनुशरण करती है।

'क्षमा शर्मा' का उपन्यास 'परछाई अन्नपूर्णा' कामकाजी स्त्रियों की समस्या को रेखांकित करता है।

### निष्कर्ष :-

हिंदी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण किया गया है। प्रेमचंद्र पूर्व युग में जहां नारी चार दीवारों में कैद थी। वही आज की नारी के रहन-सहन, आचार-विचार, जीवन-शैली में बदलाव आ गया है। आज की नारी पुरुष की सहचरी है। इस प्रकार हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के विविध स्वरूपों का चित्रण मिलता है।

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. हिंदी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप, डॉ. सुमन सिंह, विकास प्रकाशन, कानपुर।
2. लज्जाराम मेहता, भारत जीवन प्रेस, बनारस, 1922
3. प्रेमचंद्र, वरदान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1974
4. प्रेमचंद्र, निर्मला, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980
5. प्रेमचंद्र, गबन, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1983
6. प्रेमचंद्र, गोदान, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1983
7. गिरिधर प्रसाद शर्मा, हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. सं. 98
8. डॉ. योगेश सुरी, यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं, प्र. सं. 244
9. चंद्रकांता, अपने-अपने कोणार्क, प्र.सं. 11 एवं 21
10. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, प्र.सं. 140
11. क्षमा शर्मा, परछाई अन्नपूर्णा, प्र. सं. 3





# नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव एवं मलिन बस्तियों की समस्या

R. D. Nirmala, Research Scholar,

Dr. ANURADHA PAKALAPATI, ASSISTANT PROFESSOR,

Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies (VISTAS)

## भूमिका :-

भारत जैसी विशाल देश में भी मलिन बस्तियों की समस्याएँ होती है। हर एक मनुष्य के लिए तीन चीजोंकी आवश्यकताएँ होती है। खाना, कपड़ा और मकान, जीने के लिए खाना, पहनने के लिए कपड़ा और रहने के लिए मकान की आवश्यकता है। आजकल के मशीनी युग में हर कोई बहुत तेजी से चल रहे हैं। इस मशीनी युग में अब तक अनगिनत बदलाव हुए हैं। उद्योग के क्षेत्र में अब संगणक के बिना कोई कार्य नहीं चलता। इसी के कारण शरीर श्रम हुई और एक ही घंटों रहकर काम करने लगे। इसका असर स्वस्थ पर पड़ता। उद्योग के क्षेत्र में अब संगणक के बिना कोई कार्य नहीं चलता। सबको सेहत को बनाए रखना आवश्यक है। इस भागदौड़ में नब्बे प्रतिशत के लोगों की स्वास्थ्य बिगड़ जाते हैं।

“कोई हाथ भी नहीं बढ़ाएगा जो गले मिलोगे तपाक से  
यह नए मिजाज के शहर है, जरा फसलो से मिला करो।”

उपर्युक्त पंक्तियाँ बशीर बद्र के हैं। वे महानगर का अर्थ ऐसे बताते हैं कि मनुष्य को एक यंत्र की तरह नहीं, बल्कि मनुष्य तरह रहे।

महानगरों में रहने के स्थान स्वच्छ होना चाहिए मलिन बस्तियों में रहने वालों की स्थिति अति दयनीय है। लोग अपने जीवन को गुजारने के लिए काम की तलाश में दूसरे स्थान में आकर काम करता है। वह अपने काम का स्थान अपने रहने के स्थान के नजदीक में बसना चाहता है। वह काम के लिए अपना आवास स्थान ही बदलता है। वह अपने घर, उनकी कामकाजी स्थान के निकट में बसाना चाहते हैं। इसलिए अपना आवास स्थान बदल लेते हैं।

इसलिए वह अपना जन्म स्थान छोड़कर दूसरे जगह में आकर रहने लगता है। गाँव के लोगों की बेरोजगारी के कारण नगरों में आकर बसते हैं। यहाँ रहने के लिए स्थान का अभाव है। भारत के जनसंख्या में कृषि व्यवसाय के अलावा पच्चहतर प्रतिशत के लोग अपने व्यापार या रोजगार के लिए शहरों में आते हैं। शहरों में आकर बस्ते हैं। नगर प्रवास में पहले पुरुषों की जनसंख्या अधिक मात्रा में होती थी। लेकिन आजकल महिलाएँ भी नगरों में आकर काम करने लगे हैं।

## नगरीकरण का बढ़ता प्रभाव :-

आजकल शहरों में बहुत बड़ा संयुक्त परिवार अभी एकल परिवार में बदल गए हैं। रिश्तेदारी कम होते जा रहे हैं। नगरों में लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खानपान आदि में बहुत बदलाव आ गए हैं। यहाँ स्त्री-पुरुष सभी सामान है। ग्रामों की तुलना में नगरों की महिलाएँ के जीवन में अधिक बदलाव आ चुके हैं। सभी के सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक परिस्थितियों

में भी सुधार हुआ है। मलिन बस्तियाँ महानगरों का अंग है। नगरों में निम्न वर्ग के वर्गों को और बस्तियों में रहने वालों को सब तरह की सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती। वास्तव में बुनियादी जरूरतों की कमियाँ होती हैं। महानगरों की उन्नति के साथ-साथ मलिन बस्तियों की उन्नति भी अनिवार्य है होना भी चाहिए। आधुनिक महानगरों की सभ्यता, समाज की समस्याओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। मलिन बस्तियों की दुर्दशा उनकी आर्थिक, पारिवारिक सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ती जा रही है। गंदगी फैलने के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अधिक उत्पन्न होती हैं। कम आय, पारिवारिक परिस्थितियाँ, जीवन जीने का नीचा स्तर, समुदाय की समस्याएँ, उनके रहन-सहन, दूषित वातावरण के कारण बीमारियाँ आसानी से फैलकर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को जन्म देकर जिंदगी और मौत के बीच में खड़ा कर देती हैं। इस स्थिति में मलिन बस्तियों का विकास दयनीय स्थिति में है।

### **नगरीकरण की समस्याएँ :-**

#### **आर्थिक समस्या :**

आर्थिक समस्या के कारण भारत के ग्रामीण लोग अपने ग्रामीण क्षेत्रों को त्याग कर अपने जीवनयापन के लिए नगरों की ओर आकर्षित होकर चले आते हैं। गाँव से नगरों में आनेवाले ज्यादातर लोग गरीब होते हैं। अपने आप को सुरक्षित करने में वे असमर्थ हो जाते हैं। उनके पास सामाजिक सुरक्षा के लिए कोई साधन नहीं होते हैं। सामाजिक बीमा, सामाजिक सहायता, जन स्वास्थ्य संबंधी सुरक्षा का अभाव होता है।

#### **निर्वाह साधनों का अभाव :**

एक तरफ समाज के आर्थिक स्थिति सुधार होते जा रहा है। दूसरी तरफ वही घटते जा रही हैं। लोग गाँव छोड़कर नौकरी की तलाश में नगरों में आते हैं। गाँव के रोजगारी और शहर के रोजगारी में अंतर होता है। यहाँ के निवास स्थान की समस्या खड़ी होती है। अच्छा जीवन गुजारने के लिए पर्याप्त आर्थिक परिस्थिति ठीक ना होने के कारण गाँव से आए हुए लोग नगरों में मलिन बस्तियों में बस जाते हैं।

#### **अत्यधिक नगरीकरण :**

गाँव से अधिकांश लोग नगरों में आकर बसने लगे कि नगरों में रहने का स्थान की कमी होती जा रही है। नगर गाँव से आने वाले लोगों को अच्छी निवास स्थान देने में असमर्थ हो जाता है।

#### **पर्यावरण की समस्या :**

सरलता पूर्वक जीवनयापन करने में सहायता देने वाली प्रकृति की आवरणों में असंतुलन, कार्यालयों से निकलने वाले विषैले रसायनों के कारण होता है।

#### **समुदाय के एकीकरण की समस्या :**

नगरों के समाज में एकीकरण की समस्या हमेशा रहता है परिवार में हो या समाज में एकीकरण की अभाव रहता है।

#### **मलिन बस्तियाँ :**

गाँव से लोग काम की तलाश में शहरों में आते हैं। वे लोग घर का किराया भी देने में असमर्थ हैं। इसलिए उनको झीलों, नदी के किनारे डेरा बनाकर रहते हैं। शहरों में झीलों के किनारे जहाँ शहरों की पूरी गंदगी होती वहीं पर परिवार का गुजारा करते हैं।

### **महानगरों में बढ़ता मलिन बस्तियों की समस्याएँ :-**

नगरों में बढ़ती हुई आबादी के कारण आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। मलिन बस्तियों की सुविधाएँ बहुत कम होते

है। मलिन बस्तियाँ महानगरों का अंग होने के कारण मलिन बस्तियों की उन्नति महानगरों के उन्नति के साथ-साथ हो रहा है। मलिन बस्तियों की अनेक समस्याएँ होती हैं जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, स्वास्थ्य, व्यक्तिगत, शैक्षणिक औद्योगिक, प्रदूषण, परिवहन की समस्या, पेयजल की समस्या, शहरों के सड़कों पर गड्ढे की समस्या, बिजली, संचार, भीख, नशाबाजी, भ्रष्टाचार, बाल अपराध आदि। गंदे पानी को हटाने का प्रबंध, बच्चों के लिए खेल का मैदान, मनोरंजन की सुविधाएँ की प्राप्ति आदि।

नगरों में बढ़ती हुई आबादी के कारण आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। निम्न वर्गीय क्षेत्रों में गंदगी से दूषित सामान्य घरों में रहने वालों के लिए ही कम से कम पर्याप्त मात्रा में रकम की जरूरत होती है। मलिन बस्तियों में बुनियादी जरूरतें भी उपलब्ध नहीं होती। सफाई, स्वच्छता का अभाव होता, छोटे-छोटे झोपड़ियों में मजदूरी करने वाले रहते हैं। मलिन बस्तियों में रहने वाले अपने स्वच्छता और स्वास्थ्य पर लापरवाही दिखाते हैं।

### **रोजगार की समस्या :**

बढ़ती हुई जनसंख्या आर्थिक स्थिति, अशिक्षित मजदूर, उद्योगों में तकनीक और मशीनीकरण आदि बेरोजगारी के कारण है। ग्रामों से नगरों में आए गाँव वालों को नगरों में काम की कमी होने के कारण जो भी काम मिलते हैं वे उसे अपना कर करते हैं। कृषि व्यवसाय को छोड़कर गाँव के लोग नहरों में आ कर बसते हैं।

### **आवास की समस्या :**

जनसंख्या अधिक होने के कारण रहने के लिए स्थान उपलब्ध नै की है कृषि भूमियों पर मकान आवासीय अपार्टमेंट बना लिए। नगरों का विकास अति वेग से चलता है। इस तरह मलिन बस्तियों की स्थिति भी विकास की ओर बढ़ने की कोशिश करता है। लेकिन नगरों में किराये की रकम अधिक होता है। किराया बड़ी रकम होने के कारण सामान्य व्यक्ति घर नहीं ले सकते हैं। ग्राम उसे नगरों में आए गाँव वालों को नगरों में काम की कमी होने के कारण जो भी काम मिलते हैं वह अपना कर अपना जीवन चलाते हैं।

### **परिवहन की समस्या :**

सामान्य रूप से एक जगह से दूसरी जगह जाना एक समस्या है भारत के महानगरों के भीड़ भाड़ में ट्रैफिक में जाना परेशानी की बात है। हमारे भारत की सड़कों की बुरी हाल लोगों को सही समय पर नहीं पहुँचता। निम्न वर्ग के और मलिन बस्तियों के लोगों को और भी मुश्किल होता है। व्यापार, व्यवसाय, काम के लिए जाते समय खराब सड़कें, अधिक वाहनों के वृद्धि, धीमी गति से चलने वाले वाहनों की संख्या, आदि। व्यापार का विस्तार परिवहन पर निभर है।

### **प्रदूषण :**

महानगरों के कारखानों से निकलने वाले दूषित वायु दूषित जल अधिक मात्रा में गाड़ियों से निकलने वाले वायु वाहनों की संख्या अधिक होने के कारण ध्वनि संबंधी प्रदूषण उत्पन्न होती है। कारखानों से निकलने वाले दूषित जल नदी, नाले, झीलों में मिलकर पेयजल को दूषित करता है। जल प्रदूषण से सभी जीव जंतुओं को नष्ट पहुँचता है। कारखानों से निकलने वाले ध्वनी और वाहनों से निकलने वाले ध्वनि स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न करती है। प्रदूषण से पर्यावरण और आने वाले लोगों को बचाने हेतु नदी, झीलों, नाले की सुरक्षा अनिवार्य है।

### **जलापूर्ति और पेयजल की समस्या :**

मनुष्य को जल की आवश्यकता होती है। आदिकाल से अब तक मनुष्य नदी झीले आदि जलाशय के पास अपना निवास स्थान बनाया है। महानगरों की स्थापना जलाशयों के निकट की जाती रही है। ऐसे महानगरों में लोगों को पेयजल की समस्या होती है। पीने के पानी अब तक खरीद अब खरीदना पड़ता है क्योंकि इससे भूजल की सुरक्षा हो सकती है। महानगरों

में पेयजल कम मात्रा में मिलते हैं। अन्य काम करने के लिए कारा पानी ही मिलता है।

### स्वास्थ्य सम्बंधि समस्या :

नगरों की जनसंख्याओं में स्वास्थ्य सम्बंधि समस्या उत्पन्नत होती है। पर्यावरण और पानी स्वच्छ न होने से अनेक बीमारियाँ फैलती हैं।

### निष्कर्ष :-

मलिन बस्तियों में रहने वाले श्रमिकों को सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु उनको भवनों के निर्माण से उनको मुफ्त में घर बनकर दे, जल के नाली, पेयजल की व्यवस्था, दूषित जल से लोगों को भयंकर बीमारियों से बचाना, स्नान गृह, शौचालय की व्यवस्था, सीवेज और अपशिष्ट निपटान सुविधाओं, पाठशाला, बस्ती में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य, औषधालय और चिकित्सा आदि बुनियादी जरूरतें मिलनी चाहिए। बिजली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिए। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों को और उनके बच्चों को पढ़ाई में उपयोगी हो। महामारियों से बचाने की योजना, अस्वास्थ्य कर खाना, शारीरिक दुर्बलता, औपचारिक आवास का निर्माण, हमारे भारत सरकार में मलिन बस्तियों के सुधार हेतु कार्यक्रम किए हैं। नगरों में रोजगार की अवसरों की व्यवस्था, बस्तियों के लोगों के बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था, ग्रामों का विकास, प्राकृतिक प्रकाशों से बचने के लिए व्यवस्था, ग्रामों का विकास, प्राकृतिक प्रकाशों से बचने के लिए व्यवस्था आदि। नये नगरों का निर्माण, राष्ट्रीय आवास नीति, नगरीय रोजगार कार्यक्रम, स्वर्ण जयंती की नजरों में रोजगार कार्यक्रम, नगरों में मलिन बस्तियों की आवास की योजना, अपराधों को रोकने, आदि सरकारों के द्वारा मलिन बस्तियों को सुधार और विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाएँ।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गोयल, डॉ. सुनील - नगरीय समाजशास्त्र, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, 2000
2. भारत में गंदी बस्तीयां एवं विकास, श्रीवास्तव नीरज 1994, जीवन पब्लिकेशन, आगरा।
3. बारबरा एस मेन्सच. भारत में एक शहरी मलिन बस्ती में एक आजीविका हस्तक्षेप का प्रभाव : व्यावसायिक परामर्श और प्रशिक्षण बदल कर नजरिए और व्यवहार किशोरियों की 2004 जनसंख्या परिषद, अंक
4. गंदी बस्तियों की समस्याएं, दुबे संजय 2007, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. अप्पा : टी. कानपुर में आवास एवं स्लम क्लीयर्स सिविक मामला, फरवरी, 1974
6. प्रतियोगिता दर्पण, पत्रिका नवम्बर, 2013
7. लिन्थ्रेन, एच. सी. (1973) कक्षा अध्यापन में शिक्षा मनोविज्ञान, भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
8. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच. एस. शर्मा एवम प्रोफेसर आर. एन. मिश्रा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर 2013
9. आर. जोशी, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2013
10. आर. जोशी, नगरीय भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2013

Mail id: nirmalard03@gmail.com

Mobile: 8838272718



# गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस में चित्रित मानवीय आचार संहिता

नीता वर्मा

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल।

## शोध सार :-

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस आज के युग का ऐसा ग्रंथ है जो मानव को जीने की कला सिखाता है। जब हमें कोई सद्चरित्र एवं सदाचार संबंधी उपदेश देता है तो हम उसे पूर्ण रूप से जीवन में नहीं उतार पाते साथ ही वह उपदेश कुछ काल तक हमारे मस्तिष्क में विद्यमान रहता है किन्तु जब हम उन सभी उपदेशों को किसी चरित्र के माध्यम से जानते हैं तो वह हमारे मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ जाता है। तुलसीदास ने राम के रूप में हमारे सामने एक ऐसा ही चरित्र प्रस्तुत किया है जो संपूर्ण मानव समाज के लिए आदर्श, प्रेम, निःस्वार्थभाव, तप, बलिदान, सभी के प्रति समभाव को हमारे सम्मुख रखता है। तुलसीदास ने राम के माध्यम से लोक धर्म को सबसे ऊँचा बताया है। तुलसीदास ने बताया है कि राम जैसे अवतारी पुरुष को जब अपने जीवन में इतने संघर्ष करने पड़ते हैं उसके बाद भी वे मानवता का मार्ग नहीं छोड़ते अपितु अपने जीवन के हर पग पर संपूर्ण मानव समाज को एक संदेश देते चलते हैं। तुलसी बाबा ने मर्यादा पुरूषोत्तम राम को आदर्श बनाकर जन के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनका उद्देश्य जन मानस में सामाजिक जीवन मूल्यों की चेतना का संचार करना था।

**बीज शब्द** – लोकनायक तुलसीदास, रामचरितमानस, आचारसंहिता, मानव समाज, राष्ट्र धर्म, भाईचारा, आदर्श।

## मूल आलेख :-

श्रीरामचरितमानस मानव जीवन की आचार संहिता है। इस महाकाव्य से संपूर्ण मानव समाज को व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा मिलती है। यह केवल धर्मग्रंथ ही नहीं है अपितु मनुष्य के, समाज के प्रति कर्तव्यों की अनुशंसा करता है। इसमें जिस धर्म की बात की गई है वह मानव धर्म है जो सांप्रदायिक भावनाओं से उपर उठकर एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समानता को प्रतिष्ठित करता है। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस हमारी सांस्कृतिक धरोहर है यह हमारे जीवन के विविध आयामों पर प्रभाव डालती है। लोकनायक तुलसीदास ने रामकथा को जन-जन तक पहुँचाने का काम किया है। तुलसीदास ने जिस राम का वर्णन किया है वे राम मानवीय मूल्यों के संरक्षक एवं पूर्ण मानव समाज के लिए आदर्श हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास ने रामराज्य का जैसा वर्णन किया है वह इस प्रकार है कि रामराज्य में न तो कोई किसी का बैरी है न ही विषमता है।

तुलसीदास ने भक्ति को किसी भी प्रकार की जातिगत विषमता से दूर रखा है, चाहे वह शबरी के बेर हों या केवट की नाव में बैठकर नदी पार करना। तुलसीदास के नायक राम धीरोदात्त नायक हैं।

रामराज्य में सामाजिक सौहार्द एवं भाईचारा पग-पग पर परिलक्षित होता है। तुलसीदास की लेखनी रामचरितमानस के माध्यम से मानवीय मूल्यों की अत्यंत गरिमामय स्थापना करती है। तुलसीदास की लेखनी का हर शब्द समाज के उद्धारक के

रूप में स्थापित है। रामचरितमानस जन-जन के जीवन में प्रकाश की किरण बनकर जीवन को ज्योतिर्मय करता है। राम का संपूर्ण जीवन एक ऐसी संहिता है जो मानव के जीवन को एक दिशा प्रदान करती है। मानव जीवन के मूल्यों का संरक्षण और मानवतावाद का सजीव उदाहरण तुलसीदास ने रामचरितमानस में दिया है। आज राम प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। भ्रातृ प्रेम का इस से बड़ा उदाहरण और कहाँ मिलेगा जब कैकयी ने अपने पुत्र भरत के लिए राज्य माँगा था तब राम ने एक क्षण की देर किए बिना राज्य त्याग दिया था। जहाँ आज के समय में लोग सत्ता में बने रहने के लिए कितने षड़यंत्र रचते हैं वहीं तुलसीबाबा ने राम के द्वारा सिंहासन का त्याग दर्शा कर अपने पिता के द्वारा कैकयी माता को दिए वचनो की मर्यादा हेतु सहर्ष चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार कर लिया। गोस्वामी तुलसीदास ने एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श मित्र तथा आदर्श राजा का उदाहरण राम के रूप में प्रस्तुत किया है। राम हर संबंध में एक आदर्श के रूप में जन-जन के सामने आए हैं।

संपूर्ण रामचरितमानस में तुलसीदास ने मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है तुलसीदास के मुख से राम कहलवाते हैं कि - “**जो अनीति कछु भाखौं तो मोहि बरजो भय बिसराई।**”<sup>(1)</sup>

अर्थात् राम कहते हैं कि यदि तुम्हें कहीं अनीति दिखाई देती है तो निर्भय होकर मुझसे कहो। यह है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। जहाँ स्वत्व, अधिकार प्रजा के पास है।

जो समय या युग तुलसीदास का था यदि हम उस समय की बात करें तो जनता में मुगलों का आतंक फैला हुआ था। जनता हर तरफ से शोषित, दमित और त्रस्त थी। भारतीय समाज, धार्मिक आडंबरों और रूढ़ियों में फँसता चला जा रहा था। उस समय गोस्वामी तुलसीदास ने राम जैसे मर्यादा पुरूषोत्तम चरित्र को रचकर समाज की चेतना को जगाया। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से जिस समाज की कल्पना की थी वह स्वार्थ का त्याग और परहित के लिए अपने सर्वस्व बलिदान करना सिखाने वाला था। तुलसीदास ने दूसरों का हित करने के समान कोई और धर्म नहीं हैं ऐसा माना है। उनकी निम्न पंक्तियाँ यह दर्शाती हैं - “**परहित सरिस धरम नही भाई।**”<sup>(2)</sup>

उन्होंने राम को राजा एवं प्रजा दोनो के लिए आदर्श रूपमें रखा था। गोस्वामी तुलसीदास सामाजिक हित को केन्द्र में रखकर एक आदर्श और स्वस्थ समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसमें लोग सारी विषमताओं को त्याग कर आपसी भाईचारा रखें।

गोस्वामी जी ने रामचरितमानस में समाज से बहिष्कृत लोगों को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है तथा राम के माध्यम से उनके प्रति भ्रातृप्रेम तथा समभाव का व्यवहार दर्शाया है। निम्न वर्गों से आए इन लोगों को जहाँ समाज में हमेशा हीनभाव से देखा गया, तुलसी के राम ने उन्हें सर्वदा बंधु तथा सखा कहकर संबोधित किया। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में निषादराज को विदा करते समय की चौपाई देखिए -

**तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता।।**

**बचन सुनत उपजा सुख भारी। परेउ चरन भरि लोचन बारी।।**<sup>(3)</sup>

तुलसीदास ने मानवता को सर्वोपरि रखा है इस कारण राम के वनवास के समय राम ने राजकुमार होकर भी कभी अपने राजत्व का अभिमान तथा अपनी कुलीनता को बाधा नहीं बनने दिया। अपितु अपने सौम्य तथा करुण स्वभाव के बल पर सभी के हृदय में अपनी अमिट छवि का निर्माण किया। रावण जैसे योद्धा को परास्त करने के लिए भी राम ने साधारण से आदिवासियों की सहायता ली थी। राम ने उस वर्ग को जागृत करने का काम किया था जो सदियों से कष्ट, पीड़ा तथा शोषण का शिकार थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने एक दूरदृष्टा के रूप में रामचरितमानस की रचना की है जो आज के युग में लोगों को जीवन जीने के उपदेश, भलाई, निस्वार्थ भाव से सेवा तथा राष्ट्र ही सर्वोपरि है, की शिक्षा प्रदान करता है। गोस्वामी

तुलसीदास जी ने राम को एक राजा के रूप में नहीं बल्कि एक साधारण मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसीबाबा का मानना था कि राजा को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से उपर उठकर प्रजा हित तथा राष्ट्र को सर्वोपरि मानना चाहिए।

**जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।<sup>(4)</sup>**

राम अयोध्या की प्रजा के इतने प्रिय हैं कि वनवास गमन पर पूरी प्रजा शोक मग्न हो जाती है। एवं स्वयं को अनाथ समझने लगती है।

**चलत रामु लखि अवध अनाथा। विकल लोग सब लागे साथ।।**

**कृपासिंधु बहु बिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरी आवहिं।।<sup>(5)</sup>**

तुलसी के राम प्रजा के प्रति जितना आत्मीय प्रेम रखते थे निश्चित ही वह सभी प्रकार के भेदभावों को दूर करने में सक्षम था। हीन तथा अछूत समझे जाने वाले व्यक्तियों से उच्चवर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्ति के गले मिलाने का काम केवल तुलसी बाबा ही कर सकते थे। केवट के द्वारा यह कहना कि राम से पहले मैं आपके चरण पखारूंगा उस के बाद ही नाव लगाऊंगा तथा निषादराज के द्वारा स्वागत करने पर उस से कुशलक्षेम पूछना, शबरी के द्वारा दिए गए फलों का आहार करना। जब राम लक्ष्मण मतंग मुनि के आश्रम पहुंचते हैं तथा उनकी भेंट शबरी से होती है तब दोनो हाथ जोड़कर वह कहती है :-

**केहि विधि अस्तुति करौ तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी।।<sup>(6)</sup>**

तब राम उत्तर देते हैं :-

**कह रघुपति सुनु भामिनी बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।**

**जाति पाति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।<sup>(7)</sup>**

**भगति हीन नर सोहड़ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।<sup>(8)</sup>**

तुलसीदास का भक्तिपरक दृष्टिकोण समन्वयवादी था। अपने युगधर्म की पहचान कर तुलसी बाबा ने रामभक्ति की धारा को जन मानस के बीच प्रवाहित किया तथा सगुण भक्ति को महत्व देते हुए रामभक्ति का आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने ऐसा अनुभव किया कि विश्व को ऐसे ईश्वर की आवश्यकता है जो दीनदुखियों की पुकार सुन सके। जन को यह विश्वास हो कि उनका ईश्वर उनके ही समान है तथा क्षण-क्षण पर उनकी पुकार सुन उनके दुख सुनकर उनके दुखों का समाधान करने पहुँचे, तथा अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना कर सके। गोस्वामी जी ने राम के प्रति प्रेम रखने को ही राम की भक्ति कहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि जब हम किसी से सच्चे हृदय से प्रेम करते हैं तो वह स्वयं ही भक्ति रूप में स्थापित हो जाता है। तुलसीदास जी ने सच्चे प्रेम को ही भक्ति का नाम दिया है।

उस समय समाज में स्त्रियों की स्थिति भी अत्यंत दयनीय थी। “तुलसीदास मर्यादा वादी थे। समाज में हो रहे मानवीय मूल्यों के के विघटन और नारी के प्रति हो रहे शोषण को देखकर ही तुलसी ने सामाजिक सांस्कृतिक विकास के लिए उपदेश दिए। एक तरफ पति-सेवा का उपदेश, दूसरी तरफ ‘कत विधि सृजी नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।।’ अर्थात् पराधीन नारी के लिए स्वप्न में भी सुख न होने पर क्षोभ यह कला तुलसीदास को छोड़कर और कहीं नहीं है।”<sup>(9)</sup>

अर्थात् तुलसीदास उस समय नारी की दयनीय स्थिति को लेकर भी उतने ही सजग थे जितने वे अपने राष्ट्र के प्रति। जिस प्रकार वर्गभेद, वर्णभेद तथा उच्च वर्गों द्वारा साधारण जनता का शोषण किया जा रहा था उसी प्रकार उस युग में स्त्री भी शोषित तथा दमित थी। तुलसी स्त्रियों के विरोधी नहीं बल्कि सीता के रूप में उन्होंने एक सशक्त तथा पूज्य नारी की कल्पना की है। जो मातृत्व से परिपूर्ण तो है ही किन्तु वनवास गमन के समय राम के पग से पग मिलाकर आगे बढ़ती है। कौशल्या के रूप में एक ममतामयी माता को प्रस्तुत किया तो वहीं कैकयी के रूप में उस रानी को जो युद्ध के समय अपने पति के साथ

कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध कौशल दिखाती है।

नारी के महत्व का एक और उदाहरण हम इस प्रकार देख सकते हैं जब राम वनवास जाने की सूचना कौशल्या को देते हैं तो कौशल्या द्रवित होकर कहती है :-

**जौं केवल पितु आयसु ताता । तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ।।**

**जौं पितु मातु कहेउ बन जाना । तौ कानन सत अवध समाना ।।<sup>(10)</sup>**

अर्थात् यदि केवल पिता ने ही वन जाने का आदेश दिया है तो माता का स्थान पिता से उँचा है यह मानकर तुम वन मत जाओ और यदि माता और पिता दोनों ने कहा है तो वह वन तुम्हारे लिए सैंकड़ों अवध के समान है।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस का अनुशीलन करने पर यह ज्ञात होता है कि यह महाकाव्य शाश्वत जीवन मूल्यों का आकाश दीप है तथा मानस में इसका क्षेत्र सीमित नहीं है अपितु उसमें वैश्विक दृष्टि है। रामचरितमानस एक युगवाणी है, जो आधुनिक युग में भी जीवन को संयम एवं निश्छलता से जीने का मार्ग दिखाती है।

**संदर्भ ग्रंथ एवं आधार ग्रंथ :-**

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस (गीता प्रेस गोरखपुर)

टीकाकार-हनुमानप्रसादपोद्दार

1. उत्तर काण्ड
2. उत्तरकाण्ड
3. उत्तरकाण्ड
4. अयोध्या काण्ड
5. अयोध्या काण्ड
6. अरण्य काण्ड
7. अरण्य काण्ड
8. अरण्य काण्ड
9. कमलेश वाधवा-तुलसी के साहित्य में सामाजिक जीवन मूल्य, अपनी माटी अंक 27 तुलसीदास विशेषांक
10. अयोध्या काण्ड

मो.-8989919400

ईमेल- neetaverma12385@gmail.com





## डॉ. अशोक चक्रधर के काव्य में राष्ट्रीय स्वाधीनता

शेजवळ अरविंद, शोधार्थी  
डॉ. अशोक जाधव, शोध मार्गदर्शक  
पिपल्स कॉलेज, नांदेड।

किसी भी देश की राष्ट्रीय काव्य में समग्र राष्ट्र की चेतना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीय-भावना, राष्ट्र की प्रगति का मंत्र है। राष्ट्रीय भावना का सृजनात्मक पक्ष मानवतावादी होता है। वह न केवल अपने देश को स्वतंत्र देखना चाहता है अपितु समस्त मानवता को स्वाधीन एवं सुखी देखने की कामना रखता है।

मानव समाज जब किसी अन्य भूमियों पर विकसित राजनीतिक शक्तियों के अधीन हो जाता है तो वह अपनी जन्मभूमि से सम्बन्ध का स्मरण करता है। इसी बिंदू पर राष्ट्रवाद की कविता जन्म लेती है। भारत के इतिहास में स्वाधीनता आंदोलन तब तक होता हुआ दिखाई देता है जब तक विदेशी शक्तियां भारत में अपनी सत्ता की स्थापना करती हैं।

संसार की प्रत्येक भाषा के काव्य में हर युग में राष्ट्रीय भावना का समावेश होता है।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र हिंदी भाषा के पहले कवि माने जाते हैं, जो समाज को जागृत करने के लिए अपनी लेखनी उठाते हैं। उनका रचना काल इ.स. 1867 से 1885 रहा। इस काल में 1857 में क्रांति की नयी जमीन को खोज निकाला। इस क्रांति महायज्ञ में प्रथम आहुति देने वाले बलिया जनपद के हलद्वीप गांव के ब्राह्मण कुलोत्पन्न पंडित, मंगल पाण्डेय ने 8 अप्रैल 1857 को अपनी शहादत से स्वतंत्रता का प्रथम दीप जलाया। पर 1857 की असफल सशस्त्र क्रांति की व्यथा, भारतीयों के मन पर काली परछाई की तरह व्याप्त थी। इस काल में भारत अपनी दुरावस्था एवं वास्तविकता को पहचानने का प्रयास कर रहा था। इसी कारण भारतेन्दु बाबू के नाटक भारत दुर्दशा का आरम्भ ही इन पंक्तियों से होता है।

रोअहु सब मिलिके आवहु भारत भाई। हा हा।

भारत दुर्दशा न देखी जाई।।

अँग्रेज सुख आज सजे सब भारी। पै धन विदेश

चली जान रहे अति खारी।।

इसी प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी कवियों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के समय देश में मची उथल पुथल को अपनी कविता का विषय बनाकर साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वहन किया। वे स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए एक और तो राष्ट्रीय भावों को काव्य के विषय के रूप में प्रतिष्ठित कर रहे थे, वही दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को उसके चरम पर पहुँचा रहे थे। स्पष्ट है कि वे न केवल तत्कालीन घटनाओं के प्रति सजग थे अपितु भारत के गौरवमयी इतिहास के साथ भी कदम मिलाकर चल रहे थे।

स्वातंत्र्य-लक्ष की प्राप्ति के पश्चात भी राष्ट्रवादी कविता की धारा कुठित नहीं हो गयी। वह उसके बाद भी राष्ट्रीय

जागरण की अलख जगाती रही। राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी ने भारतीय युवाओं को स्वातंत्र्य-ध्वज सुरक्षित रखने का आवाहन करते हुए लिखा :-

शुभारंभ जो किया देश में नव चेतना आयी है।  
मुरदा प्राणो मे फिर से, छायी नवीन तरुणाई है।  
स्वातंत्र्य की ध्वजा न झुके, यही ध्रुव ध्यान करो।  
बढो, देश के युवक-युवतियों, आज पुण्य प्रस्थान करो।

( भारत का इतिहास, अ. मोहनलाल गुप्ता, लोकार्पण)

डॉ. अशोक चक्रधर कविता की वाचिक परंपरा के अग्रणी कवि हैं जो काव्य व्यंग के क्षेत्र में विशिष्ट नाम रखते हैं। इसके साथ वह गीतकार, निर्देशक और अभिनेता भी हैं। वर्ष 1914 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। अशोक चक्रधर काव्य एवं व्यंग्य के पुरोधा कवि तो हैं ही, साथ ही विवेकी व्यक्ति हैं। धीरज न खोने वाले कवि हैं। तो आर पार देखने की क्षमता भी रखते हैं। वे मरते हुए व्यक्ति को भी हास्य की कविता सुना दे तो किसी अंग-उपांग में प्राण बचे हो तो लौट आए। वे जीवन के कवि हैं हास-परिहास के कवि हैं। वे वीर के कवि हैं, ह्युमर के कवि हैं, वे प्रेरणा के कवि हैं, उद्भवना और संभावना के कवि हैं जीवन के कवि हैं उन्होंने देश में भ्रष्टाचार कर रहे भ्रष्टाचारियों पर करारा व्यंग किया।

भाजी पर कंट्रोल करेगा  
हमसे टाल-मटोल करेगा  
देश का पैसा गोल करेगा  
तो इधर हार्ट में होल करेगा  
तो देश का बच्चा बच्चा बच्चू  
चेहरे पर तारकोल करेगा।  
सुनो साथियों।  
इस पाजी ने मेरी प्लेट में  
भाजी की कम मात्रा की थी  
नमक टैक्स जब लगा  
तो अपने गांधीजी ने  
दांडी जी की यात्रा की थी।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के समवेत् ऑडिटोरीयम में मंगलवार 21 फरवरी 2023 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर डॉ. यती शर्मा के उपन्यास 'आधी आधी रात की नींद' और विदुशी शर्मा द्वारा संपादित बहुभाषिक काव्य संकलन 'अखंड भारत : युगदृष्टा' पुस्तक को लोकप्रिय दौरान सुप्रसिद्ध कवि अशोक चक्रधर कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी उपस्थित थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. अशोक चक्रधर के कहा की बदलती पीडीओ के बीच में उम्मीदे कायम रहती है और नयी पिढी के बच्चे भी शून्य मे रंग भरेंगे। चक्रधर ने व्यंगात्मक लहजे मे अपनी एक कविता के हवाले से कहा की आजादी के बाद भी पहली पीढी में आद्यचरण मौजूद था। पीढियों के साथ एक एक कर वह 'आचरण आचरण, चरण, रण और कण में बदल गया। न को हम कण के रूप में भी देखते हैं और न को शून्य समझना चाहिये। साथ ही यह न भूले की शून्य विश्व को दिया हमारा उपहार है। अब नयी पिढी इसे नया रंग देंगे। (हिंदुस्तान समाचार)

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की बली देकर इस आजादी को प्राप्त किया है। इसलिये डॉ. अशोक चक्रधर ने कहा अपने देशवासियों को उसका बलिदान ध्यान में रखते हुए हमें अपने देशभक्तों को निभाना चाहिये तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। वर्तमान लोकतंत्र में लोकप्रतिनिधी अपने स्वार्थ को प्राप्त कर रहे हैं इसके उपर भी करारा व्यंग किया है :-

उनकी कविता मंत्रिमंडल विस्तार  
हमारे केंद्रीय मंत्रिमंडल का विस्तार है करता  
सत्तर मंत्रियों के बाद भी लंबी कतार  
अटल जी बोले -  
अशोक !  
कैसे लगाऊ रोक ?  
इतने सारे मंत्री हो गये  
और जो नहीं हो पाए  
वो हसीयो बार रो गये  
इतने विभाग कहा से लाऊँ  
सबको मंत्री कैसे बनाऊ ?

देश के आजादी के लिए अपने देशभक्ति ने आपणा सर्वस्व न्योछावर कर देश को आजादी दिलाई, त्याग किया, अपने प्राणों की आहुती दी, अपना सुख, चैन त्याग कर अंग्रेजो से लड़े उसको देखते हुए आज भारत के देशवासी ये भूलकर सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार हो रहा है इसके उपर भी डॉ. अशोक चक्रधर ने अपनी कविता 'चालीसवाँ राष्ट्रीय भ्रष्टाचार महोत्सव' में ऐसे भ्रष्ट लोगों पर कविता लिख व्यंग किया है :-

प्रिय भ्रष्टोदय  
आप तो जानते हैं  
भ्रष्टाचार हमारे देश की  
पावन पवित्र सांस्कृतिक विरासत है,  
हमारी जीवन पद्धती है  
हमारी मजबूरी है  
हमारी आदत है।  
आप अपने  
विभागीय भ्रष्टाचार का  
सर्वोत्कृष्ट नमुना दिखाईए।  
और उपाधिया तथा  
पदक-पुरस्कार पाइए  
व्यक्तिगत उपाधिया है  
भ्रष्ट शिरोमणी, भ्रष्ट विभूषण,

भ्रष्ट भूषण और भ्रष्ट रत्न।

(प्रतिनिधी व्यंग कविताएं चुनी-चुनाई, डॉ. अशोक चक्रधर)

‘सिंधु का जल’ इस कविता के माध्यम से कवि डॉ. अशोक चक्रधर हमारी सभ्यता, संस्कृती, मानवता, सर्वधर्म समभाव एवम् दूसरो के दुःख दूर करने के भाव का वर्णन किया है। कवि ने मानवीय गुणों के स्वीकार करने के लिए कहा है, कविता में भले ही एक नदी का वर्णन आया हो लेकिन उसके माध्यम से लेखक ने भारतीय सभ्यता, संस्कृती, इन्सानियत, सर्वधर्म समभाव आदी मानवी गुणों को स्वीकार करने की बात कही है। नदी के किनारे पर सभ्यता एवं संस्कृती का विकास होता है। उसी के कगार पर इन्सानियत के यज्ञ किये जाते हैं। नदी में बहने वाला जल पवित्र होता है, वो अपने पास आने वाले किसी व्यक्ति से उसका मजहब व धर्म नहीं पूछता है।

कारगिल शहीदों के नाम कविता में डॉ. अशोक चक्रधर जी कारगिल में शहीद जवानों को नमन किया है। प्रणाम किया है। तथा किस तरह कठिनता का सामना करते हुए अपने देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व देते हैं। उसका वर्णन किया है :-

टी.वी. ने उस साल  
बहुत रुलाया  
जब भी तिरंगे में लिपटा  
कोई ताबूत आया।

कुछ जगह पर बर्फ ही बर्फ, कठिनाई से भरे रास्ते, आदि के बारे में भी उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। अनेक तकलीफों को सहते हुए आगे बढ़ते रहना, अपना कर्तव्य समजते हुए देश की रक्षा के लिए अपना योगदान देते हैं :-

बर्फिली खडी चट्टान पर  
बुलेटप्रूफ जैकेट नही,  
भोजन के पॅकेट नही,  
हजारो सुईया चुभाती  
हवा के थपेडो मे  
बर्फ ही बर्फ के बीच  
इक्का दुक्का पेडो मे  
रास्ता बनाते हुए  
जयहिंद गाते हुए  
बिना रसद-रोटी के  
चोटी तक जाते हुए।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में खादी का बहुत महत्व रहा है। गांधीजी ने 1920 के दशक में गांवों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए खादी के प्रचार प्रसार पर बहुत जोर दिया था। बहरहाल इतिहास साक्षी है कि स्वदेशी स्वराज सत्याग्रह के साथ चरखे और खादी ने भारत की आजादी की लड़ाई में कितनी अहम भूमिका निभाई है। खादी सिर्फ वस्त्र नहीं, परिश्रम और स्वाभिमान का प्रतिक भी बनी। कभी तो कवि सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा :-

खादी के धागे मे, अपनेपन का अभिमान भरा।

माता का इसमे मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा।

महात्मा गांधी अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग मे खादी के जन्म की रोचक कहानी बताई है। उनके अनुसार हमे तो अब अपने कपड़े तैयार करके पहनने थे इसलिये आश्रमवासियों ने मिलकर कपड़े पहनना बंद किया और यह निश्चय किया कि वे हाथ करधे पर देशी मिल के सुत का बुना हुआ कपड़ा पहनेंगे। ऐसा करने से हमे बहुत कुछ सीखने को मिला। हिंदुस्तान के बुनकरो के जीवन की, उसकी आमदनी की, सूत प्राप्त करने में होने वाली उसकी कठिनाई की इसमें वे किस प्रकार ठगे जाते थे और आखिर किस प्रकार दिन दिन कर्जदार होते जाते थे। इस सबकी जानकारी हमें मिली। खादी का वस्त्र पहनना न सिर्फ अपने देश के प्रति प्रेम और भक्तिभाव दिखाता है बल की कुछ ऐसा पहनना भी है जो भारतीयो की एकता दर्शाता है उन्होने इस प्रकार अंग्रेजो का ही नहीं, आम जीवन के काम आने वाली विदेशी वस्तुओं का भी बहिष्कार किया। गांधीजी ने कहा की स्वराज यानी अपना शासन पाना है तो स्वदेशी' यानी अपने हाथों से बनी देशी चीजों को अपनाना होगा। इसलिये खादी स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक ही नहीं बल्कि सच्चा भारतीय होने की पहचान भी कहलाई। इन्होंने लोगों को उत्साहित करते हुए कहा था, आप मेरे हाथ में खादी लाकर रख दीजिए, मैं आपके हाथ मे स्वराज रख दूंगा। इस खादी की महत्ता को ध्यान मे रख कर डॉ. अशोक चक्रधर ने अपनी कविता 'खुद खादी' में स्पष्ट किया है, राष्ट्रीय स्वाधीनता के वक्त खादी किस तरह की थी और आज उसका महत्व कैसा है :-

जिसने दिलाई थी आजादी  
वो खादी  
तभी तक पवित्र थी  
और भारत के  
जन-जन की मित्र थी  
जब तक खुद  
काती  
बुनी  
सिली  
और धोई जाती थी  
खुद सुखाई  
और फिर से  
खुद भिगोई जाती थी।

संदर्भ सूची :-

1. भारत का इतिहास, मोहनलाल गुप्ता।
2. हिंदुस्तान समाचार।
3. प्रतिनिधी व्यंग कविताएं, चुनी-चुनाई, डॉ. अशोक चक्रधर।
4. सिंधू का जल, डॉ. अशोक चक्रधर।

Email : arvindshejwal7@gmail.com



# फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य में ग्रामीण एवं शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति

डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी, एस0 बी0 रा0 स्ना0 महाविद्यालय हल्द्वानी ( नैनीताल)

फणीश्वरनाथ रेणु ने अपनी कहानी और उपन्यासों में अपने जीवन के अनुभवों को बड़ी सजगता और ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। ऐसा प्रतीत होता है सारी घटनाएं पाठकों के सामने ही घटित हो रही हैं। उनकी कहानियों में समग्र मानवीय दृष्टि एवं अन्तर्दृष्टि की संवेदना के दर्शन होते हैं। रेणु जीवन भर शोषण और दमन के विरुद्ध संघर्षरत रहे। इसी कारण वे सोशलिस्ट पार्टी से भी जुड़ गये और राजनीति में सक्रिय भागीदारी भी करते रहे। उन्होंने सन् 1942 में अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की। सन् 1970 में वे जय प्रकाश नारायण के साथ आन्दोलन में कूद गये। सत्ता द्वारा किये जा रहे दमन के विरोध में उन्होंने 'पद्मश्री' सम्मान वापस कर दिया।

रेणु जब शहर से गाँव आते थे तो उनका कहना था, यह वैसा ही है जैसा 'स्लाटर हाउस' के करीब से निकलकर खुली हवा में साँस लेना। उनकी कहानी और उपन्यासों में शहर तथा गाँव के जीवन-संघर्षों का यथार्थ चित्र दिखाई पड़ता है। निर्मल वर्मा कहते हैं 'रेणु की इस समग्र मानवीय दृष्टि को अनेक जनवादी और प्रगतिवादी आलोचक संदेह की दृष्टि से देखते थे। कैसा है यह अजीब लेखक, जो गरीबी की यातना के भीतर भी इतना रस, इतना संगीत, इतना आनन्द छलका सकता है, सूखी करती जमीन के उदास मरूस्थल में सुरों, रंगों और गंधों की रसलीला देख सकता है। सौन्दर्य को बटोर सकता है, आंसुओं को परखता है, किन्तु उसके भीतर से झाँकती, धूल-धूसरित मुस्कान को देखना नहीं भूलता, एक सौन्दर्यवादी की तरह नहीं, जो सुन्दरता को अन्य जीवंत तत्वों से अलग करके उसका रसास्वादन करता है।'<sup>1</sup>

फणीश्वरनाथ रेणु ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में ग्रामीण आंचलिक परिवेश के साथ-साथ शहरी जीवन की यथार्थ स्थितियों को चित्रित किया है। हिन्दी सिनेमा ने 'तीसरी कसम' कहानी के लेखक रेणु को बहुत लोकप्रिय बना दिया। आंचलिक उपन्यास लिखने में सिद्धहस्त फणीश्वरनाथ रेणु प्रेमचन्दोत्तर युग के सफल और प्रभावशाली लेखक हैं। इन्होंने समाज में व्याप्त शोषण तथा दमन के विरुद्ध आवाज बुलन्द की। रेणु के प्रमुख उपन्यास मैला आंचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड एवं कहानी संग्रह ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, अच्छे आदमी, प्राणों में घुले रंग प्रमुख हैं।

मैला आंचल उपन्यास का कथानक बिहार के पूर्णिया जिले का मेरीगंज गाँव है। उपन्यास में ग्रामवासियों के दोहरे संघर्ष की कथा है। एक ओर इसमें गाँव की जनता प्रगति में बाधा बने संस्कार, परस्पर कलह, रीति-नीति, छुआछूत आदि से निरंतर संघर्षरत है तथा दूसरी ओर प्रगति के ठेकेदार, जनसेवी, देशभक्त अपने स्वार्थों में लगे लोगों से रूबरू होना पड़ता है। दो खण्डों में लिखे मैला आंचल उपन्यास में रेणु ने गाँव के विविधतापूर्ण जीवन को उसकी अच्छाई तथा बुराई के साथ चित्रित

किया है।

फणीश्वरनाथ रेणु की दूसरी औपचारिक कृति 'परती परिकथा' में विहार के परानपुर गाँव की भूमि की समस्या का चित्रण किया गया है। गाँव का प्रत्येक व्यक्ति ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ, छोटी सोच से ग्रस्त एक दूसरे के हक लूटने में लगा हुआ है। गाँव में बदल नहीं रहा बल्कि बदल गया है।

रेणु जी का 'दीर्घतपा' उपन्यास पाँच देवियों की कथा को संक्षिप्त में गूँथकर लिखा गया प्रतीत होता है। यह नारी की करुणा भरे जीवन की गाथा है। वर्किंग विमेन्स हॉस्टल की जिन्दगी, संचालकों का पाखण्ड, समाज सेवा के नाम पर समाज में फैल रहे यौन-शोषण को संवेदना के साथ लेखक ने चित्रित किया है।

रोमांस-शून्य प्रेम कथा की भूमिका का आधार लेकर रचित 'जुलूस' भारत-विभाजन की त्रासदी से जूझते शरणार्थियों एवं शरणार्थी शिविरों पर केन्द्रित हैं।

'कितने चौराहे' उपन्यास में अनेक बार पूर्णिया जिले की कचहरी का नाम आता है। गाँव से शहर आकर मुनी अर्थात् मनोहर एवं स्कूली छात्रों ने भारत छोड़ो आन्दोलन को सफल बनाया।

'पल्टू बाबू रोड' उपन्यास की कथाभूमि बिहार के पूर्णिया जनपद का कस्बा 'बैरागाछी' है। पल्टूबाबू का सम्बन्ध न किसी दल से है और न ही वे किसी दल के हैं। पल्टू बाबू अव्वल दर्जे के धूर्त, चालबाज और जुगाडू व्यक्ति हैं।

इसी प्रकार रेणु की कहानियों में भी समाज का यथार्थ और वास्तविक रूप नजर आता है। वे अपने परिवेश के प्रति बेहद आत्मीयता रखते हैं। उनकी कहानियों में ग्रामीण एवं शहरी जीवन मूल्यों की अनुभूति होती है। रेणु हमारे जीवन्त मानव मूल्यों के कथाकार के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। रेणु की जटिल प्रेम सम्बन्धों वाली कहानियों में जाति और वर्ग की भी समस्या है। समाज में मौजूद खाप पंचायतों के कारण ही 'मृदंगिया' अपनी जाति छिपाए रहती है। 'पंचलाइट' कहानी में खाप पंचायत का दृश्य दिखाई पड़ता है। उनमें व्याप्त भ्रष्टाचार को रेणु ने उजाकर कर दिया है। 'पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस पंचों को मौका मिला। दस रूपया जुरमाना न देने से हुक्का-पानी बन्द। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है।'<sup>2</sup>

रेणु की 'तीसरी कसम' कहानी का दूसरा नाम 'मारे गये गुलफाम' है। यह कहानी गाँव के हीरामन नाम से गाढ़ी वाले के जीवन को लक्ष्य कर लिखी गई है। एक नौटंकी में काम करने वाली नृत्यांगना हीराबाई को वह अपनी गाड़ी में बहुत दूर ले जाता है। हीराबाई गाढ़ी में अकेली यात्रा करती है। हीरामन को उसका सौन्दर्य, आत्मीयता से बात करना एवं उनकी भाषा बहुत अच्छी लगती है। हीराबाई भी हीरामन को अच्छा मानने लगती है। दस दिन नौटंकी चलने के बाद दूसरी कंपनी में नौकरी लगने के कारण हीराबाई चली जाती है। हीरामन यह सब देखकर मायूस हो जाता है। उसके सपने टूट जाते हैं। वह तीसरी कसम खाता है कि 'वह कंपनी की औरत की वहनी कभी नहीं करेगा। दो कसमें वह पहले खा चुका है। वह चोर बाजारी का माल कभी नहीं लादेगा तथा बांस का लदान किसी भाव नहीं करेगा।'

'लाल पान की बेगम' कहानी भी फणी वरनाथ रेणु द्वारा लिखित ग्रामीण जीवन की कहानी है।

रेणु की 'जलवा' कहानी शहरी जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करती है। सोनपुर के मौलवी साहब की लड़की हाथ में तिरंगा झण्डा लिए प्रार्थना सभा में कुरान की आयतें पढ़ने वाली, गिरफ्तारी के समय गद्दारों शर्म करो कहने वाली तेज तर्रार 'फातिमा दी' आज शान्त-सी कत्थई रंग के बुर्के में है। विश्वास नहीं हो पा रहा है। यह सब अट-पटा-सा प्रतीत हो रहा है।

जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करते हुए रेणु कहते हैं कि स्त्री को जहाँ इस्तेमाल करने की वस्तु समझा जाता है वहाँ

बड़े लोग उसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। यह रेणु की 'अगिनखोर' कहानी में दिखाई पड़ता है। सूर्यनाथ अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में आभा को इस्तेमाल करता है। आभा के गर्भवती होने पर समाज का ठेकेदार बन जाता है। आभा को चरित्रहीन और स्वयं को बेदाग साबित करता है। 'मैंने एम्बुलेन्स के ड्राइवर के साथ कई बार सिनेमा हाल में देखा है.....।' <sup>3</sup>

रेणु की टेबल, विकट संकट, रेखाएं : वृत्तचक्र आदि कहानियों में भी शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है। फणीश्वरनाथ रेणु के बारे में डॉ. बच्चन सिंह कहते हैं 'वे आदिम रस-गन्धों के कथाकार हैं। गाँव की धूल-माटी, धान की झुकी हुई बालियों, मेला-ठेला आदि में गाँव ही नहीं पूरा अंचल उभर आता है।' <sup>4</sup>

रेणु अपनी कल्पनाशक्ति से यथार्थ को पकड़ने का अद्भुत कौशल रखते थे। 'रेणु की कहानियों में पात्रों की चेष्टाएं, भाषा आदि क्षेत्रीय वातावरण में घुली-मिली होती है। इन्द्रिय-बोध, लोक-कथा, लोक धुनें रेणु की कहानियों के विशिष्ट उपादान है।' <sup>5</sup>

इस प्रकार रेणु को आंचलिक उपन्यास और नई कहानी के विशिष्ट कथाकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अज्ञानता, सामाजिक जड़ता एवं सामन्ती सोच का विरोध किया था। इसके साथ ही शहरी जीवन की विसंगतियों और पाखण्ड को भी उजागर किया था। अस्वस्थता की स्थिति में जीवन के अन्तिम दिनों में भी राजनैतिक एवं सामाजिक रूप से सक्रिय रहा करते थे।

#### संदर्भ :-

1. परिषद पत्रिका, फणीश्वरनाथ रेणु विशेषांक जुलाई-दिसम्बर, 2001 पृ0 22
2. फणीश्वरनाथ रेणु-प्रतिनिधि कहानियाँ, पंचलाइट कहानी पृ0-42
3. फणीश्वरनाथ रेणु-चुनी हुई रचनाएं सं0 भारत यायावर पृ0-365
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ0 श्रीनिवास शर्मा, पृ0-457
5. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास-विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ0-133

मोबा0-7500334778

E-mail : joshihindi01@gmail.com





## तुलसी की राम कथा और प्रबंध शास्त्र

डॉ. खुशबू राठी

शासकीय कन्या स्ना. महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

श्रीरामचरित मानस संसार के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक है। गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित इस ग्रन्थ में मानव जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तर मिलता है। गोस्वामी जी ने अपने इस महान ग्रन्थ में समाज के प्रत्येक पक्ष का वर्णन किया है। यह एक ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है जिसको जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाये, उसी दृष्टिकोण से ये ग्रन्थ नजर आता है। गोस्वामी जी का ये महान ग्रन्थ अध्यात्मिक भी है, सामाजिक भी है, राजनैतिक भी है और व्यक्तिगत भी है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदासजी न केवल महान अध्यात्मिक विभूति है, बल्कि वे सामाजिक एवं राजनैतिक शास्त्र के महान विद्वान भी हैं। वर्तमान में प्रबंधन शास्त्र की बड़ी चर्चा है। हर व्यक्ति इस विषय पर बात करता हुआ नजर आता है। आधुनिक प्रबंधन में संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका है या हम कह सकते हैं कि किसी भी संगठन की सफलता उसके प्रबंधन पर निर्भर करती है। अगर हम अच्छा प्रबंधन कर पाएं तो हम अपने संगठन को सफलता के शीर्ष पर पहुँचा सकते हैं। संगठन कैसा भी हो सकता है, वो राजनैतिक भी हो सकता है, सामाजिक भी हो सकता है, और व्यावसायिक भी हो सकता है।

व्यावसायिक संगठनों के प्रबंधन के जो आजकल प्रचलित सिद्धान्त और मान्यताएं हैं वे ज्यादातर अमेरिका, जापान, और पश्चिमी देशों से लिए गए हैं। आज के समय में जब हम विद्यार्थियों को प्रबंधन की शिक्षा दे रहे हैं तो उसमें ज्यादातर सिद्धान्त और पुस्तकें बाहर के देशों से आयी हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली और विद्वानों का दोष यह है कि उन्हें हमारे ग्रन्थों और हमारे सनातन ज्ञान में कुछ भी नजर नहीं आता और अगर कोई रखना और पढ़ाना भी चाहे तो उसे सांप्रदायिक करार दिया जाए है। पर हमारे ग्रन्थों में अद्भुत रहस्य और ज्ञान दिया हुआ है। बस जरूरत है उसे आज के सन्दर्भ में देखने की और प्रस्तुत करने की। श्रीरामचरित मानस एक ऐसा ही अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें आधुनिक संगठन और उसके प्रबंधन की महान शिक्षा छिपी हुई है। किसी भी आधुनिक प्रबंधन शास्त्र के पाश्चात्य विद्वानों की संगठनों उनके प्रबन्धों और उसके नेतृत्व की परिकल्पना के कई सौ वर्ष पूर्व गोस्वामी तुलसीदास जी ने संगठन प्रबंधन और नेतृत्व के बारे में अद्भुत परिकल्पना श्रीरामचरित मानस में प्रस्तुत की। श्रीरामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदासजी का एक शोधग्रन्थ है, जिसमें उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान के सार का संकलन किया।

मैनेजमेंट के वो Lessons, जो रामायण काल में इस्तेमाल हो चुके हैं और आज भी उतने ही उपयुक्त हैं।

रामायण में भगवान राम के वनवास काल की कहानी इंसान को बुराई पर अच्छाई की जीत, विविधता में एकता, सच्चे रिश्ते-नाते, अच्छी संगति का महत्व, सच्ची भक्ति, माफ करना के चरित्र, सबसे समान व्यवहार करना, भगवान में विश्वास और प्यार व दया आदि कई महत्वपूर्ण सीख देती है।

रामायण सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों द्वारा धर्म और कर्म का पालन करने के महत्व

को समझाने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक शैक्षणिक माध्यम भी है। रामायण में कई उल्लेखित घटनाएं और उनसे मिलने वाले सबक कई प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों में प्रबंधन और अधिकार को पढ़ाने के लिए भी इस्तेमाल किये जाते हैं। कुछ ऐसी सीख, जिनको कॉर्पोरेट वर्ल्ड में लागू किया जा सकता है।

### 1. टीम का उत्साहवर्धन जरूरी है :-

देवी सीता की खोज में हनुमान जी का लंका जाना रामायण का वो किस्सा है, जिसमें जिसमें मैनेजमेंट के सिद्धांतों का उपयोग साफ-साफ दिखाई देता है। हनुमान जी का उद्देश्य लंका जाकर देवी सीता तक श्री राम जी का सन्देश पहुंचना था। जब इस बात की पुष्टि हो गई थी कि देवी सीता लंका में ही हैं, तब जामवंत जी ने बजरंग बली को उनकी ताकत और शक्तियों का एहसास करा लंका जाने के लिए प्रेरित किया।

**शिक्षा :-** जामवंत जी का हनुमान जी को प्रेरित करना एक अच्छे मैनेजर का सबसे अच्छा उदाहरण है, जो अपने सहकर्मियों का परिचय उनकी क्षमता से कराता है। फिर उसकी क्षमता के अनुसार कामों को करने में उसकी मदद करता है।

### 2. ताकत, कमजोरी, अवसर और खतरे का आंकलन :-

लंका पहुंच कर सबसे पहले हनुमान जी ने वहां की स्थिति का पूरा विश्लेषण किया। उन्होंने लंका की ताकत और कमजोरियों का आंकलन किया। रावण के इलाके में उनके ऊपर कई तरह के खतरे थे, तो कई अवसर भी थे। हनुमान जी ने अपनी बुद्धि और कुशलता से सब कुछ समझा और उसके बाद कुछ किया।

**शिक्षा :-** ताकत, कमजोरी, अवसर और खतरा यानी SWOT (Strength, Weakness, Opportunities And Threats) का आंकलन आज के मैनेजमेंट का सबसे जरूरी हिस्सा है। सबसे पहले लक्ष्य को या जो काम दिया गया है, आपको उसको समझना जरूरी है। फिर, इसके लिए मानसिक रूप से तैयार होना और उसके लिए सही योजना बनाना है। सबसे बाद में अपने प्रतिद्वंदी की ताकत और कमजोरियों का पता लगाना जरूरी है और उससे सम्बंधित खतरों और अवसरों को समझना चाहिए।

### 3. सुनियोजित तरीके से काम करना :-

रामायण में सुग्रीव को काफी सुनियोजित तरीके से काम करते दिखाया गया है। रामायण के अनुसार सुग्रीव सर्वोत्तम प्रबंधकीय विशेषताओं के धनि थे। रामायण में सुग्रीव और बाली के युद्ध में उनकी जीत एक सफल प्रबंधक होने की निशानी है। सुग्रीव की कुशलता को देखते ही भगवान राम ने इस युद्ध में उनकी योजना के अनुसार ही काम किया था। अगर सुग्रीव एक अकुशल मैनेजर होते, तो शायद अंगद उनके सबसे बड़े दुश्मनों में से एक होते, लेकिन बाली पुत्र अंगद उनके साथ थे।

**शिक्षा :-** कहा जाता है कि बिजनेस अच्छे संबंधों से चलता है। एक सफल मैनेजर वही होता है, जिसके अपने सभी एम्प्लॉईज और क्लाइंट्स के साथ अच्छे सम्बन्ध होते हैं और एक सफल मैनेजर ही अपनी कंपनी के लिए अच्छा काम करता है।

### 4. साथ काम करने वालों की अहमियत को समझना :-

रामायण में भगवान जितने कुशल नायक थे, रावण उतना ही बुरा था। समय-समय पर रावण ने एक अकुशल राजा होने के संकेत दिए, जिसके कारण उसके पूरे साम्राज्य का सर्वनाश हो गया। शुरुआत से ही रावण ने अपने प्रबंधकों के सुझावों को नजरअंदाज किया और राम के साथ युद्ध की स्थिति में मृत्यु प्राप्त की।

**शिक्षा :-** एक अच्छा मैनेजर वो होता है, जो अपने प्रतिद्वंद्वियों से भी अपना काम निकाल सकता है। क्योंकि वो अपने साथ काम करने वाले लोगों के सुझावों को भी सुनता और अमल करता है। खासतौर पर तब जब कंपनी को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है। लेकिन ये रावण का कुप्रबंधन ही था, जिसकी वजह से उसकी सेना का सबसे बुद्धिमान और कुशल

सेनापति विभीषण, बीच युद्ध में उसको छोड़कर भगवान राम से जा मिला।

#### 5. एक टीम लीडर को और लीडर्स बनाने चाहिए :-

लंका में माता सीता को खोजने के बाद, हनुमान जी ने अपनी इच्छानुसार, रावण की सोने की लंका जो जला कर राख कर दिया था। मगर भगवान राम हनुमान जी के इस निर्णय से काफी दुखी थे। जिसके बाद हनुमान जी ने किसी भी तरह के निर्णय लेने बंद कर दिए। हनुमान जी की निर्णय लेने की क्षमताओं को सुधारने के लिए राम जी को खुद को पूरे परिदृश्य से हटाना पड़ा।

युद्ध के दौरान रावण भगवान राम और लक्ष्मण का अपहरण कर पाताल लोक ले गया। केवल हनुमान जी के पास ही उनको बचाने की बौद्धिक और शारीरिक शक्ति थी। हनुमान जी ही राम-लक्ष्मण को दुष्ट रावण के चंगुल से बचाकर लाए। और हनुमान जी को अपनी शक्तियों का एहसास हुआ और हनुमान जी एक सफल नायक बन पाए।

**शिक्षा :-** ठीक इसी तरह कॉर्पोरेट वर्ल्ड में भी एक लीडर के सामने ऐसा वक्त आता है, जब उसको अपने जैसे कई दूसरे लीडर्स तैयार करने होते हैं। इसमें सबसे बड़ा काम होता है अपने आस-पास काम करने वालों को अच्छे और सफल निर्णय लेने के प्रेरित करें ताकि आगे चलकर वो भी एक अच्छे मैनेजर बन पाए।

#### 6. ब्रांड से बड़ा कुछ नहीं होता :-

रामायण में लंका तक पुल बनाने वाले घटना क्रम में जब पत्थर पानी में डूबे जा रहे थे, तब पत्थरों पर राम नाम लिखा गया, जिसके बाद भारी-भारी और बड़े-बड़े पत्थर भी पानी पर तैरने लगे थे। और आराम से कम समय में लंका तक पुल तैयार हो गया। इसके बाद कहा गया था कि राम नाम से बड़ा कोई नाम नहीं है।

**शिक्षा :-** पत्थर डूब रहे थे क्योंकि उन पर राम नाम अंकित नहीं किया गया था। आज के टाइम में अगर देखा जाए तो ब्रांड का नाम मार्किट में चलता है और ब्रांड से बड़ा ब्रांड के मालिक का नाम भी नहीं होता। कोई भी मैनेजर बहुत खुश होता है, जब उसको उनकी कंपनी के नाम से पहचाना जाता है।

#### 7. कम्युनिकेशन का महत्व :-

रामायण के अनुसार, जब सुग्रीव ने देखा कि राक्षस से लड़ते हुए बाली एक गुफा में गया और 1 साल तक राक्षस और बाली में से कोई बाहर नहीं आया, तो सुग्रीव को लगा कि शायद दोनों ने एक-दूसरे को मार दिया है। और वापस अपने राज्य किष्किंधा आकर सुग्रीव ने बाली की पत्नी तारा से विवाह कर लिया।

जब बाली वापस आया तो उसने सुग्रीव को राज सिंहासन पर बैठे देखकर सोचा कि उसके साथ धोखा हुआ है। और उसने सुग्रीव को बिना बात किये और समझे युद्ध के लिए ललकार दिया। यहां दो भाइयों सुग्रीव और बाली के बीच प्राणघातक शत्रुता का कारण आपस में बात न करना बना।

**शिक्षा :-** किसी भी तरह के प्रबंधन और मैनेजमेंट में कभी भी किसी भी तरह के मिस-कम्युनिकेशन को नहीं आने देना चाहिए, वरना परिणाम उम्मीद के विपरीत ही आते हैं। इसलिए एक मैनेजर को हमेशा अपने एम्प्लॉईज के साथ बात करते रहना चाहिए।

#### 8. टीम में विश्वास होना जरूरी है :-

रामायण में राक्षसों की सेना देवताओं की सेना से ज्यादा शक्तिशाली नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्होंने देवताओं और शक्तिशाली राजाओं को पराजित किया था। वहीं भगवान राम की सेना में ऐसे सैनिकों का समावेश था, जो आदिवासी जनजाति के थे, जिन्होंने कभी पहले कभी इतनी शक्तिशाली और परिष्कृत सेना का सामना नहीं किया था।

बावजूद इसके राम जी को अपनी सेना पर पूरा विश्वास था। उनको अपनी सेना की क्षमताओं के बारे में सब कुछ ज्ञात था। और इसी आत्मविश्वास के बूते वानर सेना रावण की शक्तिशाली सेना पर भारी पड़ी और विजय प्राप्त की।

**शिक्षा :-** इससे ये सीख मिलती है कि पहले महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को निर्धारित करें और फिर अपनी टीम को उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

### 9. अपने लिए उत्तराधिकारी तैयार करना :-

राजा दशरथ, राम जी को अयोध्या के राज सिंघासन पर बैठना चाहते थे, लेकिन ऐसा हो नहीं पाया था। सबसे बड़े पुत्र होने के कारण पहले से ही जनता ने राम जी को अपना राजा मान लिया था। और जब वनवास काट कर राम जी वापस अयोध्या आये थे, तब उन्होंने ही राज पाठ संभाला था। और इससे सीख लेकर राम जी ने अपने दोनों पुत्रों लव-कुश में राज्य बराबर बांटा था।

**शिक्षा :-** ठीक उसी प्रकार सभी कुशल प्रबंधन वाली कंपनियां भी यही सुनिश्चित करती हैं कि उनके टॉप परफॉर्मर्स के करियर और भविष्य के विकास की योजना सीधे उत्तराधिकार योजनाओं से जुड़ी हो। इसलिए अच्छे लीडर्स को हमेशा अपनी टीम के बेस्ट परफॉर्मर्स के स्किल्स को बढ़ाने और निखारने में मदद करनी चाहिए, ताकि उनकी अनुपस्थिति में कंपनी को कोई नुकसान न हो।

### 10. उपभोक्ता की जरूरत को समझना :-

जब राम जी को 14 साल का वनवास दिया गया, तो देवी सीता और अनुज लक्ष्मण ने भी उनके साथ जाने का निर्णय लिया। उन्होंने इस अवसर को एक चुनौती की तरह स्वीकार किया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वो भी आम प्रजा के साथ उनकी तरह रहकर जीवन को समझना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने ऐशो-आराम को छोड़ दिया।

**शिक्षा :-** आज मॉडर्न मार्केटिंग में भी पहले उपभोक्ता की जरूरत को समझने के लिए एक्सक्यूटिव्स लोगों से मिलते हैं। उनके विचारों और अनुभवों को समझते हैं। उसके बाद उपभोक्ता की जरूरत के हिसाब से प्रोडक्ट बनाते हैं।

### 11. क्रियान्वयन में उत्कृष्टता :-

माता सीता की खोज की योजना को हनुमान जी ने क्रियान्वित किया था। जिस चतुराई और ज्ञान के साथ वो सीता जी की खोज करते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं, वो एक सफल और बुद्धिमान नायक का उदाहरण है। समुद्र को पार करते वक्त उन्होंने मैनाक पर्वत द्वारा थोड़ी देर विश्राम करने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

**शिक्षा :-** जिस तरह से हनुमान जी ने सुनिश्चित किया था कि वो माता सीता का पता लगाकर रहेंगे। ठीक उसी तरह एक मैनेजर को भी पहले अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहिए उसके बाद विश्राम करने के बारे में सोचना चाहिए।

### 12. सही-गलत की पहचान :-

रामायण में रावण एक ऐसा व्यक्तित्व था जिससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। जैसे जब रावण की पत्नी मंदोदरी, भाई विभीषण और दादा ने उससे देवी सीता को राम जी को वापस लौटाने के लिए कहा था, लेकिन उसने अपने अहंकार में उनकी एक न सुनी।

उसने उनकी बात सुनी जो उनको भगवान राम के विरुद्ध भड़का रहे थे। और यही उसके विनाश का कारण बना।

**शिक्षा :-** आज भी कुछ लोग अपने ईगो में बनते हुए कामों को बिगाड़ने में लगे रहते हैं और मुंह ही खाते हैं। उनके लिए रावण का अंत सबसे बड़ी सीख है।

### 13. एक लक्ष्य निर्धारित करना :-

भगवान राम जी का लक्ष्य तय था कि उनको अपनी पत्नी सीता को बचाना है और दुष्टों का नाश करना है। और यही लक्ष्य उन्होंने अपनी सेना के अंदर भी भरा था कि युद्ध का मकसद देवी सीता को रावण की कैद से आजाद कराना है।

**शिक्षा :-** आज कॉर्पोरेट वर्ल्ड में भी कंपनी के हर व्यक्ति को अपने निर्धारित लक्ष्य पर फोकस करना चाहिए। अगर नीचे से लेकर ऊपर की पोजिशन पर कार्यरत सभी लोग अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे, तो कंपनी को टॉप पर पहुंचने से कोई रोक नहीं सकता है।

रामायण हिन्दू धर्म के लिए बहुत पवित्र है और इसमें सिर्फ जीवन ही नहीं, बल्कि जीवन के अलग-अलग पड़ावों के बारे में सीख मिलती है।

यह ग्रंथ एक आदर्श गुरु की भांति हमें जीवन के प्रत्येक संदर्भों के विषय में शिक्षित करता है, सच्चे मित्र की भांति समय-समय पर हमारी सहायता करता है, और अच्छे मार्गदर्शक की भांति जीवन में हमें सही राह दिखाकर जीवन-लक्ष्य को भेदने में हमारी सहायता करता है। इससे जुड़े सभी पात्र हमें जीवन के गूढ़ रहस्य की शिक्षा देते हैं।

### सन्दर्भ :-

1. कामिल बुल्के, राम कथा।
2. रामचरितमानस, गीताप्रेस गोरखपुर।
3. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास।
4. डॉ. रामनाथ शर्मा, भारतीय समाज, संस्थाएं और संस्कृति
5. डॉ. नगेन्द्र, तुलसी संदर्भ, (वाणी प्रकाशन)
6. डॉ. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास।
7. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, त्रिवेणी।
8. श्रीमद्भगवद्गीता, टीकाकार कृष्णकृपा श्रीमूर्ति, भक्ति वेदांत बुक ट्रस्ट हरे कृष्ण धाम जुहू, मुम्बई प्रकाशन।
9. डॉ. रामनाथ शर्मा एवं डॉ. राजेन्द्र कुमार शर्मा, भारतीय समाज, संस्थाएँ और संस्कृति, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
10. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी कोश, नई दिल्ली 1982
11. फादर कामिल बुल्के, रामकथा, प्रयाग विश्वविद्यालय प्रकाशित छटा संशोधन, संस्करण, 1999
12. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास, राधा प्रकाशन, नई दिल्ली पहला संस्करण, 1974
13. राजेन्द्र कुमार जुमनानी, पर्यावरण संरक्षण विधि एवं न्यायिक संकिता क्लासिकल कम्पनी, नई दिल्ली प्रथम संस्करण सन 2002
14. विद्यानिवास मिश्र, रामायण का काव्यमर्म, प्रभात पब्लिकेशन, प्रभात प्रकाशन आसफ अली रोड़, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 पत्रिका।

Email- rathi.khushboo111@gmail.com

Phone 9424883555

Address - "matra-chhaya"203, safi nager amrit sager colony Ratlam (M.P.)



# मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य में सामाजिक समस्याओं का अवलोकन

दीपमाला मिश्रा

शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (मध्य प्रदेश)

डॉ. सनकादिक लाल मिश्र

शोध निर्देशक, शासकीय शहीद केदार नाथस्नातकोत्तर महाविद्यालय मऊगंज, रीवा (मध्य प्रदेश)

मुजफ्फरपुर जिला बिहार के छपरा गाँव में जन्म लेने वाली मृदुला सिन्हा जी की पहली कहानी 1978 में कादम्बिनी पत्रिका में छपी। तबसे वे निरंतर लिखती रहीं। दो दशकों में सैकड़ों आलेख, ललित निबंध, लघुकथाएँ, कहानियाँ, उपन्यास, लोककथाएँ, कविताएँ, चिट्ठियाँ, संपादकीय और पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखा है। राजमाता विजयराजे सिंधिया की आत्मकथा- राजपथ से लोकपथ पर को भी शब्दबद्ध किया है।

विद्यार्थी जीवन से ही संवेदनशील मृदुला सिन्हा की साहित्यिक गतिविधियों तथा सृजनात्मक लेखन के प्रति रुचि रही है। भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों में आम आदमी विशेषतया महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ और उनके रचनात्मक लेखन के मुख्य उद्देश्य हैं। सिन्हा जी की रचनाओं में ग्रामीण अंचल की सौंधी-सौंधी महक विद्यमान है। सिन्हा जी विभिन्न मंचों से ग्रामीण वर्गों तथा परिवार में जुड़े मुद्दों को ही उठाती हैं। वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री-पुरुष की व्यावहारिक समानता को दर्शाती हैं, और इन समस्याओं के समाधान के लिए पूरे समाज का आह्वान करती हैं। वे एक दूसरे के प्रतिद्वंदी के बजाय पूरक के रूप में प्रस्थापना की पक्षधर हैं। बेटी को समाज में विशेष रूप में स्थान देने की कोशिश और व्यक्ति के कर्तव्य पालन पर विशेष ध्यान देती है।

श्रीमती सिन्हा वर्तमान युग, परिवेश में लोकप्रिय लेखिका के रूप में उभरी हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय मूल्यों से युक्त मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। लेखिका ने अपने कृतियों में पौराणिक पात्रों को प्रतीकात्मक के माध्यम से विश्लेषण किया है। इनकी कहानियों में भारतीय संस्कृति और समाज का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। इन्होंने वर्तमान समाज की अनेक समस्याओं पर आधारित कहानियाँ लिखा है।

इन्होंने संयुक्त परिवारों में पारिवारिक संबंधों को जोड़ती हुई कहानियाँ लिखा है। लेखिका ने अपनी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं का चित्रण गहराई से किया है।

‘ढाई बीघा जमीन’ कहानी संग्रह में समाज के जीवन की सच्चाई से रूबरू कराती कहानियाँ पाठक के अंतःचेतना को झकझोरती हैं। ये कहानियाँ व्यक्ति, समाज और परिवार को जोड़ती हैं।

‘ढाई बीघा जमीन’ कहानी आधुनिकता की कहानी है, भारतीय समाज में यह परंपरा व्याप्त थी कि लड़की के विवाह में लड़के की पैत्रिक संपत्ति होनी चाहिए। आज आधुनिक युग में लड़के के पैत्रिक संपत्ति की जगह उसकी नौकरी और

आमदनी को प्रमुख माना जाता है। इस कहानी में सुभद्रा के पिता रामबाबू (मास्टर साहब) अपनी बेटी सुभद्रा के लिए लड़का देखने के लिए रामचरण के घर जाते हैं। रामचरण के तीन बेटे हैं, और उनके पास जमीन सिर्फ साढ़े सात बीघा ही है। सुभद्रा के पिता मन ही मन सोचते हैं कि तीनों बेटों को जमीन का कितना हिस्सा मिलेगा। शायद ढाई बीघा एक के हिस्से में आयेगा। विवाह होने के बाद सुभद्रा ने कभी भी अपने पिता को ढाई बीघा जमीन के लिए उलाहना नहीं दी। सुभद्रा के विवाह को बीस वर्ष पूरे हो चुके थे, पिता के मन में आशंका थी कि जब बेटी को पता चलेगा कि पिता ने उसका विवाह ढाई बीघा जमीन वाले लड़के से की है तब वे अपनी बेटी को क्या जवाब देंगे। और अंत में सुभद्रा और उसके बेटे को इसी ढाई बीघा जमीन में अपना भविष्य दिखाई देता है। और सुभद्रा कहती है कि “कभी सुना था जेवर संपत्ति का श्रृंगार और विपत्ति का आहार होता है”, ढाई बीघा जमीन है तो क्या हुआ आज यही तिनका हमारा सहारा है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी समस्याएँ समाज में आम बात हैं। लोग आजकल शहरों में फ्लैट में रहते हैं, उलका हँसना, रोना ज्यादातर व्यक्तिगत और घर के अन्दर तक ही सीमित रहता है।

सिन्हा जी की कहानी ‘अक्षरा’ एक झोपड़पट्टी में रहने वाली सुखिया की कहानी है जो बांझ है। उसकी भतीजी अपना बच्चा गोद में डालकर कहती है कि ले बुआ आज से यह तेरा बच्चा है, पर कोई मेरे घर आये तो मैं पप्पू को अपने साथ ले जाऊंगी। धीरे-धीरे पप्पू पाँच वर्ष का हो गया और स्कूल भी जाने लगा, सुखिया उसे रोज बदल-बदलकर टिफिन बनाती। जब कभी लेखिका अपनी पोतियों की बातें करती तो सुखिया अपने पप्पू की चर्चा शुरू कर देती। दिन बीतते जा रहे थे, पप्पू कभी इस माँ के पास कभी उस माँ के पास अता जाता रहता। उसे दोनों माँएँ प्यार करतीं और पप्पू भी दोनों को प्यार करता। पप्पू बारहवीं पास कर गया तो सुखिया लेखिका के घर लड्डू लेकर गई थी। इसी बीच सुखिया की मृत्यु की खबर सुनकर लेखिका की आँखें बन्द हो गईं। सुखिया का संपूर्ण व्यक्तित्व लेखिका के सामने आ गया, वे सोचने लगीं कि इसमें पप्पू का कोई दोष नहीं था। सुखिया का मातृत्व भाव ‘अक्षरा’ था, इस कारण उसने स्वयं मृत्यु को स्वीकार कर लिया। लेखिका कहतीं हैं कि- “जन्म मृत्यु का फेर ही तो जीवन है।”

लेखिका की कहानी ‘चिट्ठी की छुअन’ वर्तमान संचार प्रणाली के बीच चिट्ठी जैसे परंपरागत संचार प्रणाली के महत्व को उजागर किया गया है। कौशल्या जी की बीमारी की दवा किसी भी चिकित्सक को नहीं मिल पा रही थी, उनकी हालत बिगड़ती जा रही थी। कौशल्या जी अस्सी पार कर चुकीं थीं, उनके साथ की सभी स्वर्ग सिंधार चुकीं थीं, सिर्फ कौशल्या अकेले बच गई थी।

एक दिन कौशल्या को अपनी बेटी सीमा की बहुत याद आ रही थी, उसने अपने पोते राहुल से कहा कि मुझे एक कागज का टुकड़ा दे दो मैं उसे एक चिट्ठी लिखकर भेज दूँ कि वह अपना मुख दिखा जाये। अचानक सीमा के आ जाने से सभी लोग अचंभित हाक जाते हैं, सीमा की बेटी रोमा की शादी हो जाती है और सीमा नानी बन गई है। कौशल्या जी कहतीं हैं कि रोमा तुम्हें ससुराल से चिट्ठी तो लिखती होगी तो वही चिट्ठी मुझे भेज दिया करो, मैं उसे ही पढ़कर संतोष कर लिया करूंगी। कौशल्या जी उस चिट्ठी की छुअन को महसूस करना चाहतीं थी। समाज की यह समस्या है कि आधुनिक युग के परिवारों में जो बड़े-बूढ़े हैं उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं या फिर घर में रहते हैं परिवार के साथ तो उन पर कोई ध्यान नहीं देता। प्रत्येक उपन्यासकार जीवन को विशेष दृष्टिकोण से देख समझकर उसके प्रति एक विशेष दृष्टि को अपने उपन्यास में अभिव्यक्त करता है। इस दृष्टि से आधुनिक उपन्यासकारों में मृदुला सिन्हा की कृतियाँ अपने उद्देश्य में सफल हैं। इनके लेखन के केन्द्र में समाज, मनोविज्ञान, स्त्रियाँ, बच्चे, लोक संस्कृति और ग्रामीण जीवन का सुन्दर वर्णन है। इन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं तथा उसके विषयों को उभारा है। उन पात्रों को वर्णित किया है जिनको हमारा समाज

प्रताड़ित और मुख्य धारा से वंचित करता रहा है। चाहे 'घरवास' के कलिया और विलाचना हों जो दलित होने के कारण सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से अभावग्रस्त जीवन जीने हेतु बाध्य होते हैं अथवा 'ज्यों मेंहंदी को रंग' की विकलांग शालिनी और दद्दाजी हों, इसी प्रकार 'नयी देवयानी' और 'परितप्त लंके वरी' उपन्यासों के पौराणिक स्त्री देवयानी और मंदोदरी जिनकी अवहेलना तत्कालीन समाज और साहित्य दोनों ने की जिनके व्यक्तित्व तथा चरित्र को लेखिका ने प्रस्तुत किया है।

मृदुला जी का उपन्यास 'ज्यों मेंहंदी को रंग' जो पूर्ण रूप से विकलांगों के जीवन संघर्ष और उनकी समस्याओं को यथार्थ रूप से उजागर करता है। विकलांगों को आधार बनाकर लिखा गया संभवतः यह हिन्दी का प्रथम उपन्यास है। यह उपन्यास विकलांगों की मानसिकता में परिवर्तन की राह दिखाता है तथा जीवंत और समाजोपयोगी है।

समाज की यह समस्या है कि एक विकलांग को उसके घरवाले बोझ समझने लगते हैं और भाग्य को खोटा समझने लगते हैं, पर सच्चाई यह है कि उनके जीवन का दृष्टिकोण बदल जाता है, जिस पर बीतती है वही समझ सकता है। इस उपन्यास की पात्र शालिनी का पैर गंगाघाट में कट जाता है तो उसके चाचा शर्मा जी उसे उस संस्थान में पहुंचा देते हैं जहाँ हाथ-पांव बनाए जाते हैं, वहाँ पैसे की कोई इज्जत नहीं होती सिर्फ मानवता की दृष्टि से कार्य होता है। शालिनी संस्था के सभी कामों में हाथ बंटती है साथ ही वहाँ की महिलाओं और अन्य लोगों को गुड्डे-गुड़िया बनाना सिखाती है, उसकी ख्याति कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैल चुकी थी। शालिनी दद्दाजी के साथ मिलकर देश के विकलांगों की सेवा में लीन होना चाहती थी, दद्दाजी शालिनी से सरकार के दायित्व और सामाजिक स्तर पर भी बातें करने लगते हैं। चंचल स्वभाव की शालिनी कहती है कि कोई भी काम कठिन या छोटा-बड़ा नहीं होता है। धीरे-धीरे शालिनी पूरी तरह से संस्था का संचालन अपने सिर पर ले लेती है। शालिनी युनूस मियाँ को समझाती है कि विकलांगों को अगर जीने के लिए अनेक रास्ते बन्द हो जाते हैं तो भला मरने के क्यों खुले रहे। अंत में शालिनी ने निश्चय किया कि वह एक के लिए जी कर देख चुकी है, अब जियेगा अनेकों के लिए, उसने संस्था में रहकर विकलांगों की सेवा करने के लिए जीने का निश्चय कर लिया। संस्था में रहते-रहते शालिनी में सामाजिक दृष्टि से परिवर्तन आने लगे।

उसने अपनी चोटी को जूड़ा बना लिया, साड़ी सूती और हल्के रंग की पहनने लगी। दद्दाजी और शालिनी जाने कितने लोग इस समाज में विकलांग हैं।

समाज में मनुष्यों के बीच शोषित वर्ग का विभाजन नहीं हुआ था, उस समय स्त्री-पुरुष सभी एक समान नहीं थे। साम्प्रदायिक दंगों और दलितों के ऊपर अत्याचार करते समय दंगाइयों के निशाने पर स्त्रियाँ ही होती हैं, ढोंगी पुरुष के निगाहों में जाति संप्रदाय, विशेष को पराजय बोध कराने का सबसे सरल एवं सहज तरीका है। सामंती पूंजीवादी समाज में आज जो आचरण प्रचलित है कि जो परिश्रम करते हैं उनकी सामाजिक मर्यादा कम होती है, अमीरों, जमींदारों तथा रजवाडों के घरों में स्त्रियाँ दास-दासी पर निर्भर रहती हैं, घर परिवार का कुछ ख्याल या काम नहीं करती हैं।

'घरवास' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश की नारी परदेश गये पति की राह देखती समय गुजारती रहती है। कलिया पंजाब में आतंकवादी दल ने मजदूरों की हत्या कर दी कई मजदूर मारे गए यह समाचार सुनकर गाँव की गली-गली में जाकर तथा डाक बाबू से पूछताछ करती है। मुसहर बिहार की एक जंगली जाति का नाम है, गाँव में कलिया ही नहीं बहुत सी स्त्रियों का यही हाल है।

गाँव में अत्याचार और जमींदारों का कुकृत्य कलिया से नहीं सहा जाता, घर की परिस्थिति भी खराब रहती है। मजदूरों को अब सम्मान के साथ-साथ जमीन की भी तलाश है अपना घर, अपनी छत परन्तु नसीब कहाँ? कलिया अपना घर बनाने के



लिए और घरवास के लिए पति के पीछे पड़ जाती है। पर समाज की जो समस्याएँ हैं कि ग्रामीण परिवेश के लोग राजनीतिक चाल चलने लगते हैं। पर कलिया सबकी चाल समझकर फूंक-फूंककर कदम रखकर परिवार का पालन पोषण करती है।

मुसहर जाति के आदमी लोग शहर कमाने गए हैं, तबसे मुसहर पट्टी की दीवाली भी फीकी पड़ जाती है, घर की परिस्थिति भी नहीं संभल पाती है। उसकी मानसिक वेदना का चित्रण भी इस उपन्यास में उत्तम ढंग से दर्शाया गया है। विलोचना के पंजाब चले जाने के बाद गाँव के जमींदार डाक बाबू, राघो कलिया को छोड़ते हैं तो वह उन्हें तमाचा मारती है तबसे उसे गाँव में कोई भी समान और मजदूरी नहीं मिलती। गाँव की कमजोर वर्ग की स्त्रियों का हाल इस उपन्यास में दर्शाया गया है उनका मार्मिक चित्रण मन को छू जाता है। आज भी समाज में, गाँव में ऐसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। इसी उपन्यास में छोटी सी सुनयना को जमींदारों ने सवादिष्ट व्यंजन समझकर सामूहिक भक्षण किया है, समाज में ऐसे पुरुषों की कमी नहीं है।

#### **उपसंहार :-**

मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन का विकास और निर्माण करना है। जैसे-जैसे समाज सुचारू ढंग से परिवर्तित होता है उसके पीछे निरंतर साहित्यकारों के निराले व्यक्तित्व का बड़ा ही परिश्रम होता है। लोकप्रिय मृदुला सिन्हा जी के रचना संसार में मानव जीवन के विविध रूप-रंगों का सजीव यथार्थ तथा सार्थक चित्रण मिलता है। साथ ही व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं की तमाम विसंगतियाँ, बिहार के ग्रामीण जीवन का चित्रण, विकलांगों के प्रति सामाजिक संस्थाओं और समाज का नजरिया, पंजाब में आतंकवादी समस्या का चित्रण तथा आदिविषयों की समस्याओं को उल्लेखितकर समाधान ढूँढ़ने का सफल प्रयास किया है।

#### **संदर्भ सूची :-**

1. नारी संवेदना मृदुला सिन्हा के उपन्यासों के संदर्भ में- डॉ. रमा पद्मजा वेदुला- प्रकाशक- गीता प्रकाशन रामकोट हैदराबाद- प्रथम संस्करण 2015
2. ढाई बीघा जमीन (कहानी संग्रह) -मृदुला सिन्हा-प्रकाशक-प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली- प्रथम संस्करण - 2013
3. ज्यों मेहंदी को रंग- मृदुला सिन्हा- प्रकाशक- प्रभात प्रकाशन आसफ अली रोड नई दिल्ली- संस्करण -2016
4. घरवास-मृदुला सिन्हा- प्रकाशक- ज्ञान गंगा चावड़ी बाजार दिल्ली- संस्करण- 2016

मो. नं. - 9229059941

Email- somyam092@gmail.com



## वैश्वीकरण और हिन्दी भाषा

डॉ. हेमा कृष्णन

एसोसिएट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, एतिराज कॉलेज फॉर विमेन, चेन्नई – 600008

भाषा भावों की वाहिका और विचारों की माध्यम होती है अतएव किसी भी जाति अथवा राष्ट्र की भावोत्क्रष और विचारों की समर्थता उसकी भाषा से स्पष्ट होती है। जब से मनुष्य ने इस भूमंडल पर होश संभाला है तभी से भाषा की आवश्यकता रही है। भाषा व्यक्ति को व्यक्ति से और राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती है।

भाषा वहीं जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीय द्वारा बोली जाती है। यह समस्त भारत के आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक संपर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है। भारत की मूल भाषा तथा हमारी संस्कृति की आन, बान, शान और दुनिया की प्राचीनतम भाषाओं में से एक भाषा हिन्दी है। हिन्दी हम भारतियों की पहचान है। हिन्दी भारत के अलावा नेपाल, मौरिशियस, फिजी, गयाना, सूरीनाम जैसे देशों में बहुयत में बोली जाती है। हिन्दी हर कोई सीख सकता है, यह एक सरल भाषा है। यह भाषा एक ऐसी भाषा है जो भाव को भी प्रकट कर सकती है। हिन्दी एकता का प्रतीक है। हिन्दी भारतियों को एक सूत्र में बांधती है और एक समूहिक पहचान दिलाती है।

भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिए। इस कारण हिन्दी दिवस के दिन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिन्दी का ही उपयोग करें। हिन्दी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व हिन्दी दिवस भी मनाया जाता है। हिन्दी ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है। हिन्दी से अर्जन ज्ञान विशेष की प्राप्ति के और विशिष्ट सेवा क्षेत्रों में कौशल निपुणता एवं प्रावीण्य प्राप्त करने के लिए किया जाता है। हिन्दी का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान के नूतन क्षेत्रों में भाषा के माध्यम से जुड़ना है। नए प्रयोजनों से जुड़ने का एक सरल-सा माध्यम है जिससे अपार ज्ञान की प्राप्ति होती है। हिन्दी भाषा के समस्त मानक को समेटे हुए है जिससे हमें ज्ञान की असीमित प्राप्ति होती है। हिन्दी हमारे स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। आज दुनियाभर में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में हिन्दी तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। आज हिंदी केवल भारत की भाषा ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अवतरित हुई है।

आज बहुराष्ट्रीय और देशी कंपनियों की लगभग सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक पहुँच रही हैं। वैश्वीकरण में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों ष्ट से हिंदी की भूमिका बढ़ी है। वैश्वीकरण एक ऐसा कनखजूरा है जिसके बावन हाथ हैं, वर्तमान जीवन का कोई पहलू कोई कोना इससे अछूता नहीं है। 90 के दशक में भारत में उदारीकरण, बाजारीकरण और भूमंडलीकरण की प्रक्रिया अपने साथ संचार क्रांति लेकर आया। सच है कि 'विज्ञापन की हिन्दी' सहज ही

लोगों के दिल में जगह बना लेती है लेकिन यह भाषा वैश्वीकरण के साथ फ़ैल रही उपभोक्ता संस्कृति की है विमर्श की नहीं। इस भाषा में लोक राग और रंग नहीं है जहाँ से हिन्दी अपनी जीवन शक्ति पाती रही है।

भारत का उदात्त एवं प्राचीन दर्शन 'वसुदैव कुटुंबकम्' सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार, एक इकाई के रूप में देखने समझने व जीने की प्रेरणा देता है। सब मिलकर रहे और इस विश्व समाज को यह अस्तित्व के साथ शांतिमय रूप में जिये। स्पष्टतः ही यह कल्याणकारी दर्शन समूची मानव जाति को सहज व स्वाभाविक रूप से पूरी दुनिया से जुड़ने, जोड़ने का संदेश देता है। लेकिन जिस वैश्वीकरण, जिसका नवीनतम घटनाक्रम विश्व व्यापार संगठन है, की अवधारण उक्त भावना से नितांत रूप से भिन्न है। अवधारण का किसी प्रकार की कल्याणकारी मानवीय भावना से कुछ लेना देना नहीं है। विश्व व्यापार संगठन के इस दौर से अति भौतिकता और समृद्ध की इस अंधी दौड़ में आपस में सुख-दुख बाँटने की उदात्त भावना का नितांत अभाव है। सोच इस प्रकार केन्द्रित और सीमित है कि हम अपने व्यापार में कैसे सफल हो सकते हैं, अधिकाधिक लाभ कैसे कमा सकते हैं।

वैश्वीकरण ने भौतिक जगत की दूरियों को मिटाया है। वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिक विकास, कम्प्यूटर, फ़ैक्स, इंटरनेट और ई-मेल के इस युग ने हमारे सोच-विचार और विकास के सारे मानदंड बदल दिए हैं। आज पिछड़ा हुआ वह है जिसके पास भले ही ज्ञान व संसाधनों का भंडार है परंतु उनके आधुनिकतम ढंग से उपयोग करने का अभाव है। वैश्वीकरण को लेकर भाषा के परिप्रेक्ष्य में भी यही बात है। आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा नहीं है जिसका अपूर्व एवं उल्लेखनीय इतिहास है, साहित्य है और संस्कृति की उज्ज्वल परंपरा है, बल्कि वह भाषा समृद्ध है जो वर्तमान परिवेश में अधिक अनुकूल और उपयोग में लायी जा रही है, भले ही इसके पीछे उनके विभिन्न राजनीतिक व अन्य समीकरण हो।

विश्व व्यापार संगठन के इस युग में सभ्यता और संस्कृति की उज्ज्वल परंपरा की और प्राचीनतम भाषा संस्कृत विरासत वाली विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की राजभाषा हिन्दी है। विश्व व्यापार संगठन की प्रक्रिया वैश्वीकरण से क्या हिन्दी का दुनिया में अधिकाधिक प्रसार होगा? क्या देश-विदेश में यह विज्ञान की भाषा बनेगी? क्या यह विश्व व्यापार संगठन में व्यवहृत अन्य भाषाओं के तरह समाप्त होगी? ऐसे सवालों का मूंह तोड़ जवाब देते हुए आज विश्व स्तर पर हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में अपना परचम लहरा रही है।

हिन्दी भाषा का भूमंडलीकरण की दृष्टि में विचार करने के लिए भारत का विश्व की अन्य अर्थ व्यवस्था से तुलनात्मक अध्ययन करना समीचीन होगा। आज भारत विश्व में कॉटन तथा कॉटन यार्न का उत्पादन करने वाला तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत, विस्तृत दस्तकारी और पारंपरिक फ़ैब्रिक्स तथा डिजाइन की समृद्ध भारतीय फ़ैशन उद्योग द्वारा प्रदर्शित की गई जिसने अपनी अमिट छाप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छोड़ी है। भारत को देश में ही जिनेरिक औषधियों तथा टीको की व्यापक रूप में उपलब्धता के कारण अपेक्षाकृत कम लागत वाली स्वस्थ प्रणाली का लाभ प्राप्त है। यह देश विश्व में विश्वस्तरीय और लागत किफायती डॉक्टरों इलाज के लिए तेजी से एक पसंदीदा गंतव्य बन रहा है। भारत मात्रा की दृष्टि से चौथे और मूल्य की दृष्टि से तेरहवें वैश्विक स्थान से साथ विश्व में औषधियों के सबसे बड़े उत्पादक देश के रूप में उभरा है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। इसका सकल देशी उत्पाद में 25 का तथा कुल निर्यात में लगभग 12 का योगदान है। कृषि की अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में अग्रगण्य होने की सबल संभावना है। उक्त सभी तथ्य इस ओर इंगित करते हैं कि भारत विश्व में एक आर्थिक शक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है। वैश्वीकरण से 'विज्ञापनी हिन्दी' का विकास और सर्वरन ही रहा है। भारत की 100 करोड़ से अधिक की जनसंख्या में 18 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी है।

30 करोड़ लोगों को इसका कार्यसाधक ज्ञान है। 22 करोड़ लोग ऐसे हैं जो किसी-न-किसी रूप में हिन्दी भाषा के संपर्क में आते हैं। इस प्रकार 100 करोड़ की आबादी में से 70 करोड़ लोग एक भाषा के व्यवहार से जुड़े हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत में 30 करोड़ का एक मध्यवर्गीय उपभोक्ता बाजार सहज रूप से विकसित हो चुका है और इस वर्ग तक पहुँच के लिए हिन्दी और भारतीय भाषाएँ विशेष कारगर माध्यम बन रही हैं।

जहाँ तक हिन्दी भाषा या रचनात्मक हिन्दी की बात है वह गुणवत्ता एवं मात्रा की दृष्टि से विश्व स्तरीय और समृद्ध है किन्तु विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इन सभी भारतीय भाषाओं की उपलब्धि बहुत उल्लेखनीय नहीं कही जा सकती है, बावजूद इसके कि भारत सरकार तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने लगभग 8 लाख शब्दों को पारिभाषिक शब्दों के रूप में जुटाया है। तेजी से बदलते हुए संसार के सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप तथा परस्पर आदान-प्रदान के फलस्वरूप काफी गहराई तथा प्रभावित हो रही भारतीय संस्कृति के समस्त तत्वों की अभिव्यक्ति हेतु हिन्दी भाषा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित विषयों की अभिव्यक्ति आज अनिवार्य हो गई है।

बाजारीकरण की व्यवस्था में हिन्दी भाषा इसका माध्यम बनकर उभरी है। प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी टेलिविजन पर प्रसारित कार्यक्रम चाहे किसी भी विषय से संबंधित हों उन्हें व्यावसायिकता की दृष्टि से हिन्दी एक बहुत बड़ा क्षेत्र उपलब्ध कराती है। टेलिविजन ने इस तरह हिन्दी के भाषा वैविध्य और संप्रेषण क्षमता को सर्वथा नई दिशाएं प्रदान की हैं।

वैश्वीकरण के इस सघन और उत्कट समय में मीडिया को वर्चस्वशाली भाषा और उच्च तकनीकी विकास का स्रोत तथा आधुनिकता के मूल्यों का वाहक माना जा रहा है। यह हिन्दी का ही कमाल है कि आज राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को हम गांवों में प्राप्त कर सकते हैं समाचार पत्रों, टी.वी की विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। फिल्म के माध्यम से भी हिन्दी को वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त हो रहा है आज अनेक फिल्मकार भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका जैसे देशों के अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर फिल्में बना रहे हैं और हिन्दी सिनेमा ऑस्कर तक पहुंच रहा है। विदेशों में भारतीयों से आपसी व्यवहार के लिए वहाँ के लोग भी हिन्दी सीख रहे हैं। विदेशी हिन्दी साहित्यकारों का योगदान भी मिल रहा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी कई संस्थाएँ हिन्दी के प्रसार एवं प्रचार में जुटी हुई हैं। आज विश्व भर में करीब डेढ़ सौ से अधिक विश्वविद्यालय हिन्दी संबंधी कोर्सों का संचालन कर रहे हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है कि विदेशों के साथ हमारे सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंध विकसित हो रहे हैं। वैश्वीकरण से सभी देश एक दूसरे के साथ वस्तु और सेवाओं का विनिमय कर आर्थिक रिश्तों को बढ़ावा दे रहे हैं जिनके चलते रोजाना के कामकाज में तथा मीडिया व मनोरंजन के क्षेत्रों में निस्संदेह हिन्दी के प्रयोग व विकास की असीम संभावनाएँ निहित हैं।

Dr Hema Krishnan

Associate Professor, Dept of Hindi

Ethiraj College for Women, Chennai – 600008

Mobile number: 9789823771



# सूर्यबाला के कथासाहित्य में ग्रामीण-शहरी जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति

रेश्मा लंकेश्वर

पी.एच.डी, शोध छात्रा,

## प्रस्तावना :-

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में कई महिला लेखिकाओं ने अपने कलम के माध्यम से सामाजिक संवेदना को जागरूक किया है। जिसमें मृदुला गर्ग, मृदुला सिन्हा, नासिरा शर्मा, मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल सभी महिला साहित्यकारों ने अपने कलम के माध्यम से समाज के मूल्यों को प्रकट किया है। उन्हीं साहित्यकारों में 'सूर्यबाला' का नाम अलग ही पहचान रखता है सूर्यबाला ने 1970 से 2008 तक के तीन दशकों में कई कथा साहित्य लिखे हैं। जिनका आधार वास्तविक जीवन है। यहाँ की जिन्दगियाँ रचनाकार के मानस की कल्पनाएँ नहीं हैं। यह घटती चली आई है।

सूर्यबाला के कथासाहित्य में कोई पात्र गाँव का हो या शहर का उनकी जीवन में मूल्यों का संग्रह देखने को मिलता है। इन कहानियों में बगावतों, विद्रोहों और संघर्षों के बीच जीवनानुभव, परिवेशगत परिस्थितियों और तदनुरूप आचरण की मजबूरी या मर्यादा भी है। जहाँ ग्रामीण जीवन में जो अपनापन है वह शहरी जीवन में कहीं खो गया है। उनके लिए रिश्तों की कोई जगह ही नहीं है।

सूर्यबाला की जीवन-दृष्टि सतह पर बहते जीवन-प्रवाह की गहराई में प्रवेश करती है। सूर्यबाला जीवन के सुदृढ मानवीय आधारों पर गहरा विश्वास करती है। जटिलताओं से भरे युगबोध की उन्हें बराबर पहचान है, किंतू इसके मुकाबले खड़े जीवन मूल्यों का भरोसा भी उन्हें मिलता है।

## अल्प परिचय :-

सूर्यबाला का जन्म 25 अक्तूबर 1943 में हुआ। उनका जन्म स्थल वाराणसी है। जिसके कारण वाराणसी के मोहोल का विवेचन उनकी कथा साहित्य में मिलता है। लगभग 30 साल से ज्यादा वह साहित्य के क्षेत्र में कार्य कर चुकी है। उन्हें कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो गये हैं। उनकी कई कहानी संग्रहों पर दूरदर्शन पर एवं आकाशवाणी पर भी प्रसारित हो गयी है।

## साहित्य साधना :-

सूर्यबाला ने पाँच उपन्यास, 150 से भी अधिक कहानियाँ लिखी हैं। कुछ बाल साहित्य और व्यंग रचनाएँ लिखी हैं। उनकी अधिक से रचनाएँ पत्र-पत्रिका में प्रकाशित रह चुकी हैं।

एक और उन्होंने आधुनिक जीवन की कथावस्तु को चित्रित किया है वही कहीं उन्होंने गाँव के जीवन को भी कुशलता से चित्रित किया है।

## उपन्यास :-

1. मेरे संधि-पत्र
2. यामिनी कथा
3. सुबह के इंतजार तक
4. अग्नीपंखी
5. दीक्षांत

## कथासाहित्य :-

1. दिशाहीन
2. लोकप्रिय कहानियाँ
3. सांझवाती
4. कात्यायनी संवाद
5. पाँच लंबी कहानियाँ
6. गृहप्रवेश
7. मुँडेर पर
8. थॉली भर चाँद
9. गैर हजिरी के बावजूद
10. एक इंद्रधनुष्य जुबेदा के नाम

## व्यंग रचनाएँ :-

1. अजगर करें न चाकरी
2. धृतराष्ट्र टाइम्स
3. झगड़ा निपटारक दीतर
4. भगवान ने कहाँ था
5. देशसेवा के अखाडे में ।

## 1. दिशाहीन :-

इस कहानी संग्रह में 'मेरा विद्रोह' यह कहानी शहर में रहने वाले पिता-पुत्र के विद्रोह को दर्शाती है। पिता को अपने पुत्र की चिंता होती है। 'गुजरती हर्दें' विदेश में जाकर आए बेटे की खातीरदारी में पूरा परिवार लगा है। मगर बेटा उनको नाराज करके वापस विदेश जाता है। 'पुल टुटते हुए' यह कहानी आधुनिक जीवन के मूल्यों पर प्रकाश डालती है। 'दिशाहीन' में गाँव से आए सीधे-साधे युवक चमक दमक की दुनिया में खो जाते हैं इसका चित्रण किया है।

## 2. लोकप्रिय कहानियाँ :-

'हाँ लाल पलाश के फूल, नहीं ला सकूँगा' इस कहानी में विदेश में पढ़ाई कर के गाँव में लौटे युवक की मनोदशा का चित्रण किया है। गाँव के लोगो के विचार चित्रित किए हैं। गाँव की मानसिकता को बदलना चाहता है। 'कनाडा से शिक्षा प्राकृत कर लौटा हुआ मैं भी रूढियों की गलित मानसिकता में दबा रहा तो कर चुका शापमुक्त उन होठों को। नहीं उठाना होंगा- एक ठोस कदम। 'न किन्नी न' यह कहानी शहरी संस्कृति रहन-सहन उनके स्वार्थ विचारों को दर्शाती है। वही गाँव में रहनेवाली किन्नी सहनशील संस्कारशील लड़की है। जो मौसी के आने से पहले तार मिलने के बाद ही वह तैयारी में घर की साफ-सफाई में जुटती है। 'दो-तीन दिनों में घर धो-रगड़कर साफ हो जाता, गुसलखाने में फिनाइल की बोतल रख दी जाती और भैया आधे दिन की छुट्टी लेकर स्टेशन पहुँच जाते। इतना आदर सन्मान किया जाता है, कि, शहर के लोग खुश रहे। 'तोहफा' यह कहानी शहरी संस्कृति को दर्शाती है। जिसमें बबलू के बर्थ डे के दिन उसके पिताजी के कंपनी के सबसे बड़े ऑफिसर को बुलाते हैं। जो एक बदमिसाज आदमी है। उसने डिंग किया है। तमिज नाम की कोई चीज नहीं है। बबलू दुखी हो जाता है। कि उसके सारे दोस्त भी वहाँ से चले जाते हैं। वह मम्मी से कहता है कि, 'मम्मी अज्जू भी जा रहा है।' धीरे-धीरे उसके सारे लोग चले जाते हैं। यह देखकर वह रोते रोते ही सो जाता है। 'रमन की चाची' यह कहानी गाँव के पुराणे रिती-रिवाजों पर प्रकाश डालती है। चाची को पैरो में चोंट आती है। परिवार के लापरवाही के कारण वह चोंट नासुर बन जाती है। जिसका परिणाम चाची मर जाती है। 'बाउजी और बंदर' इस कहानी में गाँव रहनेवाले बुर्जग व्यक्ति बाउजी जो गाँव में खेती-बाड़ी देखते हैं। शहर में उनका बेटा, बहु और पोते हैं। बाउजी को परिवार की याद आती है। बेटे को उनकी कोई फिक्र नहीं है। गाँव के लोग दयालु होते हैं। वह बंदरो को भगाना चाहते नहीं हैं। एक दिन उनका पोता उनसे कहता है- 'अब तो आप अपने गाँव चले जाएँगे ना? क्यों बाउजी ने कहाँ। 'क्यों कि आप तो बंदरों को भगा ही नहीं पातेँ उनसे डरते हैं। बुर्जग व्यक्ति को परिवार का बोझ समझा जाता है। 'दुज का टिका' इस कहानी में शहर में मध्यमर्गीय परिवार की महिलाएँ भी नौकरी करती हैं। इसका चित्रण किया है। कुक्की बुआ से कहती है- 'रीमी भाभी काहाँ है। बुआ कहती है कि, 'कारखाने में, स्कूल की सर्विस छोड़ दी है। यहाँ तनख्वाह काफी ज्यादा है न। मगर बुआ उसकी सर्विस से काफी नाराज है। वह कुक्की से कहती है- और यह

नौकरी न करके वह बिन्नी को ज्यादा बहुमूल्य उपहार दे सकती थी। कुक्की। ज्यादा लाड-दुलार, सार-सँवार और शुभ संस्कारों का उपहार।<sup>3</sup> 'बहिश्त बनाम मौजीराम की झाडू' यह कहानी शहरी संस्ती को दर्शाती है। यहाँ गरीब को उँचे लोगों के साथ सलाम करना पड़ता है। मौजीराम झाडू मारने का काम करता है। 'माय नेम इश ताता' यह कहानी शहर में स्थित सुशिक्षित परिवार की कहानी है। तात अभी बहुत छोटी है मगर उसकी माँ शहर के अच्छे प्रेप में अडमिशन मिल जाए इसके लिए वह भरकस प्रयास करती है। तात को अपनी गाँव की दादी से लगाव होता है। वह धीरे-धीरे गाँव के संस्कारों को अर्जित करती है।

### 3. पाँच लम्बी कहानियाँ :-

सूर्यबाला की ये पाँच लम्बी कहानियाँ जीवन-सृजन की वे स्थितियाँ हैं, जो मानवीय सचों के संधान से उपती हैं। लेखिका ने इन कहानियों के माध्यम से इनसान को बचाए रखने की राह तलाशी है। घर-परिवार की देहरी के माध्यम से उस मानवीय संवेदना की जगाने की कोशिश की है। जो जीवन सत्त्यों के निर्माण में सक्षम है।<sup>4</sup> 'भुखण्ड की औलाद' यह कहानी गाँव में रहने वाले लोगों की नेकदिली को दर्शाती है। गाँव का बैजीनाथ शहर में रहता है। शहर के लोग उसका मजाक बनाते हैं। एक दिन वह कहता है कि, यहाँ की बोलचाल समझ नहीं आती, बहन जी। 'बस यही बात है। वह कहता है 'सब लोग इंग्लिश बोलते हैं ना।'<sup>4</sup> 'अनाम लमाहों के नाम' इस कहानी में नगर में रहने वाले मध्यम वर्गीय परिवार की मानसिकता को दर्शाया है। जो पड़ोसी की सहायता करना उचित नहीं समझते।

### 4. मुँडेर पर :-

मानवीय संवेदनाओं को झकझोरकर रख देने वाली प्रेम, विश्वास, करुणा और विद्रुपता के धुपछाँही अहसासों की मर्मस्थली कहानियाँ हैं। 'फरिश्ते' कहानी बड़े लोगों की कहानी है जो स्वार्थी मक्कार होते हैं। जो छोटे लोगों को लुटते हैं और उन पर ऐहसान जताते हैं। उनकी नजर में वह खुद को उनका फरिश्ता मानते हैं। मटरूआ सोचता है कि, बड़े लोगों के बच्चों से जैसा भी बर्ताव सहना पड़े सहना होगा। इससे बीबीजी और माँ भी खुश हो जाती है। माँ उसे कहती है- " बस ऐसे ही रहा कर तो तेरी-मेरी दोनों की जिंदगी का बेड़ा पार लगा जाएगा।"<sup>5</sup> 'वे जरी के फुल' यह कहानी रूक्की की है। जो बचपन में अनाथ हो जाती है। जो अविवाहित रह जाती है। मौसी बताती है- शादी? कहाँ हुई उसकी। 'न माँ-बाप, ना दान-देहज, न कोई उतना देखने-ढुँढने वाला ही..... लड़की लाख-अच्छी हो-किसी-न-किसी जोर पर ही तो हो पाती है शादी। है कि, नहीं।

### 5. थाली भर चाँद :-

'पराजित' कहानी शहरी मूल्यों को दर्शाती है। कंपनी में काम करते समय काफी तनावों का सामना करना पड़ता है। अपने ऊपर के अधिकारी को खुश रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। जिसका परिणाम पति-पत्नी में तनाव की स्थिति पैदा होती है। जैसे बंसल की पत्नी उसे कहती है- 'लेकिन हमारे बीच अचानक मेरा घर, मेरा परिवार कैसे? 'पडाव' कहानी स्वार्थी शेलेंद और उसकी पत्नी की है। जो शहर में रहते हैं। जो काम का बहाना करके गाँव में बुढ़ा-बुढ़ी के यहाँ रहकर उनके भोलेपन का फायदा उठाते हैं। गाँव के लोग नेकदिल होते हैं। उनकी कूटिलता को वे लोग समझ नहीं पाते। 'संताप' कहानी माँ की है। जिसने अपनी बच्ची खो दी है। मातम के माहोल में लोगों की प्रतिक्रियाएँ हैं। इसका बड़ा ही संवेदनपूर्ण वर्णन किया है। 'राख' कहानी ग्रामीण समाज में फैली अंधश्रद्धा के प्रति जागृत करती है। माँ मंदिर से लौटते समय बाबाजी से भभूति लेती है। भभूति पर बड़ी श्रद्धा है माँ की। मगर भभूति कम देने पर वह बोलती है कि- 'थोड़ी और मिलेगी महाराज, अब परिवार बढ़ गया है ना, सबमें थोड़ी-थोड़ी बाँट लूँगी।' 'सिर्फ मैं' यह कहानी 'व' में लिप्त रहने वालों की है। मेघा अपने पति मोहन की सभी बातों को उलटा घुमाती रहती है। और बाद में उससे पूछती है- उसे बुरा तो नहीं लगा। जब वह हर बात में ठोंकर

के सिवा कुछ देती ही नहीं। मेघा- 'सचमुच, तुम मुझे घर-गृहस्थी में पारंगत देखना चाहते हो'? पति मोहन- हाँ, हाँ बेशक, उसमें बुरा क्या है? दुनिया की लाखों-करोड़ों..मेघा- 'पालतु दुमछल्ली औरतों की कतार में मुझे बिठा देना चाहते हो ना?' 'कहाँ तक' कहानी अति महत्वाकांक्षिणी स्त्री के है। जो अधेड़ उम्र की होते हुए भी चकाचौक में डुबी है। सुख और भोग सबके लिए होते हैं। ऐसा वह मानती है। शहर में रहने के कारण उसके विचारों पर आधुनिक जीवन का काफी प्रभाव है। मगर नयी पिढी को शॉर्ट हेअर वाली मम्मी पसंद नहीं है। उनको बुआ की पारंपरिक वेशभुषा पसंद है। गाँव में सही उम्र होने के बाद शादी के बारे में माता-पिता लड़की के प्रति अधिक सचेत हो जाते हैं। मिनर्वा देखकर फुफा जी कहते हैं- 'अरे, शची से पहले तो इसके लिए ही फोटो इकट्ठी करनी पड़ेंगी। पता नहीं, इसके मम्मी-पप्पा कैसे सो रहे हैं?' 'खोह' कहानी प्यारी पत्नी की मृत्यु तक को अप्रत्यक्ष आत्मप्रशंसा या आत्मदंभ का प्रतिक है।

## 6. सांझवाती :-

'खुशहाल' कहानी कारखाने में काम करने वाले लोगों की है। जिसमें मिल बंद होनेवाली है। यह बात जोर पकड़ती है। इस प्रकार वर्णन 'दहशत की एक लपलपाती छुरी। कुछ लाचारों चेहरों की आसमान की और उठी उँगली। उसकी मरजी। उपर वाले मालिक का कहर, नीचे वाले मालिकों हे हवाले से'। 'विजेता' यह कहानी शहर में रहने वाले लडके की है। जो यहाँ काम करता है मगर उसे पैसे नहीं दिया जा रहा है'। इस पर वह अपने मित्र सुदामा से कहता है- 'लोभ बड़ा छली होता है आर सुदामे। जित्ती माया उता लोभ, जित्ती संपदा, उता लोभ'। 'गोबर चच्चा का किस्सा' यह कहानी गोबर चाचा की है जो बच्चों को लेबिनचुस की गोली फोकट में खाने के देता है। जिसके कारण बच्चें उसे 'चच्चा' कहते हैं। 'आखिरी विदा' यह कहानी में विदेश में रहने वाला बेटा पुरे सात साल बाद अपने माता-पिता से मिलता है। वह साढे तीन दिन रहता है। जिससे उसके माता-पिता दुखी अवश्य होते हैं। मगर एक दूसरे को सांत्वांना देते हैं कि, 'घबराओं नहीं फिर से कुछ ही सालों में लौटकर आएगा न, जैसे इस मगर माँ सोचती है.....नहीं और कितनी बार लौटाएँगे हम उसे और कहाँ तक....'। 'सुनंदा छोकरी की डायरी' यह कहानी ऐसे लडकी है जो गरीब है। और अमिर लोगों के यहाँ काम करती है। गरीब होने के कारण उसे बहुत अपमानित होना पड़ता है। अतः में माँ के मृत्यु के पश्चात वह फिर घर काम करने लगती है। यहाँ अमीर लॉग गरीबों की इज्जत नहीं करते हैं। उनका मजाक करते हैं। 'आदमकद' कहानी ऐसे स्त्री की है जो बदसूरत से शरीर होने कारण हर कोई उसे अपमानित करता है। मगर वह बड़ी मेहनती है। वह मेहनत करके अपने पति और बच्चें को लालन-पालन करती है। मगर लाजवंती को अपने मामा के प्रति नाराजी है। क्योंकि, मामी यहाँ दिनभर काम में व्यस्त रहती है और मामा खटोली पे ऊँघते बैताल पचीसी पढ़ता है। 'दिशाहीन' कहानी ऐसे युवक की है, जो शहरी संस्कारों में घुल मिलने के कारण कई पैसा खर्च करता है। वह उसके माता-पिता पैसे भेजने में असमर्थता प्रकट करके उसे गाँव वापस बुलाते हैं। मगर वह हॉस्टेल छोड़कर कहीं और चला जाता है।

## 7. गैर हाजिरी के बावजूद :-

'कौमुदी' कहानी पारंपरिक रूढ़ियों को विरोध करनेवाली परिवार के मर्जी के मर्जी के खिलाफ जाकर शादी करनेवाली लड़की की कहानी है। जहाँ लड़की परम्पराओं ने के नाम पर नुमाइश की वस्तु बनती है। अपने विद्रोह को व्यक्त करती है। समाज में ऐसे कई लड़कियाँ हर बार-बार परंपरा के नाम पर शर्मसार होती हैं। 'गीता चौधरी का आखिरी सवाल' एक बेहद मार्मिक कथा है। लड़कियाँ हर बार बंधनों को निभाने के लिए अपने पढ़ाई-लिखाई को परिवार के नाम पर कुर्बान करती हैं। समाज में ऐसी कई गीताएँ हैं। 'सनो समित, सुनो सुलभ' कहानी ऐसे परिवार की है जो आत्मकेंद्रित पति और बेटा स्त्री को छोड़कर विदेश जाकर रहते हैं। वह स्त्री जो पत्नी और एक माँ भी है। उसकी भावनाओं को समझना कोई नहीं चाहता



है।

### समापन :-

लगभग सूर्यबाला के कथा साहित्य में ग्रामीण एवं शहरी जीवन चित्रित हुआ है। उनकी भाषा शैली में ग्रामीण बोली एवं शहर की बोली में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है। उनकी कहानी रचना में कथा-कथन के प्रवाह में दर्ज कराई जाती रचनाकार की सहमति-असहमतियाँ नहीं हैं। वह समाज के बदलते मूल्यों, संवेदना को दर्शाते हैं। साथ ही पात्रों की पीड़ा, अंतर्द्वंद्व, संवेदनाओं को चित्रित किया है। शहर हो तो शहर के फॅशन को दर्शाया है। गाँव हो तो रिश्ते नातों का चित्रण भी उतनी ही तन्मयता से किया है। उनका कथासाहित्य पढ़नेवाला यह निश्चित कहता है कि, वह एक संवेदनपूर्ण, भाषिक विशेषताओं को समझने वाली, जीवनानुभव को पहचानने वाली, परिस्थितियाँ और तद्नुरूप आचरण की मजबूरी या मर्यादा को समझने वाली उत्तम साहित्यकार है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में किसी के भी प्रति उपेक्षा नहीं छोड़ी है। इन्होंने हर पात्रों की संवेदना को पकड़ा है और लिखा है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सूर्यबाला 'सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ' प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण, 2015 पृ. 22, 55, 75, 122, 148.
2. सूर्यबाला 'पाँच लंबी कहानियाँ' ग्रंथ अकादमी, नयी दिल्ली, संस्करण, 2020, पृ. 43
3. सूर्यबाला 'मूँडेर पर' प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम, 2020, पृ. 27, 69
4. सूर्यबाला 'थाँली भर चाँद' सतसाहित्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2020, पृ. 71, 118, 126
5. सूर्यबाला 'साँझवाती' ग्रंथ अकादमी, नयी दिल्ली, संस्करण, 2015, पृ. 8, 31, 77

मो. 919657667011,

ईमेल : reshmalankeshwer24@gmail.com



## वर्तमान परिवेश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता

प्रो. डॉ. एकता भाटिया

बी. एड. विभाग, गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद।

रविन्द्र कुमार

शोध छात्र, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली।

भारत में शिक्षा का इतिहास प्राचीन समय से रहा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख वैदिक काल के अंतर्गत किया जाता है। वैदिक काल में शिक्षा का आधार 'क्रियाएं' थी। वैदिक क्रिया ही शिक्षा का प्रमुख आधार थी। वैदिक काल में गुरुकुल प्रणाली थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आवासीय शिक्षा प्रणाली का रूप थी, जहां छात्र, शिक्षक या आचार्य के घर अर्थात् गुरुकुल में रहते थे जो शिक्षा का केंद्र हुआ करता था। इस शिक्षा प्रणाली का आधार अनुशासन और मेहनत थे। छात्रों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने गुरुओं से सीखें और इस जानकारी को जीवन में इस्तेमाल भी करें। इसमें शिष्य और गुरु का सम्बन्ध बहुत पवित्र होता था और सामान्यतः इसमें किसी भी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता था। परन्तु शिष्य गुरु को उनके सहयोग के लिए गुरु-दक्षिणा अवश्य दिया करते थे। वैदिक काल में मानव सभ्यता को कर्म के आधार पर चार वर्णों में विभाजित किया गया था तथा वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ग के बालकों का गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश क्रमशः 8, 10 व 12 वर्ष की आयु में होता था। बालकों का सर्वप्रथम उपनयन संस्कार किया जाता था।

इसमें बालक का मुंडन करने के पश्चात् गुरु के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था और 25 वर्ष की आयु तक गुरु की शरण में रहकर शिक्षा ग्रहण करने तथा गुरु की सेवा और आज्ञा का सदैव पालन करने की शपथ ग्रहण करायी जाती थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में तीनों वर्णों के बालक एक साथ रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे तथा भ्रात रूप में व्यवहार करते थे। गुरुकुल वर्णों में ऋषियों के निवास स्थल होते थे, जिन्हें आश्रम कहा जाता था। इन आश्रमों को राजाओं का संरक्षण प्राप्त होता था, राजा आश्रम की देखभाल तथा आर्थिक व्यवस्था के संचालन हेतु कुछ ग्रामों को इनके अधीन कर दिया करते थे। इसके अतिरिक्त छात्र भी शिक्षा ग्रहण करने के अलावा आश्रम के विभिन्न कार्यों में सहयोग करते थे, जिसमें भिक्षा माँगकर लाना भी सम्मिलित था। गुरुकुल आवासीय विद्यालयों की भांति प्रकृति की गोद में एकांत वातावरण के साथ शिक्षा प्रदान करने के उपयुक्त स्थान होते थे। गुरुकुलों से शिक्षा पूर्ण करने के बाद छात्र अपनी-अपनी वर्ण व्यवस्था के अनुसार अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते थे। शिक्षा पूर्ण हो जाने पर गुरु, छात्र की परीक्षा लेते, दीक्षा देते और समावर्तन संस्कार संपन्न कर उसे उसके परिवार में भेजते थे। छात्र, गुरु से विदा लेते समय अपनी सामर्थ्य के अनुसार गुरु को दक्षिणा देते थे, किंतु निर्धन विद्यार्थी गुरु दक्षिणा से मुक्त भी कर दिए जाते थे।

**गुरुकुल :-**

वह स्थान या क्षेत्र, जहाँ गुरु का कुल अर्थात् परिवार निवास करता था, गुरुकुल कहलाते थे। प्राचीन काल में शिक्षक

को ही गुरु या आचार्य मानते थे और वहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उसका परिवार माना जाता था। वेदों के अनुसार गुरुकुल के छात्रों को प्रवेश के लिए आठ साल का होना अनिवार्य था और पच्चीस वर्ष की आयु तक यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त और ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था। भारतवर्ष के गुरुकुल आश्रमों के आचार्यों को 'उपाध्याय' और प्रधान आचार्य को 'कुलपति' या 'महोपाध्याय' कहा जाता था। रामायण काल में गुरु वशिष्ठ का आश्रम था, जहाँ राजा दिलीप तपस्या करने गये थे और विश्वामित्र को ब्रह्मत्व प्राप्त हुआ था। इसी प्रकार पाण्डवों ने ऋषि द्रोण के यहाँ रह कर शिक्षा प्राप्त की थी।

**वैदिक काल के गुरुकुलों के अंतर्गत तीन प्रकार की शिक्षा संस्थाएँ होती थी :-**

1. **गुरुकुल :-** जहाँ विद्यार्थी आश्रम में गुरु के साथ रहकर विद्या अर्जन करते थे।
2. **परिषद :-** परिषदों में विशेषज्ञ आचार्यों द्वारा शिक्षा दी जाती थी।
3. **तपोस्थली :-** तपोस्थलियों में बड़े-बड़े शास्त्रार्थ होते थे और सभाओं तथा प्रवचनों से ज्ञान अर्जन होता था। नैमिषारण्य ऐसा ही एक आश्रम था।

तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वलभी के विश्वविद्यालय गुरुकुलों के ही विकसित रूप थे।

**गुरुकुल शिक्षा पद्धति की विशेषतायें :-**

प्राचीन भारतीय शिक्षा गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित थी। इस प्रणाली में निम्न विशेषताएँ थी :-

1. गुरुकुल में दी जाने वाली शिक्षा वेदों पर आधारित थी।
2. गुरुकुल, ऋषि अथवा आचार्य के वनों में एकांत निवास स्थान होते थे जहाँ उनका परिवार व शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र रहते थे।
3. गुरुकुल में शिक्षा का आरम्भ उपनयन संस्कार से होता था तथा शिक्षा पूर्ण होने पर समापवर्तन संस्कार किया जाता था।
4. गुरुकुल में शिक्षा जीवन आधारित थी। छात्रों को व्यावहारिक विषयों का ज्ञान दिया जाता था और आध्यात्मिकता पर बल दिया जाता था।
5. गुरुकुल में शिक्षा प्रदान करने का माध्यम मौखिक था। बालक को श्रवण, मनन और स्मरण पर बल दिया जाता था।
6. छात्र ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सादा जीवन व्यतीत करते थे।
7. गुरुकुलों में वैदिक साहित्य, खगोल शास्त्र, अस्त्र-शस्त्र तथा संस्कृत आदि की शिक्षा दी जाती थी।

**गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य :-**

गुरुकुल शिक्षा पद्धति कई उद्देश्यों पर आधारित थी। इसका मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति के लिए तैयार करना तथा ज्ञान विकसित करना और शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करना था। इस शिक्षा प्रणाली से मिले निर्देश छात्रों को अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने में मदद करते थे। इस तरह से छात्र को जीवन के कठिन समय में भी खुद को दृढ़ता से खड़े रहने में सहायता मिलती थी। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं :-

- छात्रों का सम्पूर्ण विकास।
- छात्रों के व्यक्तित्व का विकास।
- छात्रों में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करना।
- प्रकृति और समाज के प्रति जागरूकता लाना।
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान और संस्कृति को आगे बढ़ाना।

- **जीवन में आत्मनियंत्रण और अनुशासन का विकास।**

**गुरुकुल प्रणाली का महत्व :-**

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में गुरुकुलों का प्रमुख ध्यान छात्रों को एक प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा प्रदान करने पर था, जहाँ छात्र आपस में भाईचारे, मानवता, प्रेम और अनुशासन से एक साथ रहते थे। सभी जरूरी ज्ञान जैसे भाषा, विज्ञान, गणित आदि विषयों में समूह चर्चा, स्व-शिक्षा आदि के माध्यम से एक-दूसरे को दिया जाता था। इसके साथ-साथ कला, खेल, शिल्प, गायन तथा चिकित्सा पर भी पूर्ण ध्यान दिया जाता था, जिससे छात्रों में बौद्धिकता और चिन्तनशीलता का विकास होता था। योग, ध्यान, मंत्र-जाप आदि गतिविधियों के द्वारा छात्रों में सकारात्मकता और मन की शांति पैदा कर उन्हें स्वस्थ बनाया जाता था। व्यावहारिक कौशल प्रदान करने के उद्देश्य से छात्रों को दैनिक कार्यों को खुद करना भी अनिवार्य था। ये सभी गतिविधियाँ मिलकर छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में मदद करती थीं, जिससे उनमें आत्मविश्वास, अनुशासन की भावना और बुद्धिमत्ता की वृद्धि होती थी। जो आज भी भावी संसार का सामना करने के लिए आवश्यक हैं।

**वर्तमान में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता :-**

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अधिकांश लोग काफी विचित्र और एक असंरचित अवधारणा मान सकते हैं। एक शिक्षक के साथ रहकर लिखित पाठ्यक्रम की अनुपस्थिति में एक निर्धारित दिनचर्या का पालन करते हुए शिक्षा प्राप्त करने का विचार लोगों को आश्चर्य चकित कर सकता है कि वास्तव में कोई बालक कैसे कुछ सीखेगा? हालाँकि, आधुनिक समय के शिक्षाविदों ने प्राचीन भारतीय शिक्षा की ओर देखा और महसूस किया कि गुरुकुल प्रणाली में कई महत्वपूर्ण शिक्षण दृष्टिकोण हैं जिन्हें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शामिल करके उसे उपयोगी बनाया जा सकता है। गुरुकुल प्रणाली की महत्ता समझने के लिए निम्नलिखित तर्कों की मदद आवश्यक है-

**आधुनिक बुनियादी ढाँचा :-** छात्रों की शिक्षा मजबूत तभी हो सकती है, जब व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित शिक्षा दी जाए। परन्तु दुर्भाग्य से हमारी आज की शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान और रटने में विश्वास रखती है, जो पर्याप्त नहीं है। गुरुकुल प्रणाली व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित थी, जिसमें छात्रों को जीवन के सभी क्षेत्रों में तैयार किया जाता था। वर्तमान समय में छात्रों को बेहतर व्यक्ति बनाने के लिए बुद्धिमत्ता और आध्यात्मिक जागरूकता के क्षेत्र में शिक्षण के साथ-साथ शिक्षाविदों और पाठ्येतर गतिविधियों का एक सही संयोजन बनाकर इसे प्रयुक्त किया जा सकता है।

**समग्र शिक्षा :-** वर्तमान समय की शिक्षा मुख्य रूप से एक रैंक आधारित प्रणाली पर केंद्रित है, जो अधिक से अधिक अंक प्राप्त करने तथा अपने साथियों के प्रति ईर्ष्या से प्रेरित है। अति-महत्वाकांक्षी माता-पिता अपने बच्चों से अधिक से अधिक अंक अर्जित करने की अपेक्षा करते हैं तथा केवल अकादमिक प्रदर्शन से बच्चों के ज्ञान और सफलता के स्तर का आकलन करते हैं। इसके स्थान पर गुरुकुल पद्धति का अनुप्रयोग एक मूल्य-आधारित प्रणाली पर काम कर सकता है, जहाँ बालकों की विशिष्टता पर ध्यान दिया जा सकता है ताकि वे अपनी रुचि के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। यह एक अच्छे चरित्र का निर्माण भी करेगा, जो भयंकर प्रतिस्पर्धा और बढ़े हुए तनाव के स्तर से दूर है, जो आमतौर पर अवसाद की ओर ले जाता है।

**शिक्षक और छात्र के बीच संबंध :-** वर्तमान में शिक्षक-छात्र संबंध एक गम्भीर समस्या बनते जा रहे। आज समय की आवश्यकता यह सुनिश्चित करने की है कि शिक्षक और छात्र के संबंध मित्रवत हों और उनके मध्य एक दूसरे के प्रति सम्मान बना रहे। ऐसा तब होता है, जब बालक सुरक्षित महसूस करते हैं और देखभाल करने वाले पर भरोसा करते हैं, तो वे उसी का अनुकरण करने की भावना रखते हैं। यह विशेषता गुरुकुल प्रणाली में मौजूद थी, जिसके माध्यम से वर्तमान शिक्षा प्रणाली

में विभिन्न गतिविधियों, प्रशिक्षण कार्यशालाओं की सहायता से शिक्षक और छात्रों के संबंधों को मधुर किया जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति व्यावहारिक जीवन पर आधारित थी, जो बालक को मनुष्य बनाने का प्रयास करती थी। वर्तमान में भी ऐसी ही शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो मानव के जीवन को सरल और सहज बना सके। आज का मानव भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए अच्छे अंकों के आधार पर अच्छी नौकरी पाना चाहता है, किन्तु इन चक्करों में पड़कर वह आत्मिक संतुष्टि से कोसों दूर हो चुका है। केवल मूल्य आधारित शिक्षा जो गुरुकुल पद्धति से सम्भव है, मनुष्य को मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति की ओर ले जा सकती है। अतः कह सकते हैं कि वर्तमान में गुरुकुल शिक्षा पद्धति की परम आवश्यकता है।

### सन्दर्भ :-

1. पाराशर, एस. एवं सिंह, डी. (2020/21)– भारतीय शिक्षा का इतिहास और विकास, एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 1-18
2. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2016) समकालीन भारत और शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्या, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 1-8
3. लाल, आर. बी. (2002-03)– भारतीय शिक्षा का विकास और उसकी समस्याएं – रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ 1-27
4. भटनागर, एस. एवं कुमार, एम. (2016) –समकालीन भारत और शिक्षा, आर. लाल., मेरठ, पृष्ठ 119-132
5. गुप्ता, आर. एवं सिंह, आर. के. (2018/19)– समकालीन भारत और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ 66-77
6. <https://leverageedu.com/blog>
7. <https://www.mehtvta.com/essay&on&prachin&shiksha&pranali/>
8. <https://hi.wikipedia.org/wiki>
9. <https://www.divyamanavmission.org/index.php/current&affairs/254&siksha>



## Evaluation of heritability and genetic progress in 24 genotypes of bread wheat (*Triticum aestivum* L.)

**Manish Kumar**, Assistant Professor,

Department of Genetics & Plant Breeding, Hariom Saraswati (P.G) College, Dhanauri (Haridwar), Uttarakhand

**Shiv Kumar**, Associate Professor,

Department of Genetics & Plant Breeding, R.M.P. (P.G.) College, Gurukul Narsan (Haridwar), Uttarakhand

**Arjun Singh**, Assistant Professor,

Department of Genetics & Plant Breeding, Roorkee College Engineering, Roorkee (Haridwar), Uttarakhand

### Abstract :-

The present study was conducted to estimate heritability and genetic advance in 24 genotypes of wheat for 12 quantitative characters. The mean sum of square for all 12 characters is found to be significant and PCV of all characters is slightly higher than GCV which shows little influence of environment for expression of all characters. Highest estimate of GCV and PCV were observed for character awn length, plant height and grain yield/plant. Character biological yield/plant exhibited highest heritability further followed by characters 100 grains/weight and days to flowering. Character plant height, biological yield/plant and no. of spike/plant shows high genetic advance.

**Keywords :** Wheat, Variation, Genotype, Phenotype, Genetic advance, Heritability.

### Introduction :-

Wheat is the second most produced cereal in India after rice. Its importance can be measure as, it is the first crop which is improved for high production under green revolution. After the development of dwarf high yielding genotypes breeding programmes for development of high yielding genotypes took a boost in India. The main objective of breeding of wheat is to develop genotypes which produce high yield, can perform in stress conditions, can perform well in stressful conditions, resistant to diseases, have high protein content and can mature early.

Wheat is a staple crop in many countries and hence its consumption is directly proportional to the population growth. Consumption of wheat in rural India has increased apparently due to the availability of nutritious cereal. The share of wheat in total cereals

consumption has increased from 25.43% (3.88 kg/month) in 1972-73 to 37.36 percent (4.24 kg/month) in 2009-10 (rural India) (Ramadas *et al.*, 2012)<sup>[1]</sup>. Such kind of change is also seen in urban India, a sharp rise in consumption of wheat in urban India also takes place. To meet up such rising demand of wheat and its end products there is a need to increase up the production to meet up the future demands. Since 2000, India has struggled to match that record production figure and thus faces a critical challenge in maintaining food security in the face of its growing population. The current major challenges facing future wheat production in India are increasing heat stress, dwindling water supplies for irrigation and growing threat of new virulence of disease such as wheat rusts (Joshi *et al.*, 2007)<sup>[2]</sup>. To tackle such challenges there is a need of new genotypes which are resisted to such stress and have high yielding capacity to meet up future demands.

The development of new and high potential genotype depends upon variability present among the germplasm, higher the variability more would be the chances of genetic improvement of crop.

#### **Materials and methods :-**

The experiment was conducted at village Dhanauri, district Haridwar (Uttarakhand) to evaluate the 24 genotypes of wheat for 12 quantitative characters in rabi season of cropping year 2017-18. Characters viz. days to flowering, plant height (cm), no. of tillers/plant, spike length (cm), awn length (cm), no. of spikelet/spike, no. of grains/spike, 100 grains weight (gm), biological yield/plant (gm), harvest index (%), days to maturity and grain yield/plant (gm). The list of genotypes studied in the experiment is presented in form of table 1.

The genotypes in experiment were planted under randomized complete block design (RCBD) design plotting technique with genotypes planted in three replications under timely sown and irrigated conditions. In each replication two rows of a genotype is planted, length of each row was kept 2.5 metre. A sample of five plants from each replication of a genotype were taken on random basis to analyse the performance of selected traits, data for characters days to flowering and days to maturity was obtained on field only.

Parameters viz. genotypic variance ( $\sigma^2_g$ ), phenotypic variance ( $\sigma^2_{ph}$ ), genotypic coefficient of variation (GCV), phenotypic coefficient of variation (PCV), heritability percentage ( $h^2$  %) in a broad sense, genetic advance (GA) and genetic advance as percentage

of mean were calculated. Analysis of variance and genetic advance was done by following (Johnson 1955)<sup>[3]</sup>.

### Results and discussions :-

The mean sum of square for twelve characters studied in the experiment are presented in table 2. The sum of square describes the relative deviation from the mean, thus it provide the measure of variability among genotypes used in the study for each character. Mean sum of square of twelve characters shows considerable amount of genetic variability present in all genotypes for all twelve characters studied. The mean sum of square for all twelve characters is significant. Therefore, variability among all genotypes selected in the experiment is present at genotypic level. Hence, selection of these genotypes for further breeding programme would be fruitful.

In table 3, genotypic variance ( $\sigma^2 g$ ), phenotypic variance ( $\sigma^2 ph$ ), genotypic coefficient of variation (GCV), phenotypic coefficient of variation (PCV), heritability percentage (at a broad sense) genetic advance and genetic advance as percent of mean is presented. There are two kinds of variability found in expression of a character viz. genotypic variability and environmental variability, both genotypic and environmental variability sums up phenotypic variability, that is why phenotypic variability remains higher than genotypic variability. Greater the difference between genotypic and phenotypic variability greater would be the influence of environment on the expression of particular character. The highest variability (genotypic or  $\sigma^2 g$  and phenotypic or  $\sigma^2 ph$ ) was recorded in plant height (371.72 and 374.3) followed by harvest index and no. of grains/spike. While the lowest amount of variability (genotypic or  $\sigma^2 g$  and phenotypic or  $\sigma^2 ph$ ) was recorded in case of character 100 grains weight (0.24 and 0.25) (Tsegaye, D. *et al.*, 2012)<sup>[4]</sup> and (Tripathi, S. N. *et al.*, 2011)<sup>[5]</sup>.

A wide range of genotypic coefficient of variation was found among all characters. Highest GCV % was recorded in case of awn length (27.017) followed by plant height (20.962), grain yield/plant (19.497), biological yield/plant (16.330), no. of tillers/plant (14.168), spike length (12.735), harvest index (%) (11.845), 100 grains weight (10.844), no. of grains/spike (9.383), no. of spikelet/spike (7.165), days to flowering (3.114) and days to



maturity (1.885). Highest phenotypic coefficient of variation (PCV) was recorded in case of awn length (28.212) further followed by grain yield/plant (24.415), plant height (21.020), biological yield/plant (18.424), harvest index (%) (17.261), no. of tillers/plant (16.950), spike length (13.135), no. of grains/spike (11.787), 100 grains weight (11.146), no. of spikelet/spike (8.238), days to flowering (3.217) and days to maturity (1.999) (Bergale, S. *et al.*, 2001) <sup>[6]</sup> and (Dhakar, M. R. *et al.*, 2012) <sup>[7]</sup>.

Heritability in a broad sense is a genotypic portion of total variability existed. Heritability in a broad sense is also described as ratio of genotypic variance to the total variance. Heritability is a key for any breeding programme to establish desired characters in genotype to develop, it decides the suitability and strategy for the selection of character. It is a measure of the extent of phenotypic variation caused by the action of genes (Navin K. *et al* 2014) <sup>[8]</sup>. In this study heritability ranges from 47.090 to 99.455 percent. In this study the highest heritability percentage was shown by character plant height (99.455) followed by 100 grains weight (94.652), spike length (93.997), days to flowering (93.695), awn length (91.704), days to maturity (88.943), biological yield/plant (78.567), no. of spikelet/spike (75.658), no. of tillers/plant (69.870), grain yield/plant (63.766), no. of grains/spike (63.369) and harvest index (%) (47.090) (Rathwa, H.K. *et al.*, 2018) <sup>[9]</sup>.

For selection of individual genotype knowing heritability alone is not sufficient but knowledge of genetic advance is also compulsory. Heritability coupled with genetic advance provides indication of amount of genetic improvement for the selection of individual genotype. In the present study highest genetic advance was found in case of plant height (39.618) further followed by biological yield/plant (9.254), number of grains/spike (9.170), harvest index (7.448), days to flowering (5.393), days to maturity (4.940), grain yield/plant (4.445), awn length (3.857), spike length (2.597), no. of spikelet/spike (2.521), no. of tillers/plant (1.522) and 100 grains weight (0.980) (Dabi, A., 2016) <sup>[10]</sup>.

In the end the most prominent parameter of genotype which is checked, is the economic yield of a genotype. In this experiment the five highest grain yield producing genotypes are WP-710/1, TALL-2, WP-705/1, HD-3189 & PBW-343. The mean

performance of grain yield/plant and some other characters of these five genotypes is shown in table 4. Genotype WP-710/1 produces highest amount of grain yield in his experiment with grain yield/plant (21.10), days to flowering (87.0), no. of tillers/plant (7.3), spike length (10.02) and number of grains/spike (62.33) which is further followed by genotype TALL-2 with grain yield/plant (20.77), days to flowering (83.3), no. of tillers/plant (6.6), spike length (10.1) and number of grains/spike (64.33) further followed by fourth highest grain producing genotype in this study HD-3189 with grain yield/plant (16.03), days to flowering (85.0), no. of tillers/plant (6.1), spike length (10.4) and number of grains/spike (57.33). Fifth highest grain yield producing genotype in this study is PBW-343 with grain yield/plant (15.79), days to flowering (87.0), no. of tillers/plant (6.9), spike length (8.8) and no. of grains/spike (59.67).

#### **Conclusion :-**

From the findings of present study it is concluded that all genotypes used has adequate amount of variability for most of the traits. Characters namely plant height, biological yield/plant and no. of grains/spike showed high heritability with high genetic advance. Therefore, for future breeding programmes these traits should be kept at high priorities.

These are the results of only one year experiment to observe better results further testing should be done. Trials at multiple locations and different agro-ecological zones should be conducted to evaluate further results.

**Table 1. List of genotypes used in present study**

<b>Sr. No.</b>	<b>Name of genotypes</b>	<b>Sr. No.</b>	<b>Name of genotypes</b>
1.	HACS-3949	13.	PBW-530
2.	TALL-3	14.	TALL-2
3.	UP-2572	15.	DBW-6250
4.	RAJ-4422	16.	WP-710/17
5.	WP-709/17	17.	HD-3128
6.	DBW-60	18.	RAJ-4037
7.	WP-703/17	19.	PBW-660
8.	TALL-1	20.	WP-705/17
9.	PBW-590	21.	DBW-62-150
10.	DBW-730	22.	PBW-343
11.	HD-3189	23.	HD-3123
12.	C-306	24.	HD-3086 (check)

**Table 2. Analysis of variance for twelve characters studied in present study**

Sr.No.	Characters	Mean sum of square		
		Replications (df=2)	Treatments (df=23)	Error (df=46)
1.	Days to Flowering	0.347	22.343*	0.492
2.	Plant height(cm)	3.190	1117.752*	2.037
3.	No. of tillers/ plant	0.850	2.680*	0.337
4.	Spike length(cm)	0.229	5.182*	0.108
5.	Awn length(cm)	0.121	11.811*	0.346
6.	No. of spikelet/spike	1.014	6.577*	0.637
7.	No. of grains/spike	1.264	111.883*	18.075
8.	100 grains weight(gm)	0.087	0.731	0.014
9.	Biological yield/plant (gm)	7.227	84.054*	7.006
10.	Harvest index (%)	89.321	114.466*	31.190
11.	Days to maturity	1.514	20.200*	0.804
12.	Grain yield/plant (gm)	6.993	26.056*	4.149

\* Significant at 5% level of significance.

**Table 3. Estimation of coefficient of variance, coefficient of variation, heritability percentage in a broad sense and genetic advance in present study.**

Sr. No.	characters	$\sigma^2 g$	$\sigma^2 ph$	GCV %	PCV %	$h^2$ % (at broad sense)	GA	GA as % of mean
1.	Days to Flowering	7.29	7.78	3.114	3.217	93.695	5.393	6.209
2.	Plant height(cm)	371.72	374.3	20.962	21.020	99.455	39.618	43.065
3.	No. of tillers/ plant	0.77	1.12	14.168	16.950	69.870	1.522	24.397
4.	Spike length(cm)	1.69	1.80	12.735	13.135	93.997	2.597	25.434
5.	Awn length(cm)	3.80	4.16	27.017	28.212	91.704	3.857	53.296
6.	No. of spikelet/spike	1.99	2.62	7.165	8.238	75.658	2.521	12.839
7.	No. of grains/spike	31.25	49.28	9.383	11.787	63.369	9.170	15.386
8.	100 grains weight(gm)	0.24	0.25	10.844	11.146	94.652	0.980	21.732
9.	Biological yield/plant (gm)	25.68	32.72	16.330	18.424	78.567	9.254	29.818
10.	Harvest index (%)	27.77	58.98	11.845	17.261	47.090	7.448	16.744
11.	Days to maturity	6.45	7.24	1.885	1.999	88.943	4.940	3.663
12.	Grain yield/plant (gm)	7.29	11.42	19.497	24.415	63.766	4.445	32.072

**Table 4. List of five most high yielding genotypes in present study.**

<b>Genotype</b>	<b>Days to flowering</b>	<b>No. of tillers/plant</b>	<b>Spike length (cm)</b>	<b>No. of grains/spike</b>	<b>Grain yield/plant (gm)</b>
WP-710/1	87.0	7.3	10.2	62.33	21.10
TALL-2	89.7	6.9	11.8	67.67	20.77
WP-705/1	83.3	6.6	10.1	64.33	17.16
HD-3189	85.0	6.1	10.4	57.33	16.03
PBW-343	87.0	6.9	8.8	59.67	15.79

**References :-**

1. Ramadas, Sendhil & Poswal, Randhir & Sharma, Indu. (2012). Exploring the performance of wheat production in India. *Journal of Wheat Research*. 4.37-44.
2. Joshi, Arun & Mishra, Bhola & Chatrath, Ravish & Ortiz-Ferrara, Guillermo & Singh, Ravi. (2007). Wheat improvement in India: Present status, emerging challenges and future prospects. *Euphytica*. 157.431-446. 10.1007/s10681-007-9385-7.
3. Johnson, H. W., Robinson, H. F. and Comstock, R. E. (1955). Estimation of genetic and environmental variability in soybean. *Agron. J.* 47: 314-318.
4. Tsegaye, D., Dessalegn, T., Dessalegn, Y. and Share, G. (2012). Genetic variability, correlation and path analysis in durum wheat germplasm (*Triticum durum* Desf). *Wudpecker Res. J.*, 1(4): 107 -112.
5. Tripathi, S. N.; Marker, S.; Pandey, P.; Jaiswal, K. K. and Tiwari, D. K. (2011). Relationship between some morphological and physiological traits with grain yield in bread wheat (*Triticum aestivum* L. em. Thell.). *Trends in App. Sci. Res.*, 6(9): 1037-1045.
6. Bergale, S.; Billore, M.; Holkar, A. S.; Ruwali, K. N. and Prasad, S. V. S. (2001). Genetic variability, diversity and association of quantitative traits with grain yield in bread wheat (*Triticum aestivum* L.). *Madras Agril. J.* (7/0): 457-461.
7. Dhakar, M. R.; Jat, B. L.; Bairwa, L. N. and Gupta, J. K. (2012). Genetic variability, heritability, genetic advance and genetic divergence in wheat (*Triticum* species). *Environment and Ecology*. 30 (4A): 1474-1480.
8. Navin Kumar, Shailesh Markar, Vijay kumar, 2014. Studies on heritability and genetic advance estimates in timely sown bread wheat (*Triticum aestivum* L.) *Biosci. Disc.*, 5(1):64-69.
9. Rathwa, H. K.; Pansuriya, A. G.; Patel, J. B. and Jalu, R. K. (2018). Genetic Variability, Heritability and Genetic Advance in Durum Wheat (*Triticum durum* Desf.) *Int. J. Curr. Microbiol. App. Sci.*, 7(1):1208-1215.
10. Dabi, A., Mekbib, F. and Desalegn, T. (2016). Estimation of genotypic and phenotypic correlation coefficients and path analysis of yield and yield contributing traits of bread wheat (*Triticum aestivum* L.) genotypes, *Int. J. of Natural Resource Ecology and Management*, 1(4): 145-154.



## किन्नर समाज की संघर्ष गाथा : अस्तित्व की तलाश में सिमरन

डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल, सह आचार्य, हिन्दी विभाग,

शा. घो. कला, विज्ञान एवं गो. प. वाणिज्य महाविद्यालय शिवले, तहसिल- मुरबाड, जिला-थाना (महा.) पिन. 421401

### प्रस्तावना :-

उत्तर आधुनिक दौर में हाशिए के अस्मिता समूहों ने अपने अस्तित्व और अधिकारों को लेकर जिस प्रकार आन्दोलनकारी संघर्ष चलाया है, उसने मुख्यधारा की राजनीति में स्त्री, दलित, आदिवासी, समाप्त प्राय जनजातियों के साथ एक ऐसे समूह को भी जगह दिलायी है, जिसके इंसानी वजूद को लम्बे समय तक इसलिए नकारा जाता रहा, क्योंकि जेण्डर और जाति के श्रेणीबद्ध विभाजन में इनकी गणना कहीं नहीं होती और इसी के चलते वे समाज से लगभग बहिष्कृत और अभिशप्त जीवन को मजबूर हैं। स्त्री-पुरुष से इतर तृतीय लिंगी, किन्नर या हिजड़ा कहलाने वाले ये लोग समाज के हाशिए पर गुमनाम ज़िन्दगी जीते हैं। असामान्य लिंगी होने के कारण सामाजिक उपेक्षा, अपमान और क्रूरता के शिकार इन लोगों के साथ परिवार के लोग भी उपेक्षा का भाव रखते हैं। भारतीय समाज में किन्नर या हिजड़ा समुदाय इसी समूह का हिस्सा हैं। सिमरन इसी समुदाय की एक कर्मठ एवं प्रगतिशील किन्नर चरित्र है।

### किन्नर समाज की संघर्ष गाथा : अस्तित्व की तलाश में सिमरन :-

‘अस्तित्व की तलाश में सिमरन’ संवेदनशील रचनाकार मोनिका देवी का आत्मकथात्मक उपन्यास है। सिमरन उपन्यास की नायिका है, जो परिवार के प्रति समर्पित, शिक्षा के प्रति असाधारण निष्ठा रखनेवाली कर्तव्यनिष्ठ, मानवीय संवेदना से सम्पूरित एक किन्नर है। जिसे अपने अस्तित्व की तलाश है। उपन्यास में वह अपनी आपबीती स्वयं कहती है। किन्नर को अर्थात् स्वयं को परिभाषित करते हुए वह कहती है – “किन्नर का अर्थ होता है – वह नर जो नर होते हुए भी नर नहीं हैं, नारी देह तो है, लेकिन पूर्ण रूप से नारी नहीं है। लोगों को लगता है कि हम लोगों की ज़िन्दगी बहुत मौज-मस्ती और आरामदायक होती है, परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं होता। लोग हमारा दर्द व पीड़ा नहीं देख पाते।

हमको अपने ही परिवारों से निकाला जाता है। जो बहिष्कार करते हैं वह हमारे अपने ही होते हैं। समाज का बहिष्कार झेलना पड़ता है। अपनों के द्वारा ही हमारा जीवन नरक बना दिया जाता है। कोई भी किन्नर भीख नहीं माँगना चाहता, फिर भी पापी पेट की खातिर न चाहते हुए भी भीख माँगनी पड़ती है। हमारे समाज में भी हमारा शारीरिक व मानसिक शोषण होता है। हर प्रकार की यातना से गुज़रना पड़ता है।”<sup>1</sup>

सिमरन का जन्म बिहार के मधुबनी जिला, ग्राम सुगौना में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। लेकिन वह महाराष्ट्र के ठाणे में पली-बड़ी। उसके नाना ने उसका नाम शत्रोहन रखा। जिसका अर्थ है – शत्रु का विनाश करने वाला। इसके पिता ठाणे में एक दवाई कम्पनी में मशीन आपरेटर के पद पर कार्यरत थे। माँ घर में सिलाई का काम करती थी। यह पाँच भाई –

बहन थे। प्रारम्भ में इसके पिता जी बहुत मेहनती और दयालु थे।

सिमरन पुरुष शरीर में स्त्री थी। उसे लड़कियों वाली वस्तुएँ ही पसंद आती थी। चाहे वह खिलौना हो या फिर इनके साथ खेलना। वह घर में झाड़ू-पोछा, बर्तन सब काम धीरे-धीरे अपने नन्हें हाथोंसे करती थी। उसके काम से उसकी माँ बहुत प्रसन्न थी। धीरे-धीरे वह खाना भी बनाने लगी। उसे घर का काम पसंद था। आत वह मन लगाकर सारे काम करती थी। इसके बावजूद भी उसकी माँ ने उसके मन की बात जानने की कोशिश नहीं की। “मेरी माँ मेरे काम की तारीफ करती थी। पता नहीं फिर भी क्यों, मुझे मेरी पसंद से दूर रहने को कहती थी। मेरे मन की हलचल कभी जानना नहीं चाहा माँ ने। मुझे क्या पसंद है क्या नहीं। यह कोई नहीं पूछता था। सब अपनी मर्जी चलाते थे। मेरा तो जैसे कोई अस्तित्व था ही नहीं, उनकी नज़रों में....।”<sup>2</sup> समय के साथ-साथ सिमरन के शरीर में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया। उसके शरीर में बदलाव आना स्वाभाविक था जो दिखायी भी देने लगा था। इस परिवर्तन के लिए व्यक्ति खुद जिम्मेदार नहीं होता। संवेदनाहीन लोगों में थोड़ी सी संवेदना जाग जाये और सिमरन जैसे लोग एक सामान्य जीवन बिता सकें यह सोचने वाला उसके परिवार में कोई नहीं था। किन्नर भी सामान्य लोगों जितने काबिल होते हैं। इन्हे भी प्यार दो, अपने जैसा मानो। आखिर ये भी इस धरती पर प्रेम पूर्वक रहने और अपने सपनों को पूरा करने के हकदार हैं। लेकिन यह बात घर या समाज के लोग नहीं सोचते।

उम्र के इस बदलते दौर में सिमरन के शौक भी बदलने लगे। हाथों में मेंहदी का रंग, बालों को बढ़ाना, नेल पेण्ट लगाना आदि उसकी जिंदगी में रंग भरने लगे। इसके साथ-साथ ही वह घरेलू कार्यों में मन से रूचि लेने लगी। वह सिलाई भी करने लगी। “मैं, अब अपने आपको लड़का नहीं मानती थी। मैं अपने सपने बुनने लगी। मेरे मन के अन्दर कोई डर नहीं था कि मैं क्या कर रही हूँ। यह सब करते देखकर लोग मुझ पर हँसने लगे। मैं बिना परवाह किये अपना जीवन जी रही थी।”<sup>3</sup> सिमरन को पूरा एकहसास हो चुका था कि उसकी देह में एक ऐसा मन निवास करता है, जो लड़की का है। इसीलिए उसमें सभी लड़की सुलभ गुण प्रकट हो रहे थे। स्कूल से आते-जाते मवाली, सड़क छाप लड़कें उसे रोज रास्ते में रोकते, छेड़खानी करते, मगर घरवाले इस पर ध्यान नहीं देते थे। सिमरन अपनी मनोदशा का वर्णन करते हुए कहती है – “मैं, समझ नहीं पा रही थी। मेरे साथ यह क्या हो रहा था? पापा सुनना नहीं चाहते थे, माँ समझना नहीं चाहती। ऐसे मेरे हालात थे कि क्या करूँ? रोऊँ भी तो कितना?”<sup>4</sup> सिमरन के पिता जी नौकरी हटने के बाद परिवार के प्रति ज्यादा कठोर हो गये थे। उनका व्यवहार मार-पीट में बदल गया था। कभी कभी माँ सिमरन को मारती थी। सिमरन दोपहर तक स्कूल में रहती और उसके बाद पिताजी को मदद करने दुकान पर बैठने लगी थी। पिता की अनुपस्थिति में लोग उसे परेशान करते थे। लेकिन माँ-पिता से शिकायत करने के बाद भी उसको सहानुभूति के दो शब्द घरवालों से नहीं मिलते थे – “यह सब मैं पिताजी को बताना चाहती थी कि मेरे साथ क्या-क्या घटित हो रहा था? कृपा करके अब मुझे दुकान पर ना भेजें। मेरा गला रूँध जाता। सब अपने थे, लेकिन मेरी सुनने के लिए कोई नहीं था। किसी का साथ नहीं मिल रहा था।”<sup>5</sup>

सिमरन के जीवन को देखने से स्पष्ट होता है कि सबसे ज्यादा यौन-शोषण किन्नरों का ही होता है। ये दर्द सहते-सहते ही छोटे से बड़े हो जाते हैं। इनका जीवन सरल नहीं होता, जीते भी हैं – रो-रोकर। आँसू ही उनका सहारा बन जाते हैं, लेकिन अपना कहने के लिए कोई हाथ आगे नहीं बढ़ाता, सिमरन अपने दुर्भाग्य पर तरस खाते हुए कहती है – “हिजड़ा एक भावना है। अन्तरात्मा की एक पुकार है जो एक शरीर से आती है कि आम आदमी इसे दो जाँघों के मध्य खोजते हैं। यही सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।”<sup>6</sup> सिमरन के पिता ने यह कहकर पारिवारिक जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लिया कि “मैंने तुम लोगों का ठेका नहीं लिया है।” उन्होंने अपनी जिम्मेदारी से बहुत जल्दी मुँह मोड़ लिया। सिमरन का भाई गैरजिम्मेदार मवाली छाप लड़का था। उसे स्वयं अपने भविष्य की चिन्ता नहीं थी। उसे घर के हालात की भी फिक्र नहीं थी। सिमरन के गुरु बहुत अच्छे थे अगर कोई

लड़का सिमरन को परेशान करता तो शिक्षिकाएँ सिमरन के पक्ष में खड़ी हो जाती थी। “ऐसे गुरु भगवान किस्मत वालों को देता है सच में। यह मेरे लिए बहुत ही भाग्य की बात थी। मेरा बहुत ध्यान रखती थी मेरी अध्यापिकाएँ। अगर कुछ भी समस्या आती तो सारी मैडम ढाल बनकर खड़ी हो जाती। लेकिन मेरे जैसे बच्चे की ढाल कब तक बनती? मेरा नसीब ही भगवान ने अलग लिखा था। मुझे अब तक जो साथ और प्यार मिला वही मेरे लिए बहुत था। आखिर इन्हीं चंद स्नेह के पलों ने जीने की राह तो सिखायी।”

सिमरन के परिवार की आर्थिक स्थिति दिन-प्रति-दिन खराब होती जा रही थी। ‘भूखे भजन नहीं होत गोपाला’। परिणामतः उसकी पढ़ाई छूट गयी और वह नौकरी करने लगी। सिमरन की माँ को पैसे से प्यार था। वह लिखती है – “पैसे लेकर माँ ने अजीब बर्ताव किया। उसको पैसे से अधिक प्यार था, मेरे से नहीं। साथ तो सिर्फ दिखावा था। फिर भी मुझे माँ से बहुत प्यार था, क्यों यह नहीं मालूम? आखिर वह मेरी जननी थी। शायद इसलिए भी हो सकता था। माँ ही मेरी दुनिया थी। क्या उसको यह नहीं पता था कि जिस बच्चे को पढ़ना-लिखना ज़रूरी था वह काम कर रहा है। .... कभी-कभी मुझे लगता कि वह सब मेरा इस्तेमाल कर रहे हैं। वह मेरी भावनाओं का फायदा उठाती। मैं निस्वार्थ भाव से उनसे प्रेम करती थी।”<sup>8</sup>

सिमरन के पिता एवं भाई सिमरन को बात-बेबात बुरी तरह से पीटते थे। उसके पिता जी पुरुषवादी मानसिकता के थे जिससे घर बिखर गया। सिमरन का मन एक पुरुष मित्र के लिए व्याकुल था जिसकी उसके प्रति स्नेह-दृष्टि हो और जो उसे मान-सम्मान दे सके। वह भी इज्जत की जिन्दगी जीना चाहती थी। आखिर उसका भी तो अधिकार था कि वह सामान्य जीवन जी सके, लेकिन वह किसी पर विश्वास ही नहीं कर पा रही थी। और एक दिन ऐसा भी आया कि भाई एवं पिता ने मिलकर सिमरन को घर से निकाल दिया – “सड़क पर आ जाने के बाद भी उन दोनों के अपमानजनक शब्द बन्द नहीं हुए। मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करूँ? घर-परिवार में रहकर मुझे अपमान, तिरस्कार के सिवा कुछ नहीं मिलने वाला। अब मैंने ठान लिया कि घर छोड़ दूँगी। आखिर घर में सहानुभूति के नाम पर ठगा जाता रहा। प्यार सिर्फ दिखावा है। मेरे आँसुओं की इनके लिए कोई कीमत नहीं। घर से निकाल दी गयी।”<sup>9</sup> परिवार से परित्यक्त होने के बाद सिमरन का कोई ठौर-ठिकाना नहीं रह गया। वह समाज के लिए तिरस्कृत पात्र बन कर रह गयी – “मेरी जिन्दगी में अपमान, तिरस्कार, गाली-गलौज ही रह गया था, जो पढे लिखे सभ्य समाज के लोगों द्वारा दी जाती थी।”<sup>10</sup>

सिमरन कर्तव्यनिष्ठ थी। उसके लिए काम ही पूजा था। वह जहाँ भी काम करती उसके काम से सब लोग बेहद खुश रहते। घर त्याग के बाद अब पूर्णतः किन्नरों के वर्ग में सम्मिलित हो गयी। गुरु के रूप में उसने चम्पा को चुना। शत्रोहन से सिमरन बनने तक के सफर में उसने बहुत कुछ खोया। राह असामन नहीं थी, काँटों भरा सफर था। उसके दर्द, पीड़ा को शब्दों में बयां करना आसान नहीं है। सिमरन अपने गुरु परम्परा के निमित्त अनेक गुरु की संगत में रहती है जिसमें बेला, चम्पा, नगमा, गीता आदि से वो किन्नर परम्परा के रीति-रिवाजों को जान लेती है। इस दौरान वह अपना निर्वाणी संस्कार भी कर लेती है। यह एक “ऐसी संस्कार प्रक्रिया होती है जिसके अंतर्गत किन्नर की देह से पुरुष लिंग को हटा दिया जाता है। इस क्रिया को कहीं-कहीं छिबरना भी कहते हैं।”<sup>11</sup> यह प्रक्रिया बहुत कष्टदायी होती है। सिमरन को शारीरिक कष्ट से भी अधिक मानसिक कष्ट झेलना पड़ता है। बेला गुरु उसके घाव को ताजा कर देती है तथ उससे पैसों की माँग करती है। सिमरन अपनी माँ को सहायता के लिए फोन करती है, परंतु माँ साफ इनकार करती है। सिमरन अपनी मनोव्यथा को व्यक्त करते हुए कहती है – “मैं माँ-माँ करती रही लेकिन उन्होंने एक ना सुनी और एक बात कहकर पल्ला झाड़ लिया कि तू एक हिजड़ा है और तेरे साथ हम सबका कोई रिश्ता – नाता नहीं है।”<sup>12</sup> सिमरन जिन्दगी भर संसार के सबसे पवित्र सम्बन्ध माँ की ममता के लिए तरसती रहती है। चम्पा के कहने पर ही वह भीख माँगने लगी। गुरु-चम्पा ने सिमरन को घर जाने से कई बार रोक दिया लेकिन घर-परिवार

उसकी मज़बूरी थी जिसको वह किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहती थी, क्योंकि उसके छोटे-भाई-बहन को उसकी बहुत जरूरत थी। सारा घर फिलहाल उसी के बलपर निर्भर था। उसे भीख माँगना पसंद नहीं था, लेकिन उसे अपनी माँ और बहन की जरूरतों का ख्याल आया। परिणामतः उसने अपने वर्ग के लोगों की तरह भीख माँगने में संकोच का परित्याग कर दिया।

सिमरन की मज़बूरी उसका परिवार था। घर की गरीबी थी। माँ और भाई बहनों का अटूट प्यार था। वह घर से निष्कासित होकर भी घर से जुड़ी रही थी। घर की जरूरतें पूरी करने के लिए वह दिन में कम्पनी में भी काम करती थी और रात को ट्रेन में भीख भी माँगती थी। गरीबी, बेरोजगारी के कारण सिमरन को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अभिजात्य वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक तथा अशिक्षित वर्ग से लेकर बुद्धिजीवी वर्ग तक के लोग किन्नर से दूरी बनाये रखते हैं लेकिन अपनी विकृत तथा कुंठित मानसिकता के चलते उनका शारीरिक शोषण करने से गुरेज नहीं रखते। अपने साथ कंपनी में काम करनेवाले बाँबी किन्नर के शारीरिक शोषण का वर्णन करते हुए सिमरन कहती है - “बाँबी अब मेरे साथ ही काम करता था। एक बार फ़ैक्ट्री के मजदूर नेता ने उसे बुलाकर उसके सामने एक प्रस्ताव रखा, अगर तुम अपनी नौकरी को स्थायी करवाना चाहते हो, तो मुझे एक रात का सुख दो। इस बात को सुनकर बाँबी तुरंत राजी हो गया। उसने उस मजदूर नेता के साथ सब कुछ किया, जो वह नेता चाहता था। नेता की रात रंगीन बना दी। इसके बाद उस नेता का रवैया ही बदल गया। वह सबसे ऐसे ही प्रस्ताव रखने लगा। एक दिन उसने मेरे सामने भी यह बात कही, मैंने मना कर दिया।”<sup>13</sup> सिमरन समाज की इस विकृत मानसिकता को धिक्कारती है और पूरे समाज को प्रश्नों के कटघरे में खड़ा कर देती है - “कैसी, कैसी मानसिकता के लोग हैं, धिक्कार है ऐसे समाज पर, जहाँ पर ऐसे इज्जतदार लोगे रहते हैं जो एक हिजड़े को भी अपनी हवस मिटाने का साधन मात्र समझते हैं। क्या हिजड़े का कोई अस्तित्व नहीं होता? मेरा यह सवाल मेरे दिमाग की नसों में खून की तरह दौड़ रहा था पर जवाब नहीं था मेरे पास। गरीब से गरीब भी अपनी अस्मिता के लिए जीता और मरता है। क्या हम किन्नर लोग अपने अस्तित्व के लिए जी भी नहीं सकते? क्या हम मनुष्य शरीर नहीं रखते?”<sup>14</sup>

सिमरन में मानवीय संवेदना कूट-कूट कर भरी थी। इसी से किसी के दुःख में वह आगे बढ़कर हाथ बटाती। एक दिन ट्रेन में भीख माँगते समय उसे राजवीर नामक व्यक्ति मिला जो समय का मारा हुआ था। उसे वह अपने घर लाती है, नौकरी दिलवाती है और जीने की नयी राह दिखाती है। लेकिन राजवीर ने भी समय के साथ मुख मोड़ लिया। राजवीर के साथ रहे अपने रिश्ते के बारे में सिमरन कहती है - “राजवीर मेरा दोस्त, हमसफर था। हर मुसीबत में जब भी मुझे जरूरत पड़ी तभी मेरे साथ खड़ा रहा। हम दोनों छह-सात साल रिश्ते में भी बँधकर रहे। वह भी अब मुझे छोड़ना चाहता था, क्योंकि उसको बच्चा चाहिए था, जो मैं उसे दे नहीं सकती थी। उसे इस बात का भय सताने लगा कि मैं उसके साथ रही तो उसका विवाह नहीं हो सकता। इन सब कारणों व समाज में इज्जत के डर से राजवीर मुझसे दूर हो गया। उसके जाने का गम मेरे जेहन में एक सदमे के जैसा लगा। रातों को नींद नहीं आती। तनाव बढ़ने लगा। अँधेरे से डर लगने लगा। लोगों को देखती तो अपनों को तलाशने लगती, लेकिन कोई हाथ पकड़कर अपना कहने वाला न रहा।”<sup>15</sup>

बुरे दिन में सिमरन को एक पंजाबी महिला ने नैतिक समर्थन दिखाया। वह अक्सर उससे बात करती थी, हाल-चाल पूछ लेती थी। सिमरन उनकी दरियादिली से प्रभावित होकर उनसे कहती है - “ईश्वर ने भी कैसे-कैसे लोग बनाये हैं। मेरे अपने मुझे पनाह नहीं दिये और आप पराई होकर भी आज मेरी अपनी बन गयी हो।”<sup>16</sup> वह अण्ठी हमेशा सिमरन को प्रोत्साहन देती और कहती कि - “बेटा। संसार में दुःख बहुत है, जितना दुःखी रहेगी उतनी ही परेशानी मिलेगी। भगवान ने जो दिया है उसको अमूल्य तोहफा समझकर ग्रहण करो। तुम अनमोल हो, तेरे जैसा कोई नहीं, कभी भी हिम्मत मत हारना। अभी तो तुझे बहुत लड़ना है।”<sup>17</sup> सिमरन उस अण्ठी को बड़ा सम्मान व इज्जत देती है। वह बेटे की तरह उन्हें याद करती है - “मैं, आज उनसे दूर



रहती हूँ, पर हमारा रिश्ता हवा के जैसा है जिसका अहसास पल-पल होता रहता है। उनका मेरे लिए गरम-गरम रोटी बनाना, वो मजाक के क्षण आज भी मुझे याद है। उनकी हर एक हिदायत मेरी हिम्मत बन चुकी है। अण्टी से मरते दम तक प्यार करती रहूँगी, क्योंकि अपनी माँ ने मुझे ठुकराया। इन्होंने मुझे सहारा दिया। ऐसी निस्वार्थ नेक दिल माँ को मैं कैसे छोड़ सकती थी। आज भी उनसे मेरी बात होती रहती है।

उन्होंने कभी मुझसे कुछ भी नहीं माँगा, माँगा तो सिर्फ प्यार, अपनापन। कोई बात करने को नहीं था, तो वह मेरे साथ खूब बात करती, जिन्दादिल औरत हैं वो। मेरे लिए फरिश्ता साबित हुई। मुझे पनाह देकर मेरा वजूद बताया – तुम हिम्मत से लड़ो संसार तुम्हारा है। यह मत समझो कोई नहीं है। मैं तुम्हारे हर काम में साथ खड़ी मिलूँगी।”<sup>18</sup> शिक्षा के प्रति जो अभिरूचि सिमरन में थी वह कभी समाप्त नहीं हुई। परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए उसने बी. ए. की परीक्षा पास की। संघर्षशील सिमरन अन्त में महाराष्ट्र छोड़ कर उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद में आ गयी। वह लड़ना नहीं चाहती थी। वह शान्ति से रहकर जीवन जीना चाहती थी। इस प्रस्थान में सुभद्रा किन्नर ने सहयोग किया। यहाँ उसे नाचने-गाने के लिए कार्यक्रम भी बराबर मिलने लगे। सिमरन की माँ केवल पैसे के लिए उससे सम्बन्ध रखती थी। माँ की पैसों की माँग पूरी करने के लिए सिमरन एक मजदूर के हाथों यौन शोषण का शिकार हो जाती है। वह दस मिनट तक अपनी प्यास बुझाने में लगा रहा और सिमरन दर्द को सहती रही। बदले में उसने पचास रुपये मिले। तीन-चार दिन के बाद जब दर्द कम हुआ तो सिमरन साहब लोगों के घरों में बर्तन साफ करने का काम करने लगती है। कभी-कभी साहब लोगों के साथ भी सो जाती है, जिसके उसे ज्यादा पैसे मिलते। सिमरन जीवन भर प्यार की भूखी रही – “मुझे भी प्यार की ज़रूरत थी, लेकिन जिन्दगी में जिल्लत के सिवा कुछ भी नहीं मिला। मन में कहीं न कहीं एक टीस-सी रह ही जाती है, आखिर मेरे साथ ही ऐसा व्यवहार क्यों किया?”<sup>19</sup>

समाज में किन्नरों को सिर्फ एक सामान समझा जाता है जिसका उपयोग करके फेंक दिया जाता है। लोग अपना तनाव दूर करने के लिए इनके पास आते हैं और रात के कुछ घण्टे बिताकर चले जाते हैं। ऐसा नहीं है कि किन्नरों के अरमान नहीं होते, इच्छाएँ नहीं होती। सब कुछ होता है, लेकिन कोई किन्नर के साथ विवाह करके घर नहीं बसाना चाहता। फिर भी यह किन्नर समाज हिम्मत करके जिन्दगी को आगे बढ़ा रहा है। आज भी समाज में किन्नरों के साथ यौन-शोषण की घटनाएँ घट रही हैं। किन्नरों को जन्म देकर, माता-पिता ही भूल जाते हैं। ये किन्नर पाई-पाई को तरसते हैं, आर्थिक रूप से भी इनका शोषण होता है। जब-तक पैसे पास होते हैं, तब तक हर रिश्ता इनसे जुड़ना चाहता है। जब रूपया खत्म हो जाता है, तब जिन्दगी तमाशा बन जाती है, कोई भी आकर इनके साथ गाली-गलौच करके जाता है। ये किन्नर कितनी भी प्रतिभाशाली, मेहनती और सुन्दर क्यों न हों, लेकिन इनके माता-पिता इन्हें नहीं अपनाते। दुःख और पीड़ा का कोई नाप-तोल नहीं होता। जिस को दर्द मिलता है वही उस अहसास को महसूस करता है और जानता है। किन्नर समुदाय में अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के किन्नर रहते हैं। जब कोई किन्नर हुड़दंग या कोई अनैतिक कार्य करता है, तो सारे किन्नरों को बदनाम किया जाता है। आज ज़रूरत है- पुराने मिथक तोड़ने की। किन्नर भी सबसे पहले एक इंसान हैं। अगर इनको अवसर मिले तो ये भी पढ़-लिखकर रोजगार कर सकते हैं, नौकरी कर सकते हैं। इनको ज़रूरत है-अपनेपन की। उन हाथों की जो आगे बढ़कर कहे कि यह किन्नर या हिजड़ा नहीं – मेरा बेटा या बेटा है।

डॉ. मोनिका देवी के सानिध्य में रहकर आज सिमरन मीडिया से लेकर समाज व राष्ट्रीय सेमिनारों में भी भाग लेने लगी हैं। वह शिक्षित वर्ग से जुड़कर बहुत कुछ सीख रही है। कलम की ताकत का पता चलते ही उसने लिखना भी शुरू कर दिया है। शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए वह कहती है – “वक्त ही बताएगा कि मैं क्या लिखकर लाती हूँ। अभी तो कलम और पाती उठाई है, मंजिल पाना दूर है, लेकिन मुश्किल नहीं। मैंने मोनिका जी के कहने पर एक आलेख लिखने की कोशिश

की जो सही भी लिखा। वृन्दावन शोध-संस्थान में आलेख लिखकर भेजा। वहाँ के राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजकों को मेरा आलेख उत्तम लगा।

वृन्दावन में मुझे जो मान-सम्मान मिला वह मेरी जिन्दगी में एक बहार जैसा था। मैंने पहले भी एक बात कही थी कि मैं ऐसा गुलाब बनना चाहती हूँ जिसकी खुशबू से आँगन महक सके। सच में यह सपना अब हकीकत में बदलने लगा है।<sup>20</sup> सिमरन की जिन्दगी अपने अस्तित्व की तलाश में धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। अब किन्नरों से संवैधानिक अधिकार भी मिल गया है। शिक्षा से लेकर राजनीति तक के बन्द दरवाजे खुले गये हैं। सामाजिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ रहा है, ज़रूरत है इस वर्ग के लोग स्वयं जागृत हो और शिक्षा, संगठन और संघर्ष के मूल मंत्र को स्वीकार कर आगे बढ़ें।

#### निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि मोनिका देवी का उपन्यास 'अस्मिता की तलाश में सिमरन' किन्नर समाज की सामाजिक आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इस वर्ग की जिजीविषा एवं उनकी अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को व्याख्यायित करता है। उपन्यास की नायिका सिमरन सम्पूर्ण किन्नर समाज का प्रतिनिधित्व करती हुयी ऐसे प्रश्न उपस्थित करती हैं जिसका जबाब स्वयं को सभ्य कहलाने वाले समाज के पास नहीं हैं।

#### संदर्भ सन्केत :-

1. देवी मोनिका (2019) अस्तित्व की तलाश में सिमरन, माया प्रकाशन, कानपुर, पृ. 9.
2. वही, पृ. 14
3. वही, पृ. 19
4. वही, पृ. 20
5. वही, पृ. 21
6. वही, पृ. 23
7. वही, पृ. 27
8. वही, पृ. 39
9. वही, पृ. 44,
10. वही, पृ. 93
11. वही, पृ. 67
12. वही, पृ. 65
13. वही, पृ. 35.
14. वही, पृ. 35
15. वही, पृ. 88-89
16. वही, पृ. 59
17. वही, पृ. 61
18. वही, पृ. 63,
19. वही पृ. 91
20. वही पृ. 105.

(दूरभाष 9423025562)

Email prakashdhumal69@gmail.com.



## भारतीय स्वातंत्र्य समर में हिंदी पत्रकारिता का प्रदेय

रंजना

शोध छात्रा, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.।

पत्रकारिता मनुष्य के जीवन की विविधताओं, मान्यताओं, उसके जीवन में घटने वाली विविध घटनाओं एवं प्रसंगों को शीघ्र प्रस्तुत करने एवं जागरूक करने का सशक्त माध्यम है। यही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य सम्पूर्ण विश्व जन समुदाय के विचारों, भावनाओं, संस्कारों, सभ्यताओं एवं विविध सामाजिक मान्यताओं से परिचित हो सकता है और अपने को सम्पूर्ण विश्व के लिए सम्प्रेषित कर सकता है। पत्रकारिता के सहयोग अभाव में लोकतंत्र की सफलता अधूरी है। वर्तमान समय में पत्रकारिता दिन-प्रतिदिन देस दुनियां में बढ़ती जा रही है। सम्भवतः इसीलिए पत्रकारिता आज लोकतंत्र के चतुर्थ एवं मजबूत स्तम्भ के रूप हमारे सामने उपस्थित है और इसके दायित्व निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं।

अट्टारहवीं शताब्दी के दूसरे दशक के प्रारंभ में भारतीय भाषाओं के अनेक पत्रों का उदय हुआ। 'राजाराम मोहनराय' ने 1821 ई. में फारसी में पहले साप्ताहिक 'मिरातुल-अखबार' प्रकाशित किया। दूसरा पत्र 'संवाद-कौमुदी' भी उन्हीं की प्रेरणा से प्रकाशित हुआ। कुछ काल बाद राजाराम मोहन राय ने 'बंगदूत' प्रकाशित किया जो बंगला, फारसी, हिंदी, और अंग्रेजी भाषाओं में छपता था। हिंदी पत्रकारिता का जन्म हिंदी प्रदेश से दूर 'कलकत्ता' में हुआ। प्राप्त सामग्री के आधार पर हिंदी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था। इसका प्रकाशन जेष्ठ बदी 9, सं. 1883 ता. 30 मई 1826 ई. को हुआ था। लगभग डेढ़ वर्ष चलने के बाद यह पत्र बन्द हो गया। यह पत्र साप्ताहिक था। 1826 ई. से लेकर 1872 ई. तक हिंदी पत्रकारिता शैशवावस्था में थी।

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चन्द का आगमन एक ऐतिहासिक घटना थी। 'कवि वचन सुधा (1867 ई.)' नवजागरण का प्रतीक थी। इसके सन्दर्भ में डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है, "कवि वचन सुधा जनता के हितों के लिए लड़ने वाले निर्भय सैनिक की तरह थी।" 1874 ई. में 'हरिश्चन्द मैगजीन' का प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही हिंदी भाषा को एक निश्चित रूप मिला। 1874 ई. में ही भारतेंदु ने महिलाओं के लिए 'बालाबोधिनी' का प्रकाशन आरम्भ किया। इन पत्रिकाओं के द्वारा उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में युग निर्माण का कार्य किया। 1873 ई. से लेकर 1900 ई. तक हिंदी पत्रकारिता उन्हीं के आदर्शों पर चलती रही।

1895 ई. में काशी से 'नगरी-प्रचारिणी-पत्रिका' का तथा 1900 ई. में प्रयाग से 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ हिंदी पत्रकारिता में नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात देश की परिस्थितियों में अकल्पनीय परिवर्तन हुआ। देश को दो भागों में बांट दिया गया। कृत्रिम आधार पर बंटकर हम स्वतन्त्र हुए। देश के प्रमुख राजनीतिक दल के हाथ में सत्ता आयी। फलस्वरूप अनेक कर्मठ नेता शासन में सहयोग देने में गए, इसलिए पत्र पत्रिकाओं में उनकी पकड़ कमजोर हो गयी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात त्रैमासिक और मासिक दोनो प्रकार की साहित्यिक और शोध पत्रिकाओं के क्षेत्र में एक नया उत्साह

जाग्रत हुआ। विगत वर्षों में पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में कुछ विशेष प्रवृत्तियां विकसित हुई हैं।

हिन्दी साहित्य के पत्रकारिता के इतिहासमें उदन्त-मार्तण्ड का उदय हिन्दी पत्रकारिता जगत में सूर्य के ही समान हुआ। जिसने पत्रकारिता जगत को आलोकित किया। इसका प्रकाशन 30 मई 1826 ई. को कलकत्ता से साप्ताहिक पत्र के रूप में पं. जुगलकिशोर शुक्ल ने किया। यह पत्र 11 सितंबर 1928 तक ही प्रकाशित हुआ तत्पश्चात भी इसने हिन्दी साहित्य के पत्रकारिता जगत में नयी चेतना का उन्मेष कर अभिव्यक्ति को नयी दिशा प्रदान की।

साहित्य और पत्रकारिता का घनिष्ठ संबंध रहा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में दोनों के अंतरंग संबंध को सहज ही देखा जा सकता है। हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय नवजागरण की कहानी है। यह जनजागरण के विकास, राष्ट्रीय चेतना के विकास, समाज-सुधार, अंध-विश्वास में जकड़े समाज के जागरण की कहानी है। देश की राजनैतिक, आर्थिक, तथा सामाजिक बुराइयों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए हिन्दी पत्रकारिता जनजागरण का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी।

हिन्दी पत्रकारिता के प्रवर्तकों ने जातीय चेतना, युगबोध आदि के प्रति पूर्णतः सचेत रहते हुए जनचेतना के संचार का कार्य किया। जिसके कारण तत्कालीन अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों का भी शिकार होना पड़ा। प्रारंभ में हिन्दी पत्रकारिता, आजादी की प्राप्ति, समाज-सुधार, उत्थान एवं जाग्रति का एक प्रमुख साधन थी। आज भी यह राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा विभिन्न धार्मिक रूढ़ियों के प्रति चेतना जाग्रत करने हेतु विभिन्न प्रकार की रचनाओं- कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि का प्रकाशन करती है। जिसके द्वारा जन-सामान्य की मनःस्थिति को जाग्रत, परिवर्तित कर अनवरत समाज को उत्तरोत्तर विकास के मार्ग पर अग्रसर कर रही है। भारतेन्दु पूर्व हिन्दी पत्रकारिता का मूल स्वर देश की तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार जन-जागरण, राष्ट्रीय-चेतना का विकास तथा समाज में व्याप्त रूढ़ियों का विरोध आदि था।

### **भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता (1867-1900 ई.) :-**

भारतेन्दु युग अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण है। इस युग से ही साहित्यिक पत्रकारिता और सामान्य पत्रकारिता के बीच अंतर की रेखा स्पष्ट होती है तथा यहीं से साहित्य और पत्रकारिता के एक दूसरे की पूरकता का भान भी प्रारंभ होता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र स्वयं कालचक्र 1873 में इसका संकेत करते हैं कि 'हिन्दी नई चाल में ढली'। इसी युग में खड़ी बोली हिन्दी विभिन्न भाषाओं- संस्कृत, उर्दू, फारसी, आदि के शब्दों से विहित होकर विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से विविध नवीन विषयों एवं विमर्शों के साथ प्रकट होती है। हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का आरंभ यहीं से माना जाता है।

साहित्यिक पत्रकारिता के विभिन्न कालखंडों में अनेक महत्वपूर्ण पत्रिकाएं निकलीं जो हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के इतिहास को गौरवान्वित करती हैं। बालमुकुंद गुप्त ने भारत मित्र के माध्यम से पत्रकारिता के नए आयाम स्थापित किए। बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधचरण गोस्वामी, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट आदि लेखकों ने उपर्युक्त पत्रिकाओं से साहित्य में अविस्मरणीय से साहित्य तथा समाज को नयी दिशा एवं गति प्रदान की।

### **द्विवेदी युगीन हिन्दी पत्रकारिता (1900-1919 ई.) :-**

डॉ. रामरतन भटनागर ने द्विवेदी युगीन पत्रकारिता को 'विकास युग' नाम देते हुए उसे दो चरणों में प्रथम चरण (1900-1921) तथा द्वितीय चरण (1921-1935) में विभाजित किया है। द्विवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य में विभिन्न गद्य विधाओं का जन्म हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता को नए आयाम प्रदान करते हुए पत्रकारिता के साथ साहित्य लेखन में भी नवीन मूल्यों की स्थापना की। डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित लिखते हैं- "हिन्दी पत्रकारिता का द्वितीय चरण 20वीं शताब्दी के आरंभ से माना जा सकता है। साहित्य इतिहास

में इसे द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई है। इस युग के पत्र परिणाम और स्तर दोनों रूप में विशिष्ट हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित सरस्वती पत्रिका ने लगभग 20 वर्षों तक करीब 100 करोड़ हिन्दी भाषा भाषियों का साहित्यिक नेतृत्व करते हुए ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त की जो लेखक एक बार इसमें छप जाता वह साहित्यिक रूप में मान्यता प्राप्त कर लेता। इस पत्रिका ने भाषा परिष्कार संबंधी राष्ट्रव्यापी आंदोलन चलाया, नवोदित प्रतिभाओं का सर्वेक्षण किया और सचित्र सरोपयोगी सामग्री द्वारा अपने पाठकों का भरण-पोषण किया। ..... सरस्वती पत्रिका हिन्दी पत्रकारिता का आलोक स्तम्भ है। इसकी प्रतिस्पर्धा में विशाल भारत, सुधा, माधुरी, मर्यादा आदि कितनी ही श्रेष्ठ पत्रिकाएं निकलीं। इसकी पारंपरिक प्रतिक्रियाओं, प्रतियोगिताओं और विवादी लेखन की विभिन्न प्रवृत्तियों द्वारा हिन्दी का बहुत उपकार हुआ है। अतः पत्रकारिता का यह द्वितीय चरण सर्वथा सराहनीय है।”

### छायावाद युगीन हिन्दी पत्रकारिता (1919-1936 ई.) :-

डॉ. रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं, हिन्दी साहित्य में द्विवेदी जी के कठोर अनुशासन और इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध विद्रोह कहिए या नवीन भाव-व्यंजना तथा नव्यतम अभिव्यक्त शैली जिसे लेकर छायावाद का अवतरण हिन्दी साहित्य में हुआ है। 1920-1930 तक का समय पुराने संस्कारों के प्रति विद्रोह और नवीन संस्कारों के बीजारोपण का समय है। हिन्दी की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने छायावादी काव्य के विकास तथा प्रचार प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य किया। हिन्दी में छायावाद युग राजनैतिक गांधी युग की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। इस युग में छायावादी विशेषताओं के साथ-साथ राष्ट्रीय-चेतना तथा विभिन्न नए दृष्टिकोणों से साहित्यिक रचनाएं की गईं जिसमें नारी के प्रति सर्वथा नवीन दृष्टिकोण को अपनाया गया जो इससे पहले से बिल्कुल अलग था। इस युग में माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, मैथिलीशरण गुप्त आदि ऐसे कवि हैं जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया।

चाँद पत्रिका में नारी विषयक समस्याओं तथा लेखिकाओं को प्राथमिकता मिलती थी। कुछ वर्षों तक महादेवी वर्मा ने चाँद और साहित्यकार पत्रिका का सम्पादन किया। हंस प्रेमचंद द्वारा संपादित इस युग की एक महत्वपूर्ण पत्रिका थी जो बनारस से निकलती थी। इसके संबंध में कमाल किशोर गोयनका लिखते हैं, “लखनऊ में रहते हुए प्रेमचंद ‘माधुरी’ का सम्पादन कर रहे थे और बनारस में उनका ‘सरस्वती प्रेस’ भी चल रहा था, लेकिन उन्हें इससे संतोष न था। उनका मन अंग्रेजों की पराधीनता से पीड़ित था और वे महत्मा गांधी के शांतिमय स्वाधीनता संग्राम में अपना लघु योगदान करना चाहते थे। इसी समय उन्होंने हिन्दी में एक मासिक पत्रिका निकालने का निर्णय लिया तथा जयशंकर प्रसाद के सुझाव पर उसका नाम हंस रखा। इसका पहला अंक 10 मार्च 1930 ई. को प्रकाशित हुआ।”

छायावाद युगीन पत्रकारिता की महत्वपूर्ण उपलब्धि साहित्यिक पत्रकारिता तथा राजनीतिक पत्रकारिता का अलग-अलग होना है। इस युग के साहित्य ने रुढ़ि समर्पित काव्य कला पर प्रश्न चिन्ह लगाए।

### छायावादोत्तर युगीन हिन्दी पत्रकारिता (1937-1960 ई.) :-

इस काल में पहले से प्रकाशित होने वाली कुछ पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रहीं तथा कुछ विपरीत परिस्थितियों के कारण बन भी हो गईं। इस युग में भी अनेक पत्रिकाएँ छपीं जो अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं, जिन्होंने युग को नयी दिशा प्रदान की। प्रगति तथा प्रयोगवाद के आगमन से छायावादी मानवीय संवेदनशीलता से दुःखी हो वास्तविकता की आवश्यकता का आभास हुआ। 1936 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, मुंशी प्रेमचंद जिसके प्रथम अध्यक्ष बने। मार्क्सवाद के प्रभाव के कारण साहित्य में प्रगत्त्वद के अंतर्गत किसानों, मजदूरों, तथा सर्वहारा के दुख-सुख को वर्णन का विषय बनाया गया। जिसे इस युग की पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से देखा जा सकता है।

## समकालीन हिन्दी पत्रकारिता (1960 ई.) :-

औद्योगिक क्रांति ने पत्रकारिता को प्रभावित किया जिसके परिणाम स्वरूप उसका भी व्यवसायीकरण और सरकारीकरण हुआ। जिसके चलते पत्रकारिता में भी विभिन्न बदलाव परिलक्षित हुए। इस प्रकार पत्रिकाएं विधा विशेष के रूप में या जुड़कर प्रकाशित होना प्रारंभ किया। समकालीन साहित्यिक पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में अनेक साहित्यिक आंदोलनों का जन्म हुआ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने जनवादी चिंतन को प्रमुखता से मुखरित किया है।

स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। देश से जुड़ी समस्याओं को पत्र-पत्रिकाओं ने पूरी निष्ठा के साथ समाज के सामने रखा। पत्रकारों ने देश की प्रगति को ध्यान में रखते हुए पुरानी परंपराओं को तोड़ने का संकल्प लिया। उस समय समाज के विकास के लिए स्त्रियों का विकास अति आवश्यक था अतः पत्रकारिता ने अपनी भूमिका निभाते हुए राष्ट्रीय चेतना के साथ साथ नारी विकास की जिम्मेदारी संभाली। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही पत्रकारों ने समाज में फैली कुरीतियों से समाज को अवगत करते हुए उनके निवारण हेतु जाग्रति उत्पन्न की। आधुनिक कल के आरंभ में बाल-विवाह, सती-प्रथा व विधवाओं की स्थिति ये ऐसी कुप्रथाएं थीं जिन्होंने महिलाओं को दयनीय स्थिति में पहुंचा दिया था। उपर्युक्त विभिन्न विसंगतियों की ओर आधुनिक पत्रकारिता ने समाज का ध्यान आकृष्ट किया। भारतेन्दु हरिश्चंद, बालकृष्ण भट्ट आदि लेखकों ने महती भूमिका का निर्वहन किया। भारतेन्दु की बात का समर्थन करते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी कहा है कि जिस विधवा का पुनः विवाह करने की इच्छा हो तो उसकी इच्छाओं को कभी मारना नहीं चाहिए। भारतेन्दु हरिश्चंद स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए विधवाओं को भी शिक्षित करने के हिमायती थे। वे कहते हैं कि विधवा स्त्री एक तो अकेली होती है उसपर उसकी आर्थिक स्थिति भी खराब होती है ऐसी स्थिति में उसका शिक्षित होना अत्यधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि शिक्षा के माध्यम से वह आत्मनिर्भर होकर अपना सहारा बन सकेगी।

भारतेन्दु युग के पश्चात साहित्यिक पत्रकारिता में वैचारिक क्रांति आयी। इन पत्रों ने साहित्यिक स्तर सुधारने के साथ-साथ समसामयिक समस्याओं के साथ सामंजस्य बनाते हुए स्त्री चेतना को जाग्रत करने में महती भूमिका निभाई। समकालीन पत्रकारिता केवल राजनीति एवं साहित्य तक ही सीमित न होकर फिल्म, खेल-कूद, अर्थ जगत, वाणिज्य, व्यवसाय, विज्ञान, ग्रामीण, किसान, स्वस्थ, महिला, बाल जगत आदि सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय-चेतना के संदर्भ में गांधी जी का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वतंत्रता आंदोलन में पुरुषों के साथ पहली बार स्त्रियाँ घर से बाहर आती हैं। स्वतंत्रता के साथ वे विभिन्न सम्मेलनों, गोष्ठियों सम्मिलित होकर अपनी बात करती हैं जिसका उल्लेख मुंशी प्रेमचंद हंस में करते हैं।

पत्रकारिता का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है जब देश सेवा पर प्राण न्योछावर करने से भी पत्रकार पीछे नहीं हटते थे। देश के लिए वह अभाव में जीकर भी अपने कर्तव्य से नहीं डिगे। सम्पादक किसी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से कम नहीं थे। जो आज भी सम्पादकों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। पत्रकारिता का उदय देश हित के लिए ही हुआ था। हिंदी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा यही है कि समाचार पत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है। उचित वक्ता के सम्पादक डॉ. दुर्गा प्रसाद मिश्र अपने पत्र में 12 मई 1883 ई में देशी पत्रकारों को सजग करते हुए लिखते हैं कि, “देशी सम्पादकों सावधान! कहीं जेल का नाम सुनकर कर्तव्यविमूढ़ मत हो जाना। पत्रकारिता धर्म की रक्षा करते हुए यदि गवर्नमेंट को सात परामर्श से उजेल जाना पड़े तो क्या चिंता है। इससे मान हानि नहीं होती है। हाकिमों के जिन अन्याय आचरणों से गवर्नमेंट पर सर्वसाधारण की जो अश्रद्धा हो सकती है उनका यथार्थ प्रतिवाद करने में जेल तो क्या द्विपान्तरि भी होना पड़े तो क्या बड़ी बात है”। वे अपने पत्रों के माध्यम से देश प्रेम की प्रेरणा देने वाले पत्रकार थे जो स्पष्ट भाषा में देशवासियों को सत् परामर्श देते थे। उनका कहना

था कि भारत के दुर्भाग्य को अपना दुर्भाग्य और भारत के सौभाग्य को अपना सौभाग्य समझो, नहीं तो भारत का दुर्भाग्य कदापि नहीं दूर होगा। (सार सुधानिधि वर्ष 2, अंक 25)

पत्रकारिता ने स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रीय भावना के विकास को सर्वाधिक प्रभावित किया। पत्रकारिता देश सेवा की सर्वाधिक सशक्त विधा के रूप में प्रकट हुई। पण्डित बाबू राव विष्णु पराड़कर ने कहा था, “कलकत्ता जाने का मेरा मुख्य उद्देश्य पत्रकारिता न थी प्रत्युत क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो कर देश सेवा का कार्य करना था। परिवार का खर्च चलाने और पुलिस की नजरों से बचने के लिए मैंने ‘हिंदी बंगवासी’ में सहायक सम्पादक का कार्य स्वीकार किया था। ‘हित वार्ता’ और ‘भारत मित्र’ के सम्पादन के साथ साथ चन्दन नगर की गुप्त समिति का कार्य भी मैं कर रहा था।”

पत्रकार इस कारण विभिन्न कठिन परिस्थितियों के साथ साथ साम्राज्यशाही शासन के कोप का भी सामना किया और विभिन्न यातनायें भी झेलीं। लक्ष्मण नारायण गर्दे ने सम्पादकीय ‘आत्मपरीक्षण’ में अक्टूबर 1930 के ‘विशाल भारत’ में लिखा था कि “पत्र सम्पादन के कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने का मेरे लिए प्रत्यक्ष कारण स्वदेशी आंदोलन हुआ।” ऐसे अनेक पत्रकार हुए जिन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की। अंग्रेजी शासन की कुनीतियों और शोषण के विरुद्ध जनक्रोश को जाग्रत करने का कार्य किया। अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का कोपभाजन भी हुए। परन्तु पत्रकारिता के धर्म से बिना डिगे तथा बिना विचलित हुए देश सेवा का कार्य अनवरत करते रहे।

तिलक ने 25 सितंबर 1897 में अपने पत्र में लिखा था कि, “सत्य का समर्थन और राष्ट्रीय आदर्श की रक्षा करने के अपराध में यदि पूना के बदले अंडमान में भी रहना पड़े तो वह श्रेयस्कर है। यदि मुझे सजा हुई तो देशवासियों की जो सहानुभूति मुझे प्राप्त होगी वह मुझे बल देगी।”

स्वतंत्रता आंदोलन के पश्चात भारत के स्वतंत्र होने पर भी पत्रकारिता अपने दायित्वों की पूर्ति में संलग्न रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात बाबू राव विष्णु पराड़कर 15 अगस्त 1947 के ‘आज’ के अग्रलेख के माध्यम से देश के प्रत्येक वर्ग को सचेत करते हैं कि “स्वतंत्र होने के साथ साथ हमारे कंधों पर जितना भारी उत्तरदायित्व आ गया है, उसे हमें न भूलना चाहिए। हमारी लेशमात्र की असावधानी का परिणाम घातक हो सकता है। हम जरा चुके नहीं कि सर्वनाश हमारे सम्मुख उपस्थित है।”

इस प्रकार हम देखते हैं कि पत्रकारिता की स्वतंत्रता आंदोलन में अविस्मरणीय भूमिका रही तथा उसके पश्चात भी वह अपने कर्तव्य पथ पर अनवरत अग्रसर है।

### संदर्भ :-

1. हिन्दी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्र, पृ. सं.- 93
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. सं. - 436
3. वृहद हिन्दी पत्र-पत्रिका कोश- डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृ. सं. - 4-5
4. गद्य साहित्य का इतिहास- डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पृ. सं.- 901
5. प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य, कमल किशोर गोयनका, पृ. सं.
6. नवजागरण की विरासत, कृष्ण बिहारी मिश्र,
7. गूगल।

7007418738, Email- kmranjana1989@gmail.com



**संगम** Impact Factor : 4.553

Website :  
www.ginajournal.com

ISSN : 2321-8037  
**SANGAM**

विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका A Peer Reviewed International Refereed Journal  
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Vol. 11, Issue 5  
पृष्ठ : 104-108

# स्वामी विवेकानन्द के चिंतन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

संदीप कुमार

छात्र, ज० रा० दि० रा० विश्वविद्यालय, चित्रकूट।

## शोध आलेख का सार :-

स्वामी विवेकानन्द भारत के महान आत्मा थे जिनके प्रति वर्तमान पीढ़ी ऋणी है और भावी पीढ़ी भी इनकी सदैव ऋणी रहेगी। उन्होंने पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों को जोड़ने व समन्वय करने का प्रयास किया। विदेशों में भ्रमण करके अपनी भारतीय संस्कृति की महानता को धर्म के सार्वदेशिक स्वरूप को उन्होंने स्पष्ट व तार्किक रूप से अपना मत रखा। विवेकानन्द भारतीय राष्ट्रीयता के महान व्यक्ति माने जाते थे। उनका विश्वास था कि मानव कल्याण और अद्वैत वेदान्त के अंदर हिन्दू धर्म खोजा जा सकता है। उन्होंने कहा कि मोक्ष संयास से नहीं अपितु मानव मात्र की सेवा से मिलेगा। स्वामी जी ने विश्व संसद में भाग लेकर अपने धर्म और संस्कृति को पूरे विश्व के सामने अपनी संस्कृति का लोहा मनवाया और वहाँ के सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया और विवेकानन्द पाश्चात्य श्रेष्ठता पर प्रश्न चिन्ह लगाने तथा आलोचकों के प्रहार से अपने धर्म का बचाव करने की बजाय इसकी आध्यात्मिकता व श्रेष्ठता और अद्वितीय महिमा का निभ्रांत करने वाले पहले भारतीय थे।

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानन्द के चिंतन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

**मूल शब्द :-** पश्चिमी संस्कृति व भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता, मानव कल्याण, धर्म संसद।

## प्रस्तावना :-

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 1863 में बंगाल प्रान्त के कोलकाता में हुआ था। इनके बचपन का मूल नाम नरेन्द्र दत्त था। ये रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। उनके गुरु की मृत्यु के पश्चात नरेन्द्र नाथ ने गुरु के संदेशों को निस्वार्थ ईश्वर भक्ति आदि शिक्षाओं का प्रचार प्रस्तुत किया। 11 सितम्बर 1893 ई० में शिगाको में हुई धर्मों की संसद में भाग लिया जब उन्होंने प्रथम वाक्य को बोला मेरे अमेरिकी भाईयो एवं बहनों कहा था। इस सम्बोधन से पूरा अमेरिका निहाल हो गया था और उन्होंने अपनी भारतीय व वैदिक हिन्दू संस्कृति की महानता का वर्णन किया जिसमें भौतिकवाद व अध्यात्मवाद के बीच स्वस्थ संतुलन पर जोर दिया। 1996 में इन्होंने न्यूयार्क में वेदान्त दर्शन की स्थापना की। भारत में इन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। जिसके आधार पर इन्होंने भारत में पुनर्जागरण तथा समाज सुधार में योगदान के कारण इन्हें सुभाष चन्द्र बोस ने राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कहा। जिस आधार पर उनका मुख्य उद्देश्य लोकसेवा व समाज सुधार करना था। जिनके केन्द्र में वर्तमान समय में भी नई शिक्षा नीति में इनके विचारों का बल दिया गया है और वह स्वास्थ्य व लोक सेवा का कार्य कर रहे हैं।



## विवेकानन्द का सामाजिक दर्शन :-

विवेकानन्द एक महान संत थे उनका वेदान्त दर्शन पर विश्वास था जिसे उन्होंने दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए सक्षम बताया और स्वामी जी मान्यतावादी चिंतक हुए हैं जिन्होंने मनुष्य के रूप में ईश्वर की पहचान की तथा प्रेम तथा मानव प्रेम तथा उपासना के माध्यम से राष्ट्र की सेवा को अपना दायित्व समझा। वास्तव में उनकी एकता, समानता के दर्शन में बताया कि समूचे समाजवाद तथा मानवतावाद को प्रोत्साहित करती है और इन्होंने मानव जीवन का आरम्भ समानता के दर्शन में बताया जो वैश्विक एकता की प्राप्ति में जाकर पूर्ण रूप से ग्रहण करता है। वे हर प्रकार के विशेषाधिकार तथा सामाजिक शोषण के खिलाफ थे। स्वामी जी का मानना था कि हर प्रकार की शोषण असमानता के ही कारण उत्पन्न होता है। वास्तव में उनकी समानता की विचारधारा ही उनके समूचे आध्यात्मिक दर्शन का आधार है जो व्यक्ति के क्रमिक विकास को प्रोत्साहित करती है। समानता से स्वामी जी का अभिप्राय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक अथवा किसी अन्य प्रकार की विशेष असमानता से नहीं था बल्कि उसकी प्रक्रिया से था। स्वामी जी का मानना था कि विश्व में समानता और असमानता की एक साथ ही कार्य करती हैं तथा समानता की तरह असमानता का होना भी स्वाभाविक है। लाभदायक तथा सृजनात्मकता जाता है। परन्तु समाज में असमानता न तो सनातन है और न ही असीम। उन्होंने व्यक्ति की असमानता के विरुद्ध संघर्ष की अनिवार्यता तथा इच्छाशक्ति को उचित बताया। उनका मानव अनेकता में विश्वास सांख्य दर्शन के सिद्धान्त पर आधारित था। जबकि वेदान्त में उनकी आस्था ने उन्हें मानव एकता की घोषणा के लिए अधिक प्रेरित किया। उनका कहना है कि सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता समानता पर आधारित होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्होंने व्यक्ति व महिला की स्वतंत्रता को सबसे अधिक मूल्यवान बताया है। यहाँ पर देखा जाये तो वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति में भी स्वामी जी के तथ्यों का वर्णन किया गया है जिसके फलस्वरूप बालक का “नई शिक्षा नीति” से जो भी पाठ्यक्रम का अध्ययन करवाया जाये वह स्वतंत्रता व बाहरी ज्ञान से जोड़ कर करवाने पर यह नीति बल देती है। यह मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है। इसी को स्वामी जी मोक्ष कहते हैं। समाज तथा राज्य को इसमें बाधा डालने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए कहा है कि इसको प्राप्त करने के लिए कर्म, उपासना और ज्ञान तीन साधक होते हैं। सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता व समानता पर आधारित है जो व्यक्ति को स्वतंत्रता की ओर ले जाती है और असमानता बंधन की ओर ले जाता है उन्होंने लिखा है कि कोई भी मनुष्य व कोई भी राष्ट्र भौतिक समानता के बिना स्वतंत्रता प्रयास नहीं कर सकता और न ही मानसिक समानता के बिना मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास करता है। स्वामी जी ने असमानता को अज्ञान और वासन के समान मानव दुःख और कष्ट का प्रमुख कारण माना है। परन्तु समानता निरपेक्ष से लागू नहीं हो सकती है क्योंकि यह प्रकृति के नियम के विरुद्ध है।

स्वामी जी का कहना था कि हम मानवता को वहाँ ले जाना चाहते हैं जहाँ न वेद है, न कुरान है, और न बाइबिल और मैं ऐसे धर्म को नहीं मानता जो विधवाओं के आँसू न पोंछ सके या फिर किसी अनाथ गरीब को रोटी का टुकड़ा प्रदान न कर सके। इस संसार में सभी मनुष्य अलग-अलग बुद्धि कौशल और योग्यता लेकर आते हैं। अतः जब तक यह दुनिया कायम है तब तक मनुष्य में भेद रहेंगे और मनुष्य के प्रति पूर्ण समानता कभी प्राप्त नहीं होगी। स्वामी जी का मानना था कि समानता के लिए संघर्ष अवश्य करना चाहिए क्योंकि मानव विकास के एक प्रेरक शक्ति हैं इसी तरह भ्रातृव्य के अभाव में स्वतंत्रता और असमानता अधूरे मूल्य हैं सच्चा जनतंत्र भ्रातृव्य से ही प्राप्त किया जा सकता है और भ्रातृव्य केवल आध्यात्मिक व समानता के स्तर पर ही प्राप्त किया जा सकता है इसलिए स्वामी जी जाति-पाति, छुआछूत तथा साम्प्रदायिकता के हमेशा से खिलाफ थे। उन्होंने भारतीय समाज के पतन के कारण की तलाश करते हुए कहा कि भारतीय समाज का मुख्य पतन के कारण-छुआछूत,

श्रद्धा का अभाव, पा चात्य संस्कृति का अभाव, बेईमानी, भौतिकवाद, भयग्रंथी स्वयं को हीन मानना, नैतिकता व मौलिकता तथा साहस की कमी, आलस्य, संक्रीर्ण दृष्टिकोण, धर्म की उपेक्षा, दुर्बलता और पिछड़ापन, यह सब भारतीय समाज के पतन के महत्वपूर्ण पहलू माने जाते हैं। स्वामी जी ने अस्पृयता और रुढ़िवादिता पर करारा प्रहार किया तथा उन्होंने रूढ़िवाद को रसोई धर्म तथा अस्पृश्यतावाद कहकर उसकी आलोचना की। उन्होंने भारतीयों को खुली आँखों से दुनिया देखने की बात कही और प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। इनके मन में महिलाओं व गरीबों और दलितों के प्रति बहुत ही सहानुभूति थी। सबसे बड़े समाजवादी थे जो अमीर व गरीब का भेद मिटाकर पद-दलितों को सीने से लगाना चाहते थे। उनकी ललकार थी कि गरीब और अभावग्रस्त पीड़ित और पद पर दलित सब आओ, हम सब रामकृष्ण की शरण में एक हैं। उन्होंने कहा कि पूजा पाठ व पाखण्ड को छोड़कर हम सब गरीबों की सेवा का दायित्व उठाएँ। उन्होंने बाल विवाह को रोकने के लिए भरपूर प्रयास किया और बाल विवाह का विरोध किया तथा स्त्री जाति के सम्मान व उद्धार के लिए महिलाओं को शिक्षा में समर्थन किया। उन्होंने जातिवाद व ब्राह्मणवाद पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि जिस रूप में भारत में जाति भेद जड़े जमा चुका है उसे नष्ट करना बहुत ही जरूरी हो। इसके लिए उन्होंने समाज सुधार आन्दोलन चलाया इस आन्दोलन से कई लोग स्वामी जी से बहुत ही प्रभावित हुए जैसे- महात्मा गांधी व सुभाषचन्द्र बोस अन्य ऐसे व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए। स्वामी जी का मानना था कि सभी मनुष्य समाज हैं और सभी के आध्यात्मिक अनुभूति तथा ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार है। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना से समाज सुधार का कार्य धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत में एक प्रसिद्ध सामाजिक संस्था बन चुकी थी।

### रामकृष्ण मिशन का उद्देश्य :-

इस संस्था की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- वेदान्त सम्बन्धी शिक्षा का प्रसार करना।
- निःस्वार्थ होकर हरिजन तथा निर्धनों की सेवा करना।
- हिन्दू धर्म में हिन्दुओं की फिर से आस्था जागृत करना।
- अपनी संस्कृति की प्राचीनता व इतिहास की महानता का ज्ञान कराना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबों की सहायता।

राष्ट्र भक्ति आत्मविश्वास की चेतना, युवा शक्ति पर विश्वास, युवाओं में आत्मविश्वास की भावना को जागृत करना।

### स्वामी विवेकानन्द के चिंतन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता :-

वेदान्त के आधार पर सार्वदेशिक दर्शन का विकास - स्वामी विवेकानन्द के चिंतन के आधार में वेदान्त की शिक्षाएं थीं। वेदान्त के आधार पर स्वामी जी ने एक ऐसे दर्शन का विकास किया जो समस्त संघर्षों को दूर करके मानव जाति की बहुमुखी सम्पूर्णता के स्तर पर पहुंचाना चाहते थे।

### स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त के मुख्य तीन आधार माने गए हैं :-

1. मानव की वास्तविक प्रकृति ईश्वरीय
2. जीवन का लक्ष्य ईश्वरीय प्रकृति के अनुभूति है।
3. समस्त धर्मों का मूल लक्ष्य समान है।

स्वामी जी वर्तमान समय में भी न्याय, समानता, स्वतंत्रता, धर्म निरपेक्षता भारत के संविधान का मूल तत्त्व है। राष्ट्र में फैली असमानता, हिंसा, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में उनकी शिक्षाओं का आज भी महत्व बना हुआ है। देश में आज भौतिकवाद के कारण मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है। भारतीय समाज में तनाव, हिंसा, महिलाओं पर अत्याचार, भ्रष्टाचार बढ़

रहा है। हम अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति से धीरे-धीरे दूर होते चले जा रहे हैं और पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। इसलिए स्वामी जी का मूल चिंतन भौतिकवाद व आध्यात्मिकवाद के समन्वय की जरूरत को महसूस किया जा रहा है।

**धर्म को मनुष्य की आंतरिक अनुभूति बताना** - स्वामी जी सभी धर्मों की एकता और समानता पर विश्वास करते थे। इसलिए एक धर्म से दूसरे धर्म में तथाकथित धर्म परिवर्तन का उनके विचारों में कोई स्थान नहीं था और स्वामी जी की अंतःप्रेरणा मानवतावादी थी। उनकी यह शिक्षा भी आज जरूरी हो गई है। अनेक साम्प्रदायिकता के बीच साम्प्रदायिक तनावों के कारण और आज धर्म की सरल व्याख्या जरूरी है। इसलिए उनकी शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं।

**स्वामी जी के अनुसार-** “तुम्हारी भक्ति और मुक्ति की परवाह किसे है, कौन इसकी परवाह करता है कि तुम्हारे धर्म ग्रंथ क्या कहते हैं? मैं बड़ी खुशी से हजार बार नरक में जाने को तैयार हूँ अगर ऐसा करने से हम अपने देशवासियों को ऊँचा और शिक्षित बनाकर समानता का अधिकार प्राप्त हो सके। एक ईश्वर, न्याय, अहिंसा, दया, मानव बंधुता, समानता, मानवता, सत्य, आदि तत्वों को मानव कल्याण के लिए आवश्यक माना जाता है।

**मानव कल्याण** - स्वामी जी दीन दुःखी, असहाय और पीड़ित मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है। इसके सम्बन्ध में दरिद्र नारायण की संकल्पना दी अर्थात् दरिद्र या दीन को नारायण मानकर सेवा करने से ईश्वर का साक्षात्कार किया जा सकता है। इसलिए उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। देश में आज भी अशिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, भुखमरी, कुपोषण, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याएं बनी हुई हैं।

वर्तमान समय में देखा जाये तो सभी भारतीय समाज के व्यक्तियों की सामान्य रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं को जुटाना आज प्राथमिकता होनी चाहिए जिसके लिए सरकारी संस्थाएं कार्य कर रही हैं।

**राष्ट्रभक्ति** - विवेकानन्द देशभक्ति का प्रबलतम भाव थे। यह उनकी रचनाओं या भाषणों से स्पष्ट होता है, जिससे भारतीय संस्कृति में नया विश्वास तथा भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्य किया। वर्तमान में भी राष्ट्रीय एकता तथा देशों के सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्रभक्ति की भावना अनिवार्य है। समानता और शिक्षा से तरक्की की जा सकती है इसलिए स्वामी जी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

**युवकों के लिए विवेकानन्द का संदेश** - विवेकानन्द भारतीय युवकों के लिए मसीहा थे। उन्होंने युवकों को प्रबोधित करते हुए कहा कि वे उठे और जागरूक हों उन्हें चुनौती दी जिससे हर युवक देश को समृद्ध व विकास की ओर ले जाए। आज के संदर्भ में युवा शक्ति को राष्ट्र के विकास में अहम योगदान पाया जाता है। उनकी शिक्षा व कुशलता द्वारा ही राष्ट्र की उन्नति संभव है। अतः स्वामी जी के विचारों को आज भी प्रासंगिक माना जा रहा है।

**अस्पृश्यता पर जोर** - स्वामी जी ने अस्पृश्यता का घोर विरोध किया। अस्पृश्यता हिन्दू समाज के पतनोन्मुखी दौर की कुव्यवस्था थी जिसमें समाज के एक बड़े हिस्से ने दूसरे हिस्से को नीच मानकर सवर्ण हिन्दुओं के शरीर या उनकी वस्तुओं को छूने का अधिकार नहीं दिया। उन्हें कई सार्वजनिक स्थानों से वंचित कर दिया गया था उन्होंने अस्पृश्यता और रुढ़िवादिता पर कटु प्रहार किया। स्वामी जी ने कहा कि क्या हमारा ईश्वर इतना तुच्छ हीन हो गया है कि किसी को छूने से अपवित्र हो जाएगा।

मानवतावाद एवं दरिद्र नारायण की अवधारणा-स्वामी जी एक मानवतावादी चिंतक थे। उनके अनुसार मनुष्य का जीवन ही धर्म है और धर्म न तो पुस्तक में है और न ही धार्मिक सिद्धान्तों में। प्रत्येक व्यक्ति अपने ईश्वर का अनुभव स्वयं कर सकता है। विवेकानन्द ने गरीबी को ईश्वर से जोड़कर दरिद्र नारायण की अवधारणा दी। ताकि इससे लोगों को वंचित वर्गों की सेवा के प्रति जागरूक किया जा सके। इसी प्रकार उन्होंने गरीबी और अज्ञान को समाप्त करने पर विशेष बल दिया।

### सारांश :-

स्वामी विवेकानन्द ने देशवासियों को आत्मसम्मान व शांति, निर्भीकता व मानव गौरव की प्रेरणा दी। वेदांत का प्रचार प्रेम, विश्व बंधुत्व पर जोर दिया। समाज सेवा को प्रथम कार्य माना। उनकी इन शिक्षाओं कार्यों के कारण भारत निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। वर्तमान में जो कुछ समस्याएं बाधाएं हैं उनको दूर करने में चिंतन से प्रेरणा प्राप्त होती है। आज युवा शक्ति ज्ञान शक्ति को इस युग में भी स्वामी विवेकानंद हमारे बीच अपने ओजस्वी विचारों के कारण बने हुए हैं।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. रामरत्न एवं रुचि त्यागी- भारतीय राजनीतिक चिंतन, मयूर पेपर बाक्स, 2003, पृ0 सं0-186
2. कम्पलीट बार्क आफ स्वामी विवेकानन्द, वाल्यूम-6, पृ0-382
3. योगेश कुमार शर्मा- भारतीय राजनीतिक चिंतक, कुनिष्का पब्लिशर्स, नईदिल्ली, 2001, पृ0-23
4. डॉ. बी. के. अग्निहोत्री- भारतीय इतिहास, एलाइट पब्लिशर्स लि0 नई दिल्ली।
5. डॉ. ए. के. गुप्ता- आधुनिक भारत, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, 602, पृ0-287
6. विपिनचन्द्र- आधुनिक भारत के नेतृत्व में, संपादन मंडल, 197, पृ0- 153
7. अमेश्वर अवस्थी एवं राजकुमार अवस्थी- आधुनिक भारतीय सामाजिक, राजनीतिक चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2004, पृ0-123
8. सुमित सरकार- आधुनिक भारत ( 1885-1947 ), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृ0-21

मो0नं0-9005321531

kr97sandeep1997@gmail.com



# दलित आत्मकथाएँ : जीवन का तीखापन एवं संघर्ष का आख्यान

डॉ. श्रीलता पी.वी.

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मार थोमा कॉलेज, तिरुवल्ला।

“स्वीकार्य नहीं मुझे  
जाना, मृत्यु के बाद  
तुम्हारे स्वर्ग में।

वहाँ भी तुम  
पहचानोगे मुझे  
मेरी जाति से ही।”

—ओम प्रकाश वाल्मीकि

दलितों की वेदना ही दलित साहित्य की जन्मदात्री है। भारत की जातिगत उत्पीड़न दुनिया भर की सबसे शर्मनाक सामाजिक व्यवस्था है। उसमें धर्म के नाम पर अधर्म का तथा सभ्यता के नाम पर असभ्यता की चरम सीमा ही होता है। दलित साहित्य कल्पना के बजाय अपने अनुभवों को महत्व देता है। सर्वर्ण समाज द्वारा सदियों से शोषित दलित समाज हर तरह के शोषण को, छल, कपट को सहते आ रहा है। दलित साहित्यकार कभी भाषा का चमत्कार पाठकों के सामने दिखाने के लिए नहीं लिखते, न ही किसी को खुश करने के लिए बल्कि वे लिखते हैं कि अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए। विख्यात दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथन इस प्रकार है, “दलित साहित्य में दलित जीवन का यथार्थवादी चित्रण यथार्थ की मात्र नकल नहीं है बल्कि साधारण परिस्थितियों में साधारण चरित्रों का वास्तविक पुनः सृजन है। इस कार्य में दर्शन और कलात्मक पांडित्यपूर्ण प्रदर्शन की आवश्यकता कोई नहीं है। पाठक की चेतना और अनुभूति को प्रभावित करनेवाली गहन संवेदना से ही यह संभव है।”<sup>1</sup>

दलित आत्मकथाओं में लेखकों ने पूरी ईमानदारी के साथ खुद के जीवन को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आत्मकथ्य के जरिए उन्होंने अपनी अपनी जाति और समाज की कडवी सच्चाई को समाज के सामने उजागर किया है।

मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा ‘अपने-अपने पिंजरे’ के माध्यम से लेखक ने जातिवाद के कारण समाज में दलितों की जो स्थिति है, उसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण उजागर किया है। नैमिशराय जी ने अपने अनुभवों के माध्यम से दलितों के आर्थिक व सामाजिक शोषण के विभिन्न रूपों को शब्दबद्ध किया है। लेखक का जन्म मेरु शहर में हुआ था। जाति नामक दंश की पीड़ा से लेखक और उनके जाति के लोगों को कदम-कदम पर अपमानित होना पड़ा था। दलित साहित्य सामाजिक अत्याचार, अन्याय और शोषण केन्द्रित भेद-भाव वाले सर्वर्णवादी विचारों को ध्वस्त करना चाहता है। नैमिशराय ने अपने प्रताड़ित एवं अपमानित करनेवाली घटनाओं को बड़ा ही मार्मिक दंग से चित्रित किया है, “हम लम्बे समय से अपमान सहने आये थे, पर गुनहगार न थे हम। हम हारे हुए लोग थे, जिन्हें आर्यों ने जीतकर हाशिए पर डाल दिया था। हमारे पास अंग्रेजों

के द्वारा दिए गए तमगे, मेडल पुरस्कार न थे। हमारे पास था सिर्फ कड़वा अतीत और जंखमी अनुभव।'<sup>2</sup>

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी दलित साहित्य के एक नए प्रवाह के लेखक है। 'जूठन' वाल्मीकि जी की आत्मकथा मात्र नहीं, बल्कि एक उत्पीड़न का आख्यान, पीड़ा का महाकाव्य, दर्द का दस्तावेज और आत्मसंघर्ष का इतिहास भी है। 'जूठन' दलित जीवन की एक खुली खिड़की है, जहाँ से भारतीय समाज व्यवस्था की कुरूपता एवं बीभत्सता स्पष्ट रूप से हम देख सकते हैं। जातिगत भेदभाव का असर उनके बचपन से ही शुरू हो गया। जब ओमप्रकाश वाल्मीकि पहली बार स्कूल गये तब तीन दिन अध्यापक लगातार सफाई में लगा दिया। आत्मकथा में उन्होंने इस प्रकार कहा है, "क्या नाम है बे तेरा? हेटमास्टर कालीराम ने पूछा। 'ओमप्रकाश' मैं ने डरते-डरते बताया, चूहड़े का है? 'जी' ठीक है..... वह जो सामने श्रीराम का पेड़ खड़ा है, उस पर चढ़ जा और टहनियाँ तोड़ के झाड़ू बना ले। पूरे स्कूल ..... ऐसा चमका दे जैसा सीसा।"<sup>3</sup> वास्तव में आत्मकथात्मक दलित साहित्य का आधार यथार्थबोध है। 'जूठन' लेखक के दुःख दर्द, पीड़ा और कराह का करुण आख्यान है।

स्त्रियों का जीवन ही पुरुषमेधा समाज में अभिशाप है और दलित स्त्रियों का जीवन दोहरा अभिशाप है। कौसल्या बैसंत्री त 'दोहरा अभिशाप' में एक ओर दलित होने की पीड़ा और दूसरी ओर स्त्री होने की पीड़ा। समाज में जातिवाद का जहर इतना भयानक रूप में फैला था कि दलित स्त्रियों का जीवन जीना मुश्किल हो गया। 'दोहरा अभिशाप' दलित स्त्री द्वारा लिखी गयी पहली दलित आत्मकथा है। यह आत्मकथा तीन पीढ़ियों की कथा है। जिसमें लेखिका की माँ भागेरथी, नानी आजी और स्वयं लेखिका सम्मिलित है। आत्मकथा की भूमिका में उन्होंने इस प्रकार लिखा है, "मैं लेखिका नहीं हूँ, ना साहित्यिक, लेकिन अस्पृश्य समाज में पैदा होने से जातियता के नाम पर जो मानसिक यातनाएँ सहन करनी पड़ी इसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पड़ा। मैं ने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं। पुरुष प्रधान समाज औरतों का खुलापन बरदाश्त नहीं करता पति तो इस ताक में रहता है कि पत्नी पर अपने पक्ष को उजागर करने के लिए चरित्रहीनता का ठप्पा लगा दें।"<sup>4</sup>

दलित आत्मकथा यह सूचित करती है कि तत्कालीन सवर्ण जाति के लोगों से दलितों को कितना घृणित और अपमानित होना पड़ता है। इसका जीवंत दस्तावेज है- सुशीला टांकभोरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द।' इसमें स्त्री जीवन की यथार्थता का बोध होता है। 'शिकंजे का दर्द।' स्त्री शोषण के खिलाफ संघर्ष की महागाथा है। एक दलित स्त्री मुक्ति के लिए जितनी छटपटाती है, उतनी दर्दनाक चीख कलम के माध्यम से बाहर निकलती है। आत्मकथा में लेखिका ने ऐसा लिखा है कि कक्षा में ब्राह्मण, बनिए के बच्चे को सबसे आगे बैठाया जाता था। पिछड़ी जाति के बच्चों को पीछे बैठाया जाता। अछूत बच्चे पीछे सबसे अलग बैठते थे। कक्षा में श्रेणी वर्गीकरण जैसा था, इससे हमें अपने वर्ण और जाति का आभास हमेशा रहता था। एक दिन सुशीला जी पहली पंक्ति में बैठ जाती है तब गुरुजी उन्हें डाँटकर कहते हैं, "सुशीला तुम आगे क्यों बैठी है। तुम्हें पीछे बैठना चाहिए।"<sup>5</sup> शिक्षा या नौकरी, किसी भी स्थान पर दलितों को हमेशा पीछे रखा जाता है।

सूरजपाल चौहान ने अपनी आत्मकथा 'तिरस्कृत' लिखकर हिन्दी दलित साहित्य को और भी समृद्ध किया है। दिल्ली में रहते समय अपने अध्ययन काल से लेकर नौकरी करते समय तक सूरजपाल जी को कई बार सवर्णों की हीन दृष्टि का शिकार होना पड़ा। उन्होंने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार लिखा है, "मैं ने अपने नाम के साथ अपना गोत्र चौहान का प्रयोग करना शुरू कर दिया। अब कॉलेज के साथी मुझे राजपूत या ठाकुर समझते थे। कॉलेज में मेरा एक सहपाठी अनुपम जैन मेरा प्रिय बन गया। लेकिन कब तक? जब तक कि वह मुझे राजपूत चौहान समझता रहा। पर मेरा एस सी होना जानकर उसने मुझसे मित्रता तोड़ दी।"<sup>6</sup> लेखक ने तत्कालीन समाज में अछूतों पर सवर्णों की घृणा, ज़रा सा छू जाने पर अपने ऊपर पानी डालना आदि का चित्रण किया है। उन्होंने कई प्रकार के पिछड़ेपन और हाशिए त ज़िन्दगी को निष्पक्ष एवं निर्भीक भाव से अभिव्यक्त

किया है। एक बार दिल्ली में आयोजित एक कवि सम्मेलन में आये कवि ने मंच पर ही कवि से उनकी जाति पूछी तो कवि ने खींचते हुए उनसे कहा कि मैं भंगी हूँ क्या परेशानी है तुझे ? तब उन्होंने मुँह बिचकाता हुआ कहा, “लो अब भंगी भी कविताएँ लिखने लगे।”<sup>7</sup> सूरजपाल ने इसी दौरान सवर्ण साहित्यकारों की संकीर्ण मानसिकता की नज़दीक से अनुभव किया। इस आत्मकथा व्यक्तिगत होकर भी सम्पूर्ण दलित समाज के संघर्ष की महागाथा है। प्रस्तुत सन्दर्भ में मैनेजर पाण्डे का कथन समीचीन होगा, “दलित आत्मकथा एक व्यक्ति की नहीं बल्कि एक समुदाय की आत्मकथा है।”<sup>8</sup>

संक्षेप में दलित आत्मकथाएँ हाशिएकृत ज़िन्दगी की पोटली हैं। दलितों का जीवन दूसरों से भिन्न होने के कारण ही इन आत्मकथाओं को इतनी लोकप्रियता मिली। दलित आत्मकथाएँ सिर्फ अभिव्यक्ति के लिए नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण अन्दोलन की तरह हैं, व्यक्तित्व होते हुए भी सामाजिक होती हैं। दलित आत्मकथाकारों ने जातीय अपमान और उत्पीड़न के जीवंत चित्रण के माध्यम से एक दलित की आत्मकथा को प्रस्तुत किया है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 59
2. अपने, अपने पिंजरे ( भाग-1), मोहनदास नैमिशराय, पृ. 18
3. जूठन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ. 14-15
4. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बेसंत्री, भूमिका से
5. शिंकजे का दर्द, सुशीला टाकभौरे, पृ. 22
6. तिरस्कृत, सूरजपाल चौहान, पृ.12
7. तिरस्कृत, सूरजपाल चौहान, पृ. 149
8. अपेक्षा, सम्पादक : तेजसिंह दलित आत्तवृन्त विशेषांक, जुलाई-सितंबर 2003, पृ. 31



## भारतीय किसानों की समस्याएं एवं समाधान

डॉ. वेद प्रकाश (एसोसिएट प्रोफेसर) भूगोल विभाग

डॉ. संजीव कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर) कृषि अर्थशास्त्र विभाग

किसान पीजी कॉलेज सिंभावली, जनपद- हापुड़, राज्य- उत्तर प्रदेश

### सारांश :-

भारत संरचनात्मक दृष्टि से गांव का देश है और सभी ग्रामीण समुदायों में कृषि कार्य किया जाता है। इसलिए भारत को कृषि प्रधान देश की संज्ञा भी मिली हुई है। किसानों को धरतीपुत्र भी कहा जाता है। अमीर हो या गरीब राजा हो या उद्योगपति सभी का जीवन किसानों की मेहनत पर आश्रित है। किसान दिन-रात, गर्मी, बारिश, ठंड की परवाह किए बिना अपनी खेती में अपने श्रम से फसलें उगाता है। और वही अनाज पूरे देश के लोगों की भूख को शांत करता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से वर्ष 2019-20 में कृषि का जी. वी. ए. में योगदान 17.8 प्रतिशत था। देश की लगभग आधी आबादी को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कृषि क्षेत्र से रोजगार प्रदान किया जा रहा है। वर्तमान में 90 मिलियन से अधिक परिवार खेती से जुड़े हुए हैं। जबकि अधिकांश राज्यों में किसानों की आय रू. 5000 प्रति माह से भी कम है। बिहार एवं उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्यों में किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। अधिकांश कृषक कर्ज के जाल में फंसे हुए हैं। अतः देश के विकास के लिए कृषि का विकास अनिवार्य है। कृषि में सुधार करके ही किसानों की आय को बढ़ाया जा सकता है किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए खेती के तरीकों एवं प्रबंधन में बदलाव करने की आवश्यकता है। उन्नतशील बीजों के प्रयोग सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि कार्बनिक खेती का प्रयोग एवं नई कृषि तकनीकों का प्रयोग करके ही किसानों की आमदनी बढ़ाने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

### परिचय :-

कृषि का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। आज भी हमारे देश में कृषि रोजी-रोटी एवं आजीविका का मुख्य स्थान है। कृषि क्षेत्र देश की कुल जनसंख्या के 42 प्रतिशत से अधिक आबादी को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है। जो देश में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है। लेकिन आज किसान खेती को छोड़कर अन्य वैकल्पिक रोजगार तलाश रहे हैं। साथ ही नए युवा भी खेती से मुंह मोड़ रहा है। भारतीय जैसी कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए यह अच्छा संकेत नहीं है। विश्व को खाद संकट से बचाने के लिए कृषि क्षेत्र पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस दिशा में सकारात्मक पहल की है। और कृषि विकास तथा गांव की खुशहाली के लिए किसानों की आय को वर्ष 2023 तक दोगुना करने का लक्ष्य निर्धारित कर दिया है। यद्यपि यह एक महत्वाकांक्षी और कठिन लक्ष्य है। फिर भी समन्वित प्रयास से इसको प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए खेती के तरीकों तथा प्रबंधन में बड़े बदलाव की आवश्यकता है। परंपरागत तरीकों और तकनीकी से लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता।



भारत में कृषि जोतों की कुल संख्या वर्ष 2001 के अनुसार 75.41 मिलियन थी। जो अब बढ़कर 92.83 मिलियन हो गई है। नेशनल सर्वे रिपोर्ट के अनुसार देश के 9 करोड़ किसान परिवारों में से अधिकतर किसानों लगभग 6 करोड़ के पास 1 हेक्टेयर से भी कम जमीन उपलब्ध है। इस प्रकार इन किसानों की वार्षिक आय 70 से रू. 80 हजार ही हो पाती है वर्ष 2002-03 में भारत के किसानों की प्रति परिवार औसत आय रू. 25308 थी जो वर्ष 2018-19 में बढ़कर 122616 रूपए हो गई है। देश में सबसे कम 3558 रूपए प्रति महा प्रति किसान परिवार आय बिहार राज्य की है। इसके बाद पश्चिम बंगाल की रू. 3980 उत्तराखंड की 472 तथा उत्तर प्रदेश की रू. 4930 प्रति माह है। इस तरह इन राज्यों की औसत आमदनी रू. 5000 से भी कम है। इन राज्यों में किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। किसानों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करके अगस्त 2018 में राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक नाबार्ड ने नफीस शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है। अखिल भारतीय ग्रामीण वित्तीय समावेशन सर्वेक्षण 2016-17 में कहा गया है। कि एक किसान परिवार की कुल खेती और किसान के लिए ही है वक्त जितना संघर्ष से भरा हुआ है। उससे ज्यादा संघर्ष से भरा हुआ है भविष्य व्यापक समाज और मध्यम वर्ग के लिये होने वाला है। अतः यह जरूरी जरूरी ही नहीं अनिवार्य है कि कृषि और कृषक के लिए जीवन में आ रहे बदलाव से सक्रिय जुड़ाव रखा जाये।

**तालिका -1**  
**राज्यवार किसानों की कुल संख्या (हजारों में)**

क्रम संख्या	राज्य का नाम	खेती पर निर्भर परिवारों की संख्या	कुल किसान परिवारों की संख्या	नियमित किसानों का प्रतिशत
1	झारखंड	6.6	2808	0.24
2	केरल	8.1	1466.9	0.55
3	पश्चिमी बंगाल	75.7	6626.2	1.14
4	तमिलनाडु	60.3	2597.7	2.32
5	उड़ीसा	283.7	4815.3	5.89
6	त्रिपुरा	25.3	289.3	8.75
7	हिमाचल प्रदेश	140.5	1034.2	13.59
8	सिक्किम	10.4	65.2	15.95
9	उत्तराखंड	172.9	983.4	17.58
10	असम	637.6	3099.7	20.57
11	आंध्र प्रदेश	745.5	3159.4	23.60
12	हरियाणा	710	1906.7	37.24
13	छत्तीसगढ़	1302.6	2985	43.64
14	राजस्थान	3267.4	7041.5	46.40
15	बिहार	3351.6	7011.3	47.80
16	मध्य प्रदेश	3489.9	7276.3	47.96
17	उत्तर प्रदेश	8746.5	17789.5	49.5

18	महाराष्ट्र	3646.6	7289.3	50.00
19	पंजाब	884.3	1473.8	60.00
20	गुजरात	2499.9	4037.1	61.92
21	मणिपुर	166.4	241.2	68.9
22	मेघालय	272.2	364.7	74.64
23	कर्नाटक	3664	4251.6	86.18
24	मिजोरम	71.5	76.4	93.59
25	नागालैंड	181.6	191.8	94.68
26	अरुणाचल प्रदेश	152.40	152.40	100.00
29	भारत	36124	92360.7	39.1

तालिका 1 से स्पष्ट है। कि अखिल भारतीय स्तर पर केवल 39% किसान परिवार ही नियमित रूप से खेती किसानों का व्यवसाय अपनाए हुए हैं। सर्वाधिक नियमित किसानों की संख्या अरुणाचल प्रदेश में है। और सबसे कम झारखंड में भारत के बड़े राज्यों में नियमित किसानों का प्रतिशत उत्तर प्रदेश में 49.50, पंजाब में 60.00, महाराष्ट्र में 50, बिहार में 47.80 तथा राजस्थान में 46.40 है।

पिछले कुछ समय से चल लागत जैसे बीज, खाद, उर्वरक एवं कीटनाशक रसायनों के मूल्य में हो रही लगातार वृद्धि के कारण उत्पादन लागत बढ़ती जा रही है। जिससे किसानों की आय कम हो रही है। लेकिन कभी-कभी अल्पकाल में मांग एवं पूर्ति के आर्थिक नियम पर आधारित अनाज, फल एवं सब्जियों के दामों में वृद्धि हो जाने से किसानों को लाभ प्राप्त हो जाता है। परंतु महंगाई को लेकर इसका सभी राजनीतिक दलों, समाचार पत्रों एवं मीडिया द्वारा विरोध होने लगा है। लेकिन जब किसान उसी उपज को बाजार में लागत मूल्य से कम दाम पर बेचने को मजबूर होता है तो तब कोई विरोध नहीं होता है। क्योंकि फल सब्जियों एवं अनाजों को अधिक समय तक संग्रहित नहीं किया जा सकता है। और न ही किसानों के पास अपनी उपज को अधिक समय तक केंद्रित करने की तकनीकी और संसाधन उपलब्ध है। अतः खेती की बढ़ती उत्पादन लागत तथा घटते मुनाफे के कारण किसानों एवं युवाओं का खेती से मोहभंग हो रहा है। खेती को लाभकारी बनाने के लिए युवाओं को खेती से जोड़ना अति आवश्यक है। तभी हम कृषि के परंपरागत तरीकों को बदलकर नई कृषि तकनीकियों का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। भारत में कृषि के विकास और किसानों की आय दोगुना करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए।

#### किसानों की आय में वृद्धि करने के उपाय :-

भारत में किसानों की आय वर्ष 2023 तक दोगुना करने के संदर्भ में नीति आयोग की रिपोर्ट में कृषि उत्पादन को बढ़ाने तथा खाद्य सुरक्षा को सुधारने पर बल दिया गया है। इसमें निम्नलिखित मुद्दों को शामिल किया गया है।

1. उच्च गुणवत्ता के बीजों उर्वरक सिंचाई एवं कीटनाशकों के बेहतर उपयोग से उत्पादकता को बढ़ाना।
2. विशेष फसलों के लिए लाभकारी कीमतों तथा कृषि संबंधी निवेश पर सब्सिडी प्रदान करना।
3. कृषि में और कृषि के लिए सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देना।
4. कृषि से संबंधित संस्थाओं को सुविधा प्रदान कराना।

इस कार्य नीति के आधार पर भारत का संकट से बाहर निकलने में सफल रहा। तथा हमारा खाद उत्पादन 3.7 गुना बढ़ा जबकि जनसंख्या 2.5 गुना बढ़ी किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने कृषि मंत्रालय का नाम

बदलकर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय कर दिया।

किसानों की आय को 2015-16 के आधार वर्ष की तुलना में 2022-23 तक दोगुना करने के लिए किसानों की आय में 10.41% की वार्षिक वृद्धि दर होनी चाहिए।

## 1. कृषि शिक्षा का सुदृढ़ीकरण :-

कृषि के क्षेत्र में नई तकनीकी की खोज एवं प्रयोग के लिए कृषि शिक्षा का सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। कृषि शिक्षा जितनी रोजगार उन्मुख और आकर्षक होगी। युवा कृषि शिक्षा की ओर उतना ही आकर्षित होगा। क्योंकि हमारा देश कृषि और ग्रामीण प्रधान है। इसलिए देश का विकास खेती और गांव पर आधारित है। अतः गांव में रहने वाले प्रत्येक युवा को कृषि का बुनियादी ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए वर्तमान कृषि शिक्षा व्यवस्था में निम्नलिखित सुधार होना चाहिए।

(क) सभी शिक्षा बोर्ड एवं एनसीईआरटी द्वारा कृषि विज्ञान विषय का बुनियादी पाठ्यक्रम में निश्चित करके इसको एक विषय के रूप में कक्षा 12 तक सभी कक्षाओं में सम्मिलित कराना चाहिए। इसके अतिरिक्त विज्ञान एवं मानविकी वर्ग में स्नातक स्तर पर भी कृषि विज्ञान विषय को फाउंडेशन कोर्स के रूप में लागू किया जाना चाहिए। ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी खेती के सामान्य आधुनिक तरीकों से अवगत हो सके।

(ख) ऐसी विद्यार्थी जो कृषि विषय को स्नातक या परास्नातक स्तर पर महाविद्यालय में पढ़ रहे हैं। उनको कृषि की आधुनिक तकनीकों से जोड़ने के लिए कृषि के स्नातक एवं परास्नातक कक्षाओं के छात्रों को एक सेमीस्टर का कोर्स वर्क तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था देश एवं प्रदेश के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों पर की जानी चाहिए। जिससे इन विद्यार्थियों को कृषि के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ प्रयोगात्मक ज्ञान तथा किसानों के बीच रहकर प्रशिक्षण भी प्राप्त होता रहे। किसानों के संपर्क में रहने के कारण छात्रों को उनकी समस्याओं का भी पता रहेगा। इस प्रकार ऐसे छात्र जो अपने विद्यालय के नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्रों से जुड़ेंगे उस क्षेत्र के किसानों की समस्याओं के निराकरण तथा कृषि विकास में अहम योगदान प्रदान करेंगे। इस शैक्षिक परिवर्तन से सरकार पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं होगा। क्योंकि सभी कृषि विज्ञान केंद्रों पर कृषि फार्म तथा अन्य बुनियादी ढांचा उपलब्ध है।

(ग) प्रदेश सरकार के द्वारा सभी को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से नए राजकीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का निर्माण किया जा रहा है। लेकिन दुर्भाग्यवश किसी भी विद्यालय एवं महाविद्यालय में कृषि विषय पढ़ाने के इच्छुक छात्र/छात्राओं के लिए कृषि विज्ञान विषय को सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः वर्तमान समय में कृषि-विषय की महत्ता को देखते हुए मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित एवं नये खुलने वाले राजकीय महाविद्यालय में युवाओं को कृषि शिक्षा प्रदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इस प्रकार हम युवाओं की कृषि में अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करके 2023 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य की ओर कदम बढ़ा सकते हैं।

## 2. कृषि बाजारों का प्रबंधन :-

किसानों को उनकी उपज का सही दाम न मिलना एक गंभीर चुनौती है। किसानों को सही बाजार उपलब्ध न होने के कारण उनको अपनी उपज कम दामों पर बिचौलियों और दलालों के माध्यम से बेचनी पड़ती है। कभी-कभी तो किसानों को अपनी उपज उत्पादन लागत से कम मूल्य पर हानि उठाकर भी बेचनी पड़ती है। जबकि बिचौलियों जिनका कोई उत्पादन खर्च एवं जोखिम नहीं होता वह इस उपज पर अधिकतम लाभ लेकर महंगे दामों में उपभोक्ताओं को बेचते हैं जिससे बाजार में महंगाई को बढ़ावा मिलता है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु सरकार के द्वारा वस्तु बाजारों की स्थापना एवं ई-मार्केटिंग को बढ़ावा दिया जाए जिससे किसान अपनी उपज को बिना दलालों के सीधे उपभोक्ताओं को लाभकारी मूल्य पर बेच सके।

### 3. ग्रीनहाउस तकनीकी का प्रयोग :-

कम क्षेत्रफल में अधिक पैदावार लेने और किसानों की आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से यह खेती करने की एक महत्वपूर्ण आधुनिक तकनीकी है। यह उन किसानों के लिए बहुत लाभप्रद है। जिनके पास खेती करने के लिए भूमि कम है। क्योंकि हमारे देश में प्रति किसान जोत का आकार 1 हेक्टेयर से भी कम है। इसलिए यह तकनीकी लघु एवं सीमांत कृषकों की आय दोगुना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हरितगृह तकनीकी से खेती में जोखिम भी कम हो जाता है। और इससे किसानों का कारपोरेशन कृषि-विधियों की अपेक्षा 2 से 3 गुना अधिक पैदावार मिल जाती है। इस तकनीकी के द्वारा हम वर्षभर सभी प्रकार की सब्जियों एवं फलों का उत्पादन कर सकते हैं। साथ ही उपज की मात्रा गुणवत्ता एवं उत्पादकता में भी बढ़ोतरी हो जाती है। यह विधि सब्जियों की पौध तैयार करने के लिए भी उत्तम है। तथा इससे फसल में कीट एवं बीमारियों का प्रकोप भी कम होता है। बाजार में कार्बनिक उपज की अधिक मांग को देखते हुए इस विधि द्वारा आसानी से कार्बनिक खेती करके किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं। ग्रीनहाउस तकनीकी को बढ़ावा देने के लिए सरकार भी किसानों को इसके लागत मूल्य में छूट प्रदान कर रही है। अतः किसानों को इस तकनीकी का अधिकतम प्रयोग करना चाहिए जिससे कम क्षेत्रफल से अधिक आय प्राप्त हो सके।

### 4. समन्वित कृषि पद्धति का प्रयोग :-

लगातार एक ही पद्धति से खेती करने एवं एक समान उर्वरकों के प्रयोग तथा एक ही तरह की फसल उगाने से भूमि की उर्वरता तथा फसल उत्पादकता में लगातार गिरावट आ रही है। एक फसल प्रणाली ने तो आर्थिक दृष्टि से लाभदायक है। और न ही वातावरण को दृष्टि से उपयोगी है। अतः किसानों को सभी फसलों जैसे दाल, सब्जियां, तिलहन एवं अनाज आदि का उत्पादन करना चाहिए। इस प्रकार फसल विविधता से किसान अपने संसाधनों का भी अच्छी तरह से प्रयोग कर सकते हैं। साथ-साथ बाजार में मूल्यों के उतार-चढ़ाव तथा विपरीत मौसम के जोखिम से भी बचा जा सकता है। उचित फसल चक्र के प्रयोग से फसलों में कीट एवं बीमारियां भी कम लगती है। इस तरह हम समन्वित कृषि पद्धति को अपनाकर उपज में वृद्धि कर सकते हैं।

### 5. कृषि आधारित लघु उद्योग की स्थापना :-

किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए फसल उत्पादन के अतिरिक्त किसानों को कृषि आधारित अन्य लघु उद्योग को लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इनमें मुख्य रूप से पशुपालन, मधुमक्खी एवं मछली पालन को अपनाना चाहिए। इससे किसानों की फसल उत्पादन पर भी निर्भरता कम होगी तथा साथ ही प्राकृतिक संसाधनों का भी उचित प्रयोग हो सकेगा। गन्ना, आलू, टमाटर, मटर आदि फसलों के उत्पादन पर आधारित प्रसंस्करण इकाइयां लगातार किसान अपने कच्चे माल से गुड, जेम, जली सॉस एवं चिप्स आदि बनाकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

### निष्कर्ष :-

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि हमारे आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम रही है। भारत के लोग कृषि को एक उत्सव के रूप में मनाते रहे हैं। प्राकृतिक एवं पर्यावरण की रक्षा के दायित्व का निर्वाह जिसमें वृक्ष नदी पहाड़ पशुधन जीव जंतुओं की रक्षा की जिम्मेदारी निभाना जीवन के महत्वपूर्ण आध्यात्मिक कार्यों का हिस्सा रहा है। आज देश में कृषि का योगदान कुल अर्थव्यवस्था में 14% के लगभग होने पर भी इसमें गरीब 60 प्रतिशत लोगों को रोजगार मिल रहा है। लेकिन भारत में अभी तक खेती और किसान की अर्थ नीति में जितना महत्व मिलना चाहिए था। वह नहीं मिल पाया है। भारत की रचना ऐसी है कि जब तक खेती संकट से नहीं निकलेगी किसान खुशहाल नहीं हो सकता।

कृषि के क्षेत्र में नई तकनीकी की खोज एवं प्रयोग के लिए कृषि शिक्षा का सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। कृषि शिक्षा जितनी रोजगार उन्मुख और आकर्षक होगी। युवा कृषि शिक्षा की ओर उतना ही आकर्षित होगा। क्योंकि हमारा देश कृषि और ग्रामीण प्रधान है। इसलिए देश का विकास खेती और गांव पर आधारित है। अतः गांव में रहने वाले प्रत्येक युवा को कृषि का बुनियादी ज्ञान होना आवश्यक है। तभी हम अपना और अपने देश का विकास कर सकेंगे।

### संदर्भ सूची :-

1. छ इकोनॉमिक्स टाइम्स - 4 मार्च 2020
2. हिंदुस्तान टाइम्स - सितंबर 2021
3. भारतीय अर्थव्यवस्था - कृषि आय को दोगुना करने का लक्ष्य दृष्टि, 2020
4. आर्थिक सर्वेक्षण - 2020
5. भारतीय किसान - दशा और दिशा : संचार सौरभ, अगस्त 2018
6. किसानों की आय दोगुनी करने के लिए कृषि क्षेत्र में सुधार- कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2019
7. नीति आयोग की रिपोर्ट - 2019

ईमेल - 2011vaad@gmail.com

मोबाइल नंबर - 9411611360



## भगवत गीता में वर्णित पर्यावरण की उपादेयता

खेमबाई साहू

हिन्दी विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

आज मानव जाति पर्यावरण-असन्तुलन, आर्थिक-संकट, बाल-शोषण, नारी-उत्पीणन, जातिवाद, आतंकवाद, बढ़ती जनसंख्या, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद आदि समस्याओं का सामना कर रही है, यदि ये समस्याएँ हल न हुईं, तो मनुष्यता को सामूहिक विनाश की ओर बढ़ने से नहीं रोका जा सकता। ये सारी स्थितियाँ मानसिक रोगों को जन्म दे रही हैं। आधुनिक काल में नैतिकता का अत्यधिक पतन हो रहा है, मनुष्य के नैतिक मूल्यों की गिरावट चरम सीमा तक आ पहुँची है

कृष्ण प्रकृति के कितने बड़े सचेतक और प्रकृति प्रेमी थे, इसका पता उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रिय वस्तुओं के अवलोकन से चलता है। उनकी प्रिय कालिन्दी, गले में वैजयंती फूलों की माला, सिर पर मयूर पिच्छ, अधरों पर बांस की बांसुरी, कदम्ब की छाँव और उनकी प्रिय धेनु यह सब इस बात की ओर इंगित करते हैं कि श्री ण पर्यावरण के सच्चे हितैषी और संरक्षक थे।

प्रकृति और मनुष्य सदैव से ही एक दूसरे के पूरक रहे हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना करना बेमानी है। वैदिक काल के ध्येय वाक्य “सर्वे भवन्तु सुखिनः” की अभिधारणा लिए प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे की सहायता करते थे। संहारक की स्थिति के बावजूद प्रकृति सदैव मनुष्य को अपने अनुपम उपहारों से सँवारती रही है। ऐसा नहीं है कि प्रकृति पर अतिक्रमण आधुनिक काल में ही प्रारम्भ हुआ, भगवान श्रीकृष्ण के समय में भी यह सब व्याप्त था। उस समय भी प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन करने के सार्थक प्रयास हमारे भगवान श्री कृष्ण द्वारा किये गए जिसके लिए पूरी मानव सभ्यता उनकी ऋणी रहेगी।

गीता में प्रकृति के साथ अपने अभेद को व्यक्त करते हुए वह कहते हैं- “अश्वथ सर्ववृक्षाणां अर्थात् वृक्षों में वह अपने को पीपल बतलाते हैं। इतना ही नहीं वह ऋतुओं में स्वयं को बसन्त, नदियों में स्वयं को गंगा की उद्घोषित करते हैं। इसका तात्पर्य ही यह है कि सृष्टि के कण-कण में उनका वास है। अतः हमें सबका संवर्धन पोषण व सुरक्षा करनी चाहिए। हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित वृन्दावन की प्राकृतिक सुषमा से वह काफी प्रभावित नजर आते हैं।

हम उनके द्वारा धारण की जाने वाली वेषभूषा को ही देख ले उनसे ही उनके प्रकृति प्रेम को साक्षात् समझा देखा जा सकता है। कृष्ण प्रकृति के कितने बड़े सचेतक और प्रकृति प्रेमी थे, इसका पता उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रिय वस्तुओं के अवलोकन से चलता है। उनकी प्रिय कालिन्दी, गले में वैजयंती फूलों की माला, सिर पर मयूर पिच्छ, अधरों पर बांस की बांसुरी, कदम्ब की छाँव और उनकी प्रिय धेनु यह सब इस बात की ओर इंगित करते हैं कि श्रीकृष्ण पर्यावरण के सच्चे हितैषी और संरक्षक थे।

वे सचमुच प्रकृति प्रेम और पर्यावरण क्रांति के प्रेरक युग पुरुष थे। साढ़े सात वर्ष की उम्र में उन्होंने प्रकृति के प्रति अद्भुत प्रेम और महत्त्व दर्शाते हुए उन्होंने जो गोवर्धन लीला की, उसके पीछे भी पर्यावरण संरक्षण का ही अनन्य सन्देश छिपा है।

कृष्ण ने गीता में स्वयं अपना परिचय देते हुए यह स्पष्ट कहा कि वह देवों में इन्द्र, मुनियों में कपिल तथा पेड़ों में साक्षात् पीपल है। यह वनस्पति विज्ञान का प्रामाणिक तथ्य है कि पेड़ों में सर्वाधिक प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन देने वाला पेड़ पीपल ही है, अतः उसे गरिमा प्रदान की गई।

वर्षा के लिए इन्द्रदेव की पूजा को अनावश्यक करार देते हुए गोवर्धन नामक दिव्य पर्वत की पूजा करने के लिए बृजवासियों को प्रेरित किया। गोवर्धन पर्वत की संरचना ही कुछ ऐसी रही है कि उसके करीब 22 वर्ग किलोमीटर के आकार में अधिक ऊंचाई न होकर समतल फैलाव अनेक स्थानों पर है जिससे उस पर गायों के लिए खूब घास, औषधिक वनस्पति एवं अनेक पेड़ पौधे उगे हुए हैं। कृष्ण ने कहा कि हमारे समस्त गोधन जो उस समय सम्पत्ति का सूचक था, को यह चारा उपलब्ध कराता था। इसी से वर्षा का जल बहकर यमुना में जाता है। श्री कृष्ण ने उसके भौगोलिक व पर्यावरणीय महत्त्व को समझा और बृजवासियों को भी समझाया अतः इंद्र की पूजा के बजाय गोवर्धन पूजा का विधान आरम्भ किया। उसके बाद इन्द्रकोप का सामना कर इन्द्र का मान मर्दन जिस प्रकार से उन्होंने गोवर्धन धारण कर किया वह जग विदित ही है।

कदम्ब और करील के वृक्षों को जिस तरह उन्होंने संवर्धन एवं गरिमा प्रदान की गई। उसका वर्णन श्रीमद्भागवत एवं गार्ग्य संहिता में मिलता है। कृष्ण ने गीता में स्वयं अपना परिचय देते हुए यह स्पष्ट कहा कि वह देवों में इन्द्र, मुनियों में कपिल तथा पेड़ों में साक्षात् पीपल है। यह वनस्पति विज्ञान का प्रामाणिक तथ्य है कि पेड़ों में सर्वाधिक प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन देने वाला पेड़ पीपल ही है, अतः उसे गरिमा प्रदान की गई। मोरपंख की बात है, कहते हैं कि त्रैतायुग में सीता वियोग में वन विचरण करते राम लक्ष्मण को एक मोर ने आगे-आगे चल कर किष्किन्धा पर्वत का रास्ता दिखाया था। उसी का आभार मानकर कृष्ण ने द्वापरयुग में अपने मुकुट में मोरपंख को धारण किया। कृष्ण को 'वासुदेव' भी कहते हैं। 'वासुदेव' का अर्थ वह देव जिसका 'कण-कण में वास हो'। जब कृष्ण का कण-कण में वास है तो प्रकृति का वह कौन सा जर्जर हो सकता है जिसमें वे न हों और उस जर्जर तक के संरक्षण से उन्हें प्रेम न हो।

यस्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभते जुन।

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।।

भगवद्गीता यह शिक्षा देती है कि कलुषित चेतना को शुद्ध करना है, शुद्ध चेतना होने पर सारे कर्म ईश्वर की इच्छानुसार होंगे और इससे हम सुखी हो सकेंगे। शुद्ध कर्म भक्ति कहलाते हैं। भक्ति में कर्म सामान्य होते हुए भी कलुषित नहीं होते- इसी बात का वर्णन गीता के तृतीय अध्याय में इस प्रकार किया गया है :-

जहां तक मोरपंख की बात है, कहते हैं कि त्रैतायुग में सीता वियोग में वन विचरण करते राम लक्ष्मण को एक मोर ने आगे-आगे चल कर किष्किन्धा पर्वत का रास्ता दिखाया था। उसी का आभार मानकर कृष्ण ने द्वापरयुग में अपने मुकुट में मोरपंख को धारण किया। कृष्ण को 'वासुदेव' भी कहते हैं। 'वासुदेव' का अर्थ वह देव जिसका 'कण-कण में वास हो'। जब कृष्ण का कण-कण में वास है तो प्रकृति का वह कौन सा जर्जर हो सकता है जिसमें वे न हों और उस जर्जर तक के संरक्षण

से उन्हें प्रेम न हो।

इस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने लीलाओं के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा करना बताया है। वर्तमान में मनुष्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति लापरवाह हो रहा है, कुछ संगठनों द्वारा जरूर प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन सभी को अपनी भूमिका का निर्वहन करना होगा।

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से विश्व आज त्रस्त नजर आता है। कहीं सुनामी आ रही है, तो कहीं भूकम्प आ रहा है। यह सब पर्यावरण में आये असंतुलन के कारण ही है। प्रकृति के इस असंतुलन का जिम्मेदार मानव ही है। अपने जीवन को आरामदायक बनाने के लिए उसने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर उसे हानि पहुंचाने का प्रयास किया है। आज स्थिति इतनी भयावह हो गयी है कि पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक मुद्दा बन गया है। ऐसे में हम अपने लोकनायक श्री कृष्ण को प्रेरणा स्रोत बना कर उनके आदर्शों पर चल कर पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. भगवत गीता।
2. कल्याण।
3. अखंड ज्योति।
4. सुर सरिता।
5. अक्षर वार्ता।
6. बोहल शोध मंजूषा।
7. गीना शोध संगम।





### डॉ. रीना अग्रवाल

जन्म व स्थान	: 14 अक्टूबर, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश।
शिक्षा	: बी.एड., एम.एड., एम.ए. (हिंदी और शिक्षा शास्त्र), पीएचडी (आधुनिक भाषा एवं ज्ञान विज्ञान) उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार, उत्तराखण्ड।
शोध कार्य अभिरुचि	: 'मृदुला सिन्हा के कथासाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन' : अध्ययन-अध्यापन, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में सक्रिय सहभागिता।
प्रकाशन	: विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और पुस्तकों में अनवरत शोध पत्रों का प्रकाशन। : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में प्रतिभागिता। : गीना शोध संगम (ISSN : 2321-8037 Impact Factor-4.553) के विशेषांक का संपादन कार्य। : आकाशवाणी कार्यक्रम 'घर गृहस्थी' में सहभागिता। : डॉ. भीमराव अंबेडकर शिक्षा सहभागिता कार्यक्रम भेल, हरिद्वार
सम्मान	: साहित्य सृजन सम्मान 2020 : चौधरी घासीराम सिन्हाग स्मृति सम्मान 2021 : गीना देवी शोधश्री सम्मान 2023 : चौधरी गिरधारीलाल सिन्हाग स्मृति सम्मान 2023 : 'डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की सृजन यात्रा : अवदान एवं मूल्यांकन' 2023 : डॉ. भीमराव अंबेडकर शिक्षा सहभागिता प्रतिभा सम्मान 2023
ईमेल	: reenaagrawal1410@gmail.com
दूरभाष	: 9808 9633 61

